अमलावृत्तान्तमाला ।

अथवा

समरैदियानत ।

जिस्में यह भली प्रकार दिखलाया गया है कि अ-
दालत के अमले कैसी २ कार्रवाइयां करते हैं
और जिस्से यह साबित किया गया है कि
दियानत और नेकनीयती का नतीजा
सदा अच्छा रहता है ।

इस ग्रन्थ को काज़ी अज़ीजुद्दीन अहमद साहब डिप्टी कलेक्टर गढ़वाल
(हाल जौनपुर) व मेम्बर ऐशियाटिक सुसाइटी की आज्ञा से
उनके अंग्रेजी और उर्दू ग्रन्थ से अनुवाद करके भारतजीवन
सम्पादक बाबू रामकृष्णवर्म्मा ने प्रकाश किया ।

काशी ।

भारतजीवन प्रेस में मुद्रित हुआ ।

सम्वत् १९५१ ।

प्रथम बार १०००]

मूल्य ॥)

भूमिका ।

हमारे पाठकों ने इसके पूर्व ठगवृत्तान्तमाला और पुलिसवृत्तान्तमाला पढ़ा है अब वे लोग इस अमलावृत्तान्तमाला को भी देखें कि इसमें कैसा काम किया गया है । मुख्य ग्रन्थकार, काज़ी अजीजुद्दीन अहमद साहब डिप्टी कलेक्टर ने इसे उर्दू और अंग्रेजी में रचा है। उर्दूवाले ग्रन्थ का नाम "समरै दियानत" और अंग्रेजीवाले का नाम (Fruits of Honesty) है। हमने उक्त महाशय से आज्ञा ले कर इसे देवनागरी अक्षरों में प्रकाश किया है जिसमें हिन्दी के पढ़नेवाले भी इस ग्रन्थ से शिक्षा प्राप्त कर सकें। इस ग्रन्थ से यह स्पष्ट विदित होगा कि बुरे काम का फल बुरा और भले काम का फल भला इस दुनियां में तो मिलता ही है पर इस संसार में शीघ्रही उनका बुरा भला परिणाम देखने में आता है। अमला लोगों की कार्रवाई, पर्वनलाल की बदनीयती, अंग्रेज़ लोगों की मेहर्बानी रियायापर्वरी और इनसाफ, अर्दलीयों की तकलीफदेही और चालाकी, दियानतहुसैन की नेकचलनी दियानतदारी और उनका भला परिणाम बहुतही उत्तम रीति से झलकाया गया है। हमे पूर्ण विश्वास है कि जो महाशय लोग इसे दत्तचित हो पढ़ेंगे उन्हें यह अच्छी तरह विदित हो जायगा कि सच्चे पर यद्यपि आपत्ति और विपत्ति दुर्भाग्य वश आ जाती हैं किन्तु सत्यसहायक जगदीश्वर उसे कभो नहीं भुलाता और अवश्यही उस आपत्ति में उसकी बांह गह कर उसे उबार लेता है। कैसाही कठिन समय क्यों न आपड़े मनुष्य को धीरज और सत्य न परित्याग करना चाहिये, क्षणिक आपत्तियों से घबड़ा कर हिम्मत न तोड़नी चाहिये। जगत्पालक ईश्वर अवश्यही उसकी सहायता करेगा । हम फिर भी एक बार उक्त डिप्टीकलेक्टर साहब को धन्यवाद देते हैं कि उन्होंने हिन्दी के पाठकों के प्रति इस ग्रंथ को प्रकाश करने का अवसर हमको दिया जिसके लिये हम उनके अत्यन्त अनुगृहीत हैं।

रामकृष्ण वर्म्मा
सम्पादक भारतजीवन काशी।
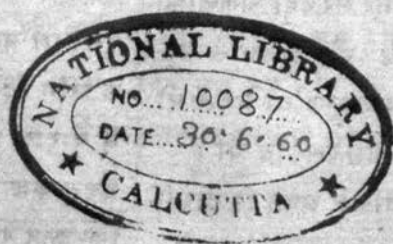
अमला वृतांतमाला।

—○*○—

पहिला बाब।

फ़ीरोज़नगर

फीरोजनगर में बहुत दिनों से यह दस्तूर था कि मिस्टर डबल्यू० सी० पार्कर डिप्टी कमिश्नर ज़िला मज़कूर हरसाल उम्मेदवार भरती करते थे और उनको तालीम बहुतही बुजुर्गाना मेहरबानी से देते और आखिरकार मुलाज़मत सरकार में लेते थे। मि: पार्कर एक पुरानी किता के सिविलियन थे। गो एशियाई तरीका खुशामद उनको पसन्द था लेकिन फिर भी हज़ार गनीमत थे। हिन्दुस्तानी शरीफ़ों की बड़ी कद्रदानी करते थे। उस ज़िले में बहुत बरसों से थे और अमूमन् लोग उन को पसन्द करते थे। जो कुछ उन में नुक्स था सो यह कि ज़रा काम में काहिल थे और इस सबब से ज़िले में अमलों का बड़ा ज़ोर था। फीरोज़नगर सरहद्दी अज़लाओं में बहुत अच्छी जगह थी, टौनहाल म्यूज़ियम्, काण्टून्मेण्ट सब-कुछ था बहुत सी पुरानी इमारतें भी काबिलदीद थीं॥

अब हम सब से पहिले अपने दो दोस्तों को जो इस किस्से के हिरो (Hero) हैं। नाज़रीन से मिलाया चाहते हैं। उनके नाम सैयद दियानत हुसैन और लाला पर्वनलाल हैं ये दोनों साहब भी एक साल दो पार्करी उम्मेदवार हुये॥

सैयद दियानतहुसैन राजा लियाक़त-हुसैन खां बहादुर के फ़र्जन्द अर्जमन्द थे। राजा साहब उस ज़िले के एक बड़े फैयाज़ और आलीहौसला तालुकेदार थे। हर साल हज़ारहा रुपये खैर खैरात में उठते थे और इस फैयाज़ी की बदौलत उन्हें अकसर कर्ज़ रहा करता था। बहुत ज़माना हुआ कि एक साल फीरोज़नगर के हिन्दू मुसलमानों में सख्त झगड़ा हुआ दोनों तरफ़ के बहुत से लोग मारे गये और बहुतेरे ज़खमी हुये। गोकि राजा साहब हमेशा इन तअस्सुबात से अलहिदा रहते थे लेकिन यार लोगों ने पेशवाये इसलाम समझकर उनको भी इस झमेले में फांस दिया। मि: पार्कर साहब भी उन से नाराज़ हो गये थे और राजा साहब का बहुत कुछ रुपया खर्च हुआ—गोकि आखिरकार राजा साहब बरी हुये लेकिन

इस क़दर ज़ेरबार हुए कि दो ही चार बरस में सब रियासत बिक बिका गई और राजा साहब ने उसी साल इन्तकाल किया। उस वक्त सैय्यद दियानत हुसैन की उम्र सिर्फ़ १८ बरस की थी। वे खन्दा पेशानी ज़ी-इख़लाक़ और मुहज्ज़िब नौजवान थे। लड़कपन ही से उनकी ज़िहानत की धूम थी और बकौल सादी 'बालाये सरश ज होशमन्दी। मीं ताफ़त सितारये बलंदी'। बी० ए० तक अङ्गरेज़ी तालीम पाई थी और एशियाई इल्म में भी दस्तगाह कामिल रखते थे। राजा साहब के इन्तकाल ने सैयद दियानत हुसैन को कालेज छोड़ देने पर मजबूर किया, चूंकि और कोई माश बाकी न थी लिहाज़ा नौकरी की तलाश हुई॥

सैयद दियानतहुसैन बचपनही से निहायत रास्तबाज और मुहज्ज़िब थे। अङ्गरेज़ी ख्यालात को बहुत पसन्द करते थे और लिबास भी अङ्गरेज़ी पहिना करते थे। आनरेबु सैय्यद अहमद खां बहादुर के बड़े पैरो थे, और सैय्यद साहब की तसनीफ़ात बड़े शौक से पढ़ते थे। इस इनकिलाब के बाद मीर दियानत हुसैन ने सब जगह जाना आना छोड़ दिया था यहां तक कि अङ्गरेज़ों से भी नहीं मिलते थे। इसी साल इनकी शादी होनेवाली थी लेकिन इस हादसे के वजह से मुलतवी कर दी गई थी॥

मि: पार्कर को इस बने हुये घर के बिगड़ने का बड़ा रंज हुआ और उन्हों ने एक रोज़ खुद दिनायत हुसैन को बुला भेजा। बड़ी इनायत से पेश आये और कमाल मुहब्बत से इज़हार तआस्सुफ फ़र्माया और निहायत तसफ़्फ़ी देकर उनको काम सीखने का हुक्म दिया। यह हम पहिले ही लिख चुके हैं कि मि: पार्कर पुराने फैशन् के अङ्गरेज़ थे लिहाज़ा एकबारगी बड़ी नौकरी देना पसन्द नहीं करते थे इसी लिहाज़ से सरिश्ते में काम करने का हुक्म दिया॥

लाला पवनलाल छदम्मीलाल चिट्ठीरसां के बेटे थे, कौम के कायस्थ श्रीवास्तव्य, पस्ताकद, सियहफाम, चेचकरू और निहायत करीहमुनज्ज़िर थे। चौबीस बरस की उम्र थी, फारसी की मामूली तालीम पाई थी, और अङ्गरेज़ी सिर्फ़ तीसरे दर्जे तक पढ़ी थी, मिड्ल भी पास न थे। छदम्मीलाल फ़ीरोजनगर का बाशिन्दा था, और कुनबापरवर बहुत था। दो बेवा बहिनें थीं उनके बच्चे, खुद, अपने घर के लोग सब मिलकर १४ आ-

दमियों का ख़र्च था ; मुन्तज़िम आदमी था, खुदा जाने किस तरह बसर करता था कि थोड़ी औक़ात में गुजर होती चली जाती थी। जिस साल पर्वनलाल इम्तिहान मिड्ल में फेल हुये इत्तिफ़ाक से उसी साल उसके बहिन की शादी भी की गई थी—छदम्मीलाल गो खुश इन्तिज़ाम आदमी था लेकिन आप ख्याल कीजिये कि थोड़ी पूंजी में कोई क्या करे, हरचन्द बचाया लेकिन ज़ेरबार हो गया— छदम्मी बेकार हो गया। अब जिस परेशानी से बसर होने लगी वह बहुत क़ाबिल अफ़सोस थी। फीरोजनगर कालेज के प्रिंसपल मि० होबर्न बड़े खुदातरस और रहीम अङ्गरेज़ थे, मुख्तसर यह है कि पूरे ईसाई थे। पर्वनलाल के उस क़ाबिल-रहम हालत से वे किसी क़दर आगाह थे और एक रोज़ बिचारे इस हद को रंजीदा हुये कि उन्हों ने मिः पार्कर से पर्वनलाल की सिफ़ारिश की॥

दूसरा बाब।

दियानत हुसैन और पर्वन लाल की खुलकी आदतें।

क़ब्ल इसके कि यह किस्सा लिखा जावे हमको जरूर मालूम होता है कि हम अपने दोनों दोस्तों की खुल्की आदतें और तबीयत के उठान से भी अपने पढ़नेवालों को आगाह कर दें। लाला पर्वनलाल एक शरीर बदबातिन और क़ाबूपरस्त बकबादी और खुशामदी आदमी था। लालच ने उसकी क़िस्मत को और चमका दिया था, पूरे पूरे पीरज़ाल बन गये थे॥

खुशामद का हाल सुनिये। सिरिश्तेदार और अमले तो बड़ी चीज़ थे, चपरासी और मजकूरियों तक को यह हुजूर और खुदावन्द कहते थे। दो वक्त सब की दर्बारदारी करते थे और इस वजह से आम तौर पर अमले उनसे रज़ामन्द थे। एक रोज इत्तिफ़ाक़िया मुंशी खुशवख्त लाल वासिल बाक़ीनवीस सदर कचहरी नहीं आये, साहब डिप्टी कमिश्नर ने तलाश की, इधर उधर आदमी घूमे मगर थे न मिले। सब को बड़ा खौफ़ हुआ कि देखिये आज क्या होता है क्योंकि ये कई बार पहिले भी ग़ैरहाजिर हो चुके थे जैसे चपरासी ने रिपोर्ट दी कि हुजूर वे नहीं मिलते इतने ही में पर्वनलाल हाथ बांध कर खड़े हो गये और अर्ज़ किया कि ताबेदार का घर और उनका बिलकुल पासही पास है, वह कचहरी आते ही थे कि दफ़न् उनको दस्त आने शुरू हुये

और इस कदर बेचैन हो गये कि आने के काबिल न रहे, मुझ से हुजूर में इत्तला करने को कह दिया था मगर मैं काम में फंस गया अर्ज करना भूल गया, यह कसूर ताबेदार का है माफ फर्माया जाऊं'। इस बरमहल दरोगगोईने दो फायदे किये। अव्वल तो साहब जिला मुन्शी खुशवक्त लाल की गैरहाजिरी से नाराज न हुये दूसरे तमाम अमला कचहरी उसी रोज से पर्वनलाल के मोतकिद हो चले॥

इसी तरह एक रोज लाला पर्वनलाल असिष्टण्ट कमिश्नर की कचहरी में बैठे थे, कोई मुकद्दमा पेश था उनके सिरिश्तेदार पण्डित भैरोनाथ ने सरे इजलास कुछ मांगा। कांष्ठे वृ इजलास और पण्डित जी से कुछ अदावत थी उसने साहब से इस की मुखबरी की और उसका झमेला पड़ा। पर्वनलाल की झूठी शहादत उस मामिले में भी मुफीद साबित हुई और सिरिश्ते-दार साहब की बात बाला रही। एक रोज और बड़ा मजा हुआ—महम्मद हसन साहब सिरिश्तेदार कचहरी में थे, दफतन् उनके घर से इत्तिला आई कि उनकी साहबजादी निहायत अलील हो गई, मीर साहब मौसूफ उसको बहुतही अजीज रखते थे। यह लड़की भी गजब की जहीन-तबीयत थी, फार्सी अर्बी के अलावा अंगरेजी भी बखूबी जानती थी और उस शहर में उसकी लियाकत और हुस्न की खास शुहरत थी। मीर साहब उसकी बीमारी का हाल सुनकर घबरा गये और उसी वक्त कचहरी से चले गये पर्वनलाल भी हमराह हुआ और दूसरे दिन सुबह तक बगैर कुछ खाये पीये वहां मौजूद रहा, ऐसी रोनी सूरत बनाये रहा कि गैरों को यही मालूम पड़ता था कि यह बाप से भी ज्यादा फ़िक्र और तरद्दुद में है। सिरिश्तेदार साहब को पूरा यकीन उसकी दिली मुहब्बत का हो गया और उस रोज से उसकी बहुत खातिर करने लग गये॥

बर्खिलाफ उसके मीर दियानतहुसैन अपनी वजह और रास्तबाजी की बदौलत तमाम कचहरी में नक्कू हो चले। एक रोज मिः पार्कर हनोज कचहरी नहीं आये थे और मीर महम्मदहसन साहब सिरिश्तेदार इजलास पर बैठे लिफाफे खोल रहे थे कि इतने में एक अहलगर्ज आया और अपने मुकद्दमे की तारीख दर्याफ्त की। मुन्शी जी ने अपना हक मांगा, वह जिमींदार भी कम्बख्त हंसोड़ था, जेब से एक डबल निकालकर मुट्ठी में

बन्द करके मुन्शी जी की तरफ़ हाथ बढ़ाया, मुन्शी जी ने भी चुपके से उसकी मूठी खोली। डबल पैसा देखकर सख़ बरहम हुये, गुस्से में एक थप्पड़ जिमींदार को मार दिया और कचहरी से निकलवा दिया। जिमींदार निहायत ग़रीब था, जैसे ही पार्कर साहब आये उसने बरामदे ही में कुल किस्सा कह सुनाया। साहब ने इजलास पर बैठतेही पूछा कि 'मुन्शी, यह क्या कहता है ?'

मुंशी जी—"हुजूर कुछ नहीं, यह मेरे पास तारीख़ दर्याफ़ करने आया था मैंने इससे कहा कि बाहर काज़लिष्ट लटकी है जाकर देख लो, इस पर इस मर्दूद ने मीर दियानत हुसैन को एक पैसा दिखला कर कहा कि तुम चल कर बतला दो, मुझे गुस्सा आया कि इतने बड़े रईसज़ादे को इसतरह कम-औकात समझता है, मैं ने एक तमाचा ज़रूर मार दिया और खुदावन्द नियामत यह आदमी निहायत ग़रीब और मुफसिद पर्दाज़ है॥

साहब—"वेल दियानतहुसैन तुम बतलाओ कि क्या हुआ ?"

दियानतहुसैन—"हुजूर यह तो सच है कि इसने किसी मुकद्दमे की तारीख़ ज़रूर दर्याफ़ की थी मुन्शी जी ने कोई थे जिसका नाम 'हक' बताया इस से तलब की। इसने मजाख़ को तौर पर एक डबल पैसा दिखलाया, मुन्शी जीको गुस्सा आया एक थप्पड़ मार दिया, मुझ से कुछ वास्ता नहीं और न उस ग़रीब ने मुझे कुछ देने को कहा"—

मुंशी जी—(आहिस्ते से) दियानत हुसैन! यह क्या ग़ज़ब कर रहे हो (जोर से) अजी अपना ईमान सम्हालो क्यों साहबज़ादे! कुदरत खुदा हमही पर हाथ साफ़ किया जाता है ?॥

मिः पार्कर सिरिश्तेदार साहब पर बहुत खफ़ा हुये और गो अपनी नेकी से उस वक्त रफ़ गुज़श्त कर दिया लेकिन जब भी उन पर उसका बड़ाही असर हुआ और उसी दिन से दियानतहुसैन और मीर महम्मदहुसैन सिरिश्तेदार में जाहिर ज़रूर नाइत्तिफ़ाकी हो गई॥

तीसरा बाब ।

दियानतहुसैन की पहिली नौकरी ।

चन्द रोज बाद नायब वासिल बाकीनवीस ने पन्द्रह रोज की रुखसत ली।

सिरिश्तेदार ने तो पवनलाल के लिये बहुत कुछ कोशिश की मगर मि: पार्कर ने दियानतहुसैन को एवज मुक़र्रर किया। दियानतहुसैन को ऐसी छोटी छोटी नौकरियां निहायत नापसन्द थीं और इस में वह अपनी तौहीन भी समझते थे लेकिन मि: पार्कर की जिद ने मजबूर किया और बिचारे को ये जिल्लतें उठानी पड़ीं। दूसरे दिन वक़्त मुक़र्रर पर कचहरी गये वहां अजब तमाशा देखने में आया। मुंशी-खाने में क्या कहैं क्या हो रहा था। कई दर्जन लाला और दो चार मुसलमान सब एकही किस्म की बड़ी बड़ी नोकदार पगड़ियां बांधे ऐनकें लगाये और एक एक कलम कान खोंसे खुश गप उड़ा रहे थे, मीर दियानतहुसैन ने जाकर किसी क़दर मुसकुरा कर दरयाफ़्त किया कि मुझे कहां बैठना होगा"

मुहर्रिर कुलियात—

"गर बसरी चश्म मन् नशीनी,
नाजत बकुशम् कि नाजनीनी"

इस गुस्ताखाना जवाब पर तमाम अमलों ने बड़े जोर से कहकहा लगाया और दियानतहुसैन कुछ ऐसे झिप गये कि उनके आंखों में आंसू भर आये, शायद तमाम उम्र ऐसी बेहूदा गुफ़्तगू उन्होंने कभी सुनी भी न थी मगर खुदा जाने क्या सोचकर उसके बेहूदापन पर मुतवज्जह न हुये और एक अलमारी के पास जिस पर सिरिश्तेदार वासिलबाकीनवीस लिखा था बैठ गये और लाला खुशवख़्त लाल वासिलबाकी-नवीस ने किसी कदर इखलाक से बैठाया।

दियानतहुसैन—"मैंने तो कभी यह काम नहीं किया लेकिन जो बतलाइये मैं करूं"।

वासिलबाकीनवीस—"अभी तौजिया तहसीलवार और नक़्शेजात माहवारी सब बनाने को पड़े हैं जो आपसे हो सके कीजिये। मीर दियानतहुसैन ने पहिले पिछली से-माही के तमाम नक़्शाजात तौजीय वगैरह को देखा और उसके तरीके पर ग़ौर किया, जब समझ में आ गया फौरन् सब नक़शे बना डाले और खुदही अंग्रेजी में तर्जुमा करके सरे दफ़्तर को दे आये। तमाम काग़ज़ात जो परेशान पड़े हुये थे उनको तहसीलवार मुरत्तब करके बस्ते में बांध दिया उनकी तेज़ी और ज़िहानत देखकर अमले यों बातें करने लगे।

एक—"लौंडा गजब ही फिरकी अस हाथ चालत है"।

दूसरा—"और खुशखत भी बहुत है"।

तीसरा—भाई होनहार का बात। सच है "गुदनी नौनहाल वर्ग चर्बी।"

चौथा—मुद्दा गरूर बहुत है, दोही तीन दिन मां ठीक होय जइहैं।

पांचवां—अजी यह कबतक छिपेंगी केरीपतों की आड में। आखिर को आम होके बिकेंगी बजार में।

दोही तीन दिन में सैय्यद दियानत हुसैन ने अपनी लियाकत का सिक्का बिठला दिया और पिछला काम साफ कर दिया। गो उनकी लियाकत के सब कायल थे मगर उसके साथही खिलाफ़ भी थे, जब तक ये कचहरी में रहते रिश्वत बिलकुल मसदूद रहती, कोई जिमींदार से बात तक न करता।

एक रोज लाला खुशवख्त लाल दियानतहुसैन को इलहदा ले गये और यों तकरीर की।

मेहरबान मन् अभी तुम क्या और तुम्हारी उम्र क्या? मुंह से दूध गीर-मादर "होनहार बिरवान के होत चीकने पात। की मिसाल अब्बरीज है और अभी इस बद दूर अकल दाढ तक नहीं निकली, इसमे शक नहीं कि होनहार हो, गुदने हो, आकल हो, शऊरदार हो, बड़े पिदर के पिसर हो, और मादर नेक अख्तर के फ़र्ज़न्द हो, मगर नातजरु बाकार हो। नौकरी सीमी का कोई घर नहीं, खसदार शीरीनी नहीं है, नौकरी सब कोई हसूल मतलब के वास्ते करता है, तनखाह इस जमाने में ऐसी कद्रे कलील है कि गुजर औकात चलनी दुशवार है। हुक्काम कुछ कद्र नहीं करते उनके हिसाब काली रियाया बेईमान जो ले उसे, जो ले न उसे फिर यार मन् ऐसे वक्त में न लेना बेवकूफ़ी नहीं तो क्या है? सुनो म्यां साहब, तुम मर्द मुसलमीन हो तुम्हारे मजहब में अंग्रेजों की नौकरी तक गुनाह है—जब ये रोजगारही से गुनाह होगा तो हमारी दानिस्त में जो कुछ दस्तगैब से मिले जरूर लेना चाहिये और सिरिश्ते वासिल बाकी में अब रह क्या गया? । नीलाम की आमदनी गई कद्रे कलील जो है वह सालाना रकम मुफ़सलके बाकी नवीस से मिलता है और इसरोज फर्दा सब अशखास जमा है, बस यही वक्त वसूल का है क्या सुनो हम बेईमान नहीं—नहीं तो पोशीद ले लेते, फिरिश्ते खां तक राज

अफशां न होता तो अब हमारी यह राय है कि जो कुछ मिले हम आप मिस्फा निस्फ बांट लेवें, अलावा बरी यह रकम दाखिल रिश्वत नहीं हो सकती—क्योंकि न हम मुकद्दमा करें न मामला, डिग्री डिसमिस हमारे इखतियार नही है, अगर इत्तिफाक से हमारी तवाजह या हक हकूक दी जावे तो इस्में कौन गुनाह है 'न हम जोर करते न करते जबर—जो दे जावे कोई तो क्या है खतर'—आइन्दा मियां साहब आप जानें और आप का काम आगे हमारी शिकवा शिकायात न कीजियेगा कि दीवान जी तनख्वाखोरी कर गये॥

दियानतहुसैन—मुझे इस्से मुआफ़ रखिये, मै आपका शुक्रगुजारहूं कि आपने मेरा भी ख्याल रखा मगर मुशीजी मै इस किते का आदमीही नहीं। फाके पर फाका करूंगा मगर अपने नाम को बेइज्जतन होने दूगा। अगर आप मुझसे खटकते हों तो इससे यकीन रखिये मुझे अपनी जात से ग़र्ज है, औरों को मै क्यों रोकने लगा॥

किस्सा मुख़्तसर मीर दियानतहुसैन ने बहुत आब व ताब से ये पन्द्रह दिन खतम किये और तमाम दफ़्तर में इसका शोहरा हो गया कि एक नये किते का उम्मेदवार अपने आपको इस्म बा मुसम्मा साबित करने वाला है। मि: पार्करने भी उनके काम से खुशी जाहिर फरमाई और ये फिर उम्मेदवारी करने लगे॥

—※—

चौथा बाब।

मवेशीखाना।

दो ही तीन दिन मीर दियानत हुसैन को इसबेकारी में गुजरेथे कि तहसीलदार साहब हजरतपूर की एक रिपोर्ट आई जिसका मजमून यह था कि दफ़ान् मुहर्रिरान मवेशीखाना पिपरा और मुरादपूर बीमार हो गये और तहसील में कोई उम्मेदवार मौजूद नहीं कि जिनसे काम लिया जावे, मदर से फौरन् दो शख्स एवज मुकर्रर फरमाये जावें। सिरिश्तेदार साहब बखूबी जानते थे कि यह जलील नौकरी है मगर दियानतहुसैन को महज परेशान करने की ग़रज से कहा कि 'हुजूर पर्वनलाल और दियानतहुसैन भेज दिये जांय'॥

साहब—"हू"॥

साहब का मंजूर करना था कि ग़रीब दियानतहुसैन थर्रा उठे और इस हद्दको परेशान हुये कि साहब से कही डाला

कि 'हजूर कांजीहौसकी नौकरीपर मुझे न भेजिये' ॥

साहब—'तुम छोकड़े हो, तुम्हारी नेकी बदी हम खूब समझता है, हम जो हुक्म दें तामील करो और यह याद रखो कि शहर रूम एक दिन में आबाद नहीं हुआ था" ॥

अब इसका क्या जवाब हो सकता था सिवाय इसके की 'बरसर फर्जन्द आदम् हर्चे आयद बगुजरद'।

अब देखिये, तहसील में पहुंच कर पिपरा और मुरादपुर के हालात जो सुने गये तो बिचारे दियानतहुसैन को और भी दहशत हुई। पिपरा दरयायगंज के मुत्तसिल एक पुलिस स्टेशन था, वहां बहुत मवेशी भी नहीं आते थे और न कोई आबाद जगह थी, वहां लाला पर्वनलाल तैनात हुये—मुरादपूर नाम तो अच्छा था लेकिन जगह ऐसी बुरी थी कि खुदा किसी इन्सान को न ले जावे—ढाई ढाई कोस चारों तरफ गाव का नाम नहीं सरकारी जङ्गल बहुत था इसी वजह से मवेशी बकसरत आते थे। ठीक जङ्गल में मवेशीखाना था। वहीं हमारे दोस्त मीर दियानतहुसैन तैनात हुये ॥

लाला पर्वनलाल ने तो पहुंचतेही आसे के लोगों और गिर्दनवाह के बदमाशों से दोस्ती बढाई और कुछ आपस में मुआहिदा कर लिया। वे लोग रातों को निकल जाते और सौ सौ पचास पचास मवेशी हांक लाते, उन में से दस पांच रजिस्टर पर चढ़ाये जाते और बाकी सब इलाहदा रहते। खुराक मवेशियों को पर्वनलाल पर क्या मुनहसिर कोई मुहर्रिर देता ही नहीं लिहाजा खुराक और फीस दोनों हजम। पर्वनलाल ने इस नौकरी को बहुत पसन्द किया और मुस्तकली की दुआये करते थे। ग्यारहवे रोज वहां का मोहर्रिर आराम हो गया और पर्वनलाल वापस आये। इस ग्यारह दिन में पर्वनलाल ने दस बारह रुपये अलावा तनख्वाह और खुराक के बना लिये। शाबाश।

बरअक्स इनके हमारे दोस्त मीर दियानतहुसैन का मवेशीखाना अजायबखाना हो गया। पहुंचतेही एक आदमी चरवाहा नोकर रक्खा भूसा अलग मंगवाया, पानी की नांदे गडवाई। मवेशियों की अजीयत उन से देखी न जाती थी लिहाजा जो सरकार से मिलता था उसे दूना ये अपने निज से मवेशियों को खिला देते थे। तनहाई का यह आलम कि चार चार दिन तक आदमी की सूरत नहीं दिख

लाई देती थी। न कुछ खाने को मिलता था न कोई आदमी बात करने को। मवेशीखाने की नौकरी नहीं की बल्कि खुद दाखिल कांजीहौस हो गये, उसी जमाने में मुख्तसर से मसनवी भी तसनीफ की थी जिसके चन्द शेर हम यहां नकल करते हैं।

करने का नहीं यह काम यारो ।
मेरा तो है अब सलाम यारो ॥
कब तक कोई भेड़ियां चराये ।
कब तक कोई सानियां खिलाये ॥
बी० ए० की हुई यह कद्रदानी ।
भैंसों को खिला रहे हैं सानी ॥
सैय्यद से बने अहीर अब तो ।
इस दर्जः हुये हकीर अब तो ॥
किस्मत में अगर यही बदी है ।
उसकी तो बातही जुदी है ॥
सैय्यद का नहीं ये काम भाई ।
इसपर कोई चाहिये कसाई ॥

हजार खराबियों के बाद इक्कीसवें दिन मीर दीयानतहुसैन को मुरादपूर से नजात मिली और अपने घर आकर फिर उम्मेदवारी करने लगे।

पांचवां बाब

दोनों फिर नौकर हुये।

चन्द रोज बाद फिर किसी इन्तजाम में दो वहदे खाली हुये, एक अहलमदी फौजदारी दूसरा नायब मुहाफिज-दफ्तरी कलेक्टरी। अहलमदी गो चन्दरोजः थी मगर साहब डिपटी कमिश्नर के इन्तजाम की थी, इसलिये मि: पार्कर ने दियानतहुसैन को अहलमद मुकर्रर किया; लाला पर्वनलाल मुहाफिज खाने भेजे गये। अहलमदी फौजदारी उस जिले में बड़ी याफ्त की नौकरी थी और शेख करीमबक्स जो मुस्तकिल अहलमद थे बड़े तेज और चालाक शख्स थे; उनकी वजह से सबका काम भी खूब निकलता था और उनको फायदा भी खूब होता था। दियानत हुसैन उस किते के आदमीही न थे यह बिचारे बैठे चुपचाप काम किया करते थे न किसी से लेना न देना—मतलब न गर्ज—अहलमामलों को तो पास न बैठने देते थे और न किसी को कोई मिस्ल वगैरह दिखाते थे, उनकी जात से वकील मुख्तारों का हर्ज होने लगा। जिस कागज की पहिले रुपया व आठ आना खर्च कर नकल ले सकते थे वह अब जब तक बाजाप्ता न लें देखना भी दुश्वार था।

जाते की नकल लेने में हजार बखेड़े थे। पहिले दरखास्त दें, स्टाम्प दाखिल करें, चार पांच रोज दौड़ें, कुछ नकलनवीस को पूजें, तब कहीं नकल मिले। जो वकील किसी कदर समझदार और सूझजिज थे उन्होंने मुआइना की फीस दाखिल करके कागजात देखना शुरू किया या आनकर खुद हाकिम—अदालतसे ज़बानी कहकर मिस्ल मांग लेते थे, लेकिन आम लोगों को बहुत तकलीफ होती थी। एक दिन दियानतहुसैन कचहरी में बैठे हुये थे कि एक मुख़्तार ने आकर सलाम किया—

दियानतहुसैन—'आइये, तशरीफ लाइये'॥

मुख्तार—'जहांगीर वाली मिस्ल आपही के पास है न? अपना हक ले लीजिये और मुद्दई का बयान जरा दिखला दीजिये'।

दियानतहुसैन—'मुख़्तारसाहब, आप जान बूझकर मुझे क्यों सताते हैं मैंने कभी किसी से कुछ लिया है कि आप से लूंगा? दरखास्त देकर बाजाब्ता नकल लीजिये।

मुख्तार—'आजकी पेशी है और सवालखानी हो चुकी आप एक रुपये के एवज दो रुपये ले लीजिये और क्या कीजियेगा। (इतना कह मौलाबख्श ने रुपये उनके कलमदान में रख दिये और खन से बजे)

दियानतहुसैन—(उन रुपयों को फेंक कर) आप इस वक्त यहां से जाइये, हम ऐसे बेईमानों से बात नहीं करना चाहते॥

मुख्तार—'जबान सम्हाल कर गुफ़्गू करो नहीं—एक ऐसी करीह बात मौलाबख़्श मुख़्तार की ज़बान से निकल गई जिसको दियानतहुसैन बर्दाश्त न कर सकते थे। उन्हों ने फ़ौरन् जाकर मि॰ पार्कर से कुल हाल बयान किया और इस कदर उनका दिल भरा हुआ था कि दौरान-गुफ़्गू में रोने लगे। मि: पार्कर पर भी इस बात का बड़ा असर हुआ और ऐसा गुस्सा आया कि फ़ौरन् हस्ब दफ: १६१ पीनलकोड मौलाबख़्श पर मुकद्दमा क़ायम किया। मुकद्दमा क़ायम होते ही सब पुराने फ़ैशन के वकील मुख़्तार और जुमला अमला सदर मौलाबख़्श की तरफ हो गये। मीर दियानतहुसैन की तरफ कोई न था, सिर्फ बाबू कीरतचन्द्र

राय एम० ए० वकील हाईकोर्ट जो इस ज़िले में एक नामी वकील थे उनकी शहादत से बयान--मुस्तगीस की ताईद हुई। उन्हों ने यह भी बयान किया था कि "इस ज़िलेमें सिवाय दियानतहुसैन केकोई अमलः काबिल एतबारनहीं है"। दियानत हुसैन से पेश्तर अकसर लोग बेजाबृतः तौर नकलें मंगवा लेते थे मगर दियानतहुसैन ने यह दस्तूर बन्द कर दिया और अब बजुज़ इसके कि फ़ीस मुआइनः दाख़िल करके या आप की इजाज़त से मिस्ल देखें और कोई ज़रियः नहीं है। इस बात को आप मुहाफ़िजखाने से रजिस्टर-मुआइनः मंगवाकर देख लीजिये। चुनांचे मिः पार्कर ने रजिस्टर मंगवाकर देखा तो वाकई बड़ा फ़र्क़ निकला। दियानतहुसैन के ज़माना क़ायममुक़ामी में उन्नीस रुपया पन्द्रह रोज़ में दाख़िल हुये और उससे क़ब्ल कभी एक रुपया भी इस मद में दाख़िल न हुआ था॥

मिः पार्कर को पूरा इतमीनान हो गया कि दियानतहुसैन का बयान सच है, उन्होंने मौलाबख्श पर १०) जुर्माना किया और दियानतहुसैन की बनिस्बत बहुत अच्छे अलफ़ाज़ में अपनी तजवीज़ में शुक्रिया अदा किया॥

इस मुक़द्दमे के बाद दियानतहुसैन से लोगों की बदज़नी बहुत बढ़ गई और यह उनकी निगाह में खटकने लगे, मगर मिः पार्कर का ख़्याल उनकी तरफ़ से बद नहीं हुआ, बल्कि वह पहले से ज़्यादा ख़ातिर करने लगे। कुछ इत्तिफ़ाक़ से उन्हीं ऐयाम में शाह महमूद हुसैन पेश-कार हिसामपूर मर गये। मिः पार्कर ने फ़ौरन् यह जगह दियानतहुसैन को दी। यह सुनकर अमलों को जिस क़दर ख़ुशी हुई वह नाज़रीन् ख़ुदही अंदाज़ा कर सकते हैं। मीर दियानतहुसैन ने निहायतही शुक्रगुज़ारी से यह ओहदा क़बूल किया और रवाना हिसामपूर हुये॥

छठवां बाब।

मुंशी पर्वनलाल की महाफ़िज़दफ़्तरी।

हमारे करमफ़र्मा मुन्शी पर्वनलाल भी अपने कामों में ग़ाफ़िल न थे। अगर मीर दियानतहुसैन ने अपने को ग़ैर-हर-दिल अज़ीज़ बनाया तो उसके ख़िलाफ़ मुन्शी साहब ने अपने को सब तरह हर-दिल अज़ीज़ साबित किया। हर अमलों में शीर व शकर हो गये—हरवक़्त हंसी

दिल्लगी गाली गलौज में दिल बहलाते थे।

कुल अमलों में पर्वनलाल की मिलनसारी की बड़ी तारीफ़ थी। मीर ख़ादिम अली मुहाफ़िज़दफ़्र एक सीधे सादे पुरानी चाल के पंजाबी मुसलमान थे। पर्वनलाल की इताअत से बहुत रज़ामन्द थे और इस शफ़क़त से काम सिखलाते थे कि लोगों को ताज्जुब होता था। पर्वनलाल ने तमाम ज़िम्मेदारी के काम अपने हाथ में ले लिये और अहलमदों की मिस्लों में ऐसे ऐसे एतराज़ निकालने शुरू किये कि सब घबरा उठे। अलल ख़सूस अहलमदान् तहसील और कुर्क अमीनों का तो नाकोंमें दम कर दिया, जब तक उन लोगों से अपना सालाना हक़ नहीं मुक़र्रर करा लिया पीछा नहीं छोड़ा। मीर ख़ादिमअली मुतदैयन तो थे नहीं वही पुरानी क़िता के अमले थे पर्वनलाल की इन सब तेज़ियों से बहुत ख़ुश थे, वकील मुख़्तार भी पर्वनलाल की ख़ुश अख़लाक़ी और इताअत के मद्दाह थे और हाकिम मुहाफ़िज़ख़ाना भी उनसे रज़ामन्द थे। पर्वनलाल बड़े मज़े से नायब मुहाफ़िज़ दफ़्तरी करते थे, ज़ाहिरी सामान भी कुछ दुरुस्त करना शुरू किया पुराना मकान भी छोड़कर एक कमरा अपनी नशिस्त के लिये किराया पर लिया यार आश्ना जमा होने लगे, नाच रंग का भी शौक़ बढ़ा, शराब भी उड़ने लगी; अलग़रज़ नायब मुहाफ़िज़ दफ़्र होते ही उनका मिजाज़ दूसरा हो गया। इसके थोड़े ही दिन बाद होली आई, यार दोस्तों के इसरार और नई नई नौकरी के उमङ्ग ने मजबूर किया, होली का जल्सा उनके यहां क़रार पाया। तमाम अमले और हिन्दुस्तानी हाकिमों को न्यौता दिया गया आसपास के ज़मीदार भी आये। बाबू बच्चासिंह के यहां से बहुत बड़ा शामियाना मंगा कर खड़ा किया गया। तख़्तों पर फ़र्श लगा, विलायती शराब की बोतलें और शीशे के गिलास एक तरफ़ और हिन्दोस्तानी शराब और मिट्टी की कुल्हियां दूसरी तरफ रखी हुई थीं, दो तीन रंडियों का नाच था, लाला भाई और अमला जौक़ जौक़ आते जाते और शराबें पी पी कर अच्छा ग़फ़ील होते जाते थे। उस जल्से में दियानतहुसैन यों याद किये गये॥

पर्वनलाल—"वासिल बाकीनवीस साहब! लौंडा तो पेशकारी खूब पा गया!"॥

वासिलबाकीनवीस—"कौन?

हियानतहुसैन ! चिराग़-सहरी समझो सिरिश्तेदार साहब नाराज़—और तहसीलदार हैं मुन्शी चिरौंजीलाल—एक दिन गुज़र होना दुश्वार है ॥

स्याहानवीस—'इस तहसील में आ जावैं तो मियां से दो ही दिन में नाकों चने चबवा दूं" ॥

नकलनवीस—'सरकशीपन से क्या हासिल, जो जिसके मुकद्दर में है होगा—लो अब रक़्स आगाज़ हो, ओ बीबी ज़ुह्रन् कोई होली तो गाओ'—

इतनेमें डिप्टी बृजलाल, राय किशोरी लाल सब जज और मुन्शी बैजनाथ साहब मुनसिफ़ भी आ गये और रंग उछलने लगा जब अच्छी तरह छीछालेदर हो चुकी नाच शुरू हुआ। ये हिन्दोस्तानी हुक्कामभी पुरानी रसम के पाबन्दी के लिहाज़ से बराबर जल्से में शरीक रहे। लाला पर्वन लाल के वालिद का दिल बालिश्तों बढ़ा जाता था और अपने साहबज़ादे के सपूत होने की बार बार अपने को मुबारकबाद देते थे। तमाम शहर में इस जल्से की धूम थी और पर्वनलाल की शीरचश्मी और आली-हिम्मती की तारीफ़ होती थी। यह डिप्टी साहबों के तशरीफ़ ले जाने से वाकई मुंशी पर्वनलाल की इज़्ज़त बहुत बढ़ गई। यह पहिला दिन है कि ऐसे जलीलुल् क़दर हिन्दुस्तानी हुक्काम उनके मकान पर तशरीफ़ ले गये। पर्वनलाल शराब के नशे में बार बार डिप्टी साहबों का शुक्रिया अदा करते और यह शेर पढ़ते थे 'ज़ेकदरे मंजिलत् शहन गश्त चीज़े काम कुलाह गोश ये पर्वन् ब आफ़ताब रसीद।

—***—

सातवां बाब।

पर्वनलाल का उरूज।

खुदा का करना यों हुआ कि मीर ख़ादिमअली बीमार हो गये और उन्हों ने दो महीने की रुख़सत ली। मिः पार्कर ने बएवज़ पर्वन लाल यह रुख़सत मंज़ूर फ़र्माई। पर्वनलाल की तकर्रुरी से हर शख़्स खुश हुआ क्योंकि खुशामद और आलियापन से सब लोग उनसे राज़ी थे। चूंकि अनकरीब मीर ख़ादिमअली साहब हमेशा के लिये नाज़रीन से इलाहदा होनेवाले हैं इसलिये हम उनके पूरे पूरे हालात यहां बतलाना चाहते हैं। यद्यु हम पहलेही अर्ज़ कर चुके हैं कि वे एक पुरानी किस्म के बहुतही सीधे सादे मुसलमान थे। पैंतालीस बरस की उम्र की

ख़िजाब करतेथे, औलाद कोई न थी उनको नेकी और उनका सीधापन ऐसा मशहूर था कि लोग उनको ज़र्बुलमस्ल बनाये हुये थे। हर शख़्स के साथ वे खुलासे दिल मे मिलते थे और जहां तक उनसे हो सकता था सब से सलूक करते थे। बहुत से फकीर और मसाकीन उनकी ज़ात से पर्वरिश पाते थे और वाकई वे बहुत बड़े फकीरदोस्त आदमी थे; जो कुछ कमाते वह या तो खैर खैरात में उठता या कबूतरों में सर्फ़ होता था। जब पर्वनलाल पहले उनके यहां मुहाफिज दफ़्तर होकर गये तो ईमान की यह बात थी कि काम से बिलकुल नावाकिफ़ थे। मीर ख़ादिम अली ने बहुतही शफ़क़त से उनको काम सिखलाया और अपनी खास औलाद से कम नहीं समझा। दो तीन मर्तबः सौ सौ पचास पचास रुपये से सलूक भी किया। पर्वनलाल भी बज़ाहिर अपने बाप से ज्यादा मीर ख़ादिमअली का लिहाज़ करते थे और हमेशः 'जनाब चाचा साहब किब्‌ः दो जहान्' अलकाब लिखते थे। उनकी बीमारी के दिनों में पर्वनलाल कचहरी से लौटकर बराबर मुन्शी ख़ादिमअली के पास रहते थे और बेटे से ज़ियादा उनकी खिदमत करते थे। मीर ख़ादिमअली चूंकि बहुत नेक आदमी थे इस वजह से तमाम शहर को उनकी बीमारी का अफ़सोस था और सब लोग बराबर उनके देखने को आया करते थे। गो वह कुछ ऐसे ज्यादा बीमार न थे सिर्फ़ वर्म जिगर की शिकायत थी लेकिन वह अपनी जिन्दगी से मायूस थे और बार बार यह तमन्ना ज़ाहिर करते थे कि पर्वनलाल उनका मुस्तकिल जानशीन हो जावे। कभी कभी पर्वनलाल से भी मुख़ातिब होकर फर्माते थे कि बेटा हमारे बाद अपनी चची की भी ख़बर लोगे?। इसको सुनकर पर्वनलाल हमेशा रोने लगते थे। मीर ख़ादिमअली की व्याहुता बीबी कोई न थी, एक बाहरी औरत २५ साल से उनके पास थी और उससे निकाह कर लिया था। तीन हज यह कर चुके थे, सोलह पारा कुरान शरीफ़ के हिफ़्ज किये थे। निमाज़ी और पाबन्द-शरह ऐसे थे कि तमाम शहर में उनका शुहरा था। ख़ादिम अली को उसी का बड़ा ख्याल था, अगर उनको अपने मरने का कुछ भी रंज होता था तो अपनी इन्हीं अहलख़ाना की बेकसी और लावल्दी के सबब से। एक दिन ख़ादिम अली किसी कदर ज्यादा अलील हुये

लोगों ने मि: पार्कर से इनका तजकिरा किया। मि: पार्कर उनके कदीम मुरब्बी थे अपने मुहाफिज दफ़र को बहुत अज़ीज रखते थे, उनको ज्यादा बीमार सुनकर बहुत रंज किया और खुद अयादत को तशरीफ ले गये और देरतक तशफ़्फ़ी की बातें करते रहे, दर्याफ़ किया कि "इलाज किस का होता है?" कहा "अभी तो किसी का नहीं, जो जिसने बतलाया इस्तियामाल किया जाता है"। साहबने फर्माया कि डाक्टर ब्रजेन्द्रनाथ बहुत होशियार है 'उनकी दवा करनी चाहिये' बाद इसके मुहाफ़िज़ दफ़र ने तमाम अपनी बेकसी और लावल्दी का किस्सा सुनाया और आखिर यह वसीयत की कि 'मेरे मरने के बाद लाला पर्वनलाल को मेरी जगह मुस्तकिल कर दीजियेगा, वह काम से वाकिफ़ है और मेरी बेवा की भी खबरगीरी करेगा"। मि: पार्कर ने इस वसीयत को सुना और वादा किया कि मैं आपकी ख्वाहिश जरूर पूरी करूंगा। उसी वक़्त साहबके जातेही डाक्टर ब्रजेन्द्रोनाथ बुलाये गये। वाकई वे बहुत लायक डाक्टर थे और दवा भी बहुत जी लगा कर करते थे। पर्वनलाल को उम्मेद आइन्दा पर बहुत मसरत हुई और वह रोज़ दुआये मांगने लगे कि मीर खादिम अली अगर काल मरने के हों तो आजही मर जावें। दो चार रोज़ बाद जब पर्वनलाल ने देखा कि अब मुहाफ़िज दफ़र पनप चले और डाक्टर बाबू का ईलाज मुफ़ीद हुआ तो एक दिन आप शफाखाने गये और डाक्टर बाबू से मुलाकात की॥

पर्वनलाल—"बहुत दिनों से आप की मुलाकात का शौक था आपकी बड़ी तारीफ़ सुनो जाती है"॥

बाबू—"आपकी मिहर्बानी, हम किस लायक हैं"॥

पर्वनलाल—"आप मुहाफ़िज दफ़र के यहां कब से नहीं गये"॥

बाबू—"परसों हम गया रहा, अब तो अच्छा है, एक दो हफ़्ता में काम लायक हो जायगा"॥

पर्वनलाल—"आपने बड़ी मिहनत की, फ़ीस तो बराबर देते जाते हैं न?"

बाबू—"ओ नहीं, एक दफा खाली पांच रुपिया दिया जब से हम कुछ नहीं मांगा"।

पर्वनलाल—गुस्ताखी मुआफ़, ये मुसलमान भाई किसी के नहीं होते, आप इस क़दर जी लगाकर इलाज करते हैं और वह कहते हैं कि बाबू तो नातजरुबाकार हैं, आपको नीमहकीम बतलाते हैं, लालची कहते हैं, हाय रे जमाना "नेकी बर्बाद गुनह लाज़िम"। वह तो साहब के डर से आप का इलाज करते हैं, नहीं तो आप को पास न जाने देते॥

बाबू—(गुस्से में आकर) 'ओह! गाड्स! ओ मुल्ला हमको लालची बनाया और नातजरुबाकार बोला'॥

पर्वनलाल—"अब मैं क्या अर्ज करूं जो जो कहा, खुलासा यह है कि वह बड़ा बद आदमी है, देखने में भोले भाले हैं जनाब उनके काटे का मन्तर नहीं"॥

बाबू—"हमको अब वह अगर पचास रुपया रोज़ देगा तबभी हम नहीं जायगा यह मुसलमान लोग बड़ा अनग्रेटफुल होता है"॥

पर्वनलाल—"क्यों जनाब बाबू साहब, अंगरेज़ों ने तो खूब खूब दवाइयां ईजाद कीं, हज़ारहा ज़हर आपके अस्पताल में ऐसे होंगे जिनका हिन्दुस्तानी हकीमों ने नाम भी न सुना होगा"॥

बाबू—"वोह! हजारों ज़हर ऐसा है कि एक सेकंड में काम तमाम करने सकता है"॥

पर्वनलाल "जी हां सुना है 'अगर आफ लेड, सब से ज़्यादा तेज़ ज़हर होता है"॥

बाबू—"ओ नहीं! प्रूसिक ऐसिड एक सेकंड में रूह निकाल देता है"॥

पर्वनलाल—"प्रूसिक ऐसिड! यह क्या कोई फंकी की तरह होता है"॥

बाबू—"ओ नहीं! पानी का माफिक!"

पर्वनलाल वहां से रुखसत हुये और रास्ते भर प्रूसिक ऐसिड का नाम याद करते गये। बाद वापसी कचहरी पर्वनलाल मीर खादिमअली के पास आये।

पर्वनलाल—"मुन्शी जी! अब आप कैसे हैं? चेहरे से रोज़ बरोज़ आपकी हालत खराब होती जाती है और आप अपना इलाज नहीं करते"॥

खादिमअली—"बैठा मैं तो अब

अच्छा हूं डाक्टर बाबू का इलाज भी होता है, और कौन है जिसकी दवा करूं ?" ॥

पर्वनलाल—"डाक्टर बाबू का खुदा के वास्ते भी नाम न लीजिये मेरा तो जी उनसे फीका हो गया" !

खादिमअली—" क्यों बेटा क्या हुआ ?"

पर्वनलाल—"क्या कहूं क्या हुआ । (ठंढी सांस लेकर) कल मैं अस्पताल गया था उनकी तकरीर से यह मालूम होता है कि अपने फ़ीस के न पाने से आरज़े को तूल कर रहे हैं, बंगालियों से परमेश्वर साबक़ा न डाले, ग़ज़ब बेवफ़ा होते हैं ॥

खादिमअली--"हां फिर फीस तो बेशक़ उनको अभी अच्छी तरह से नहीं दी गई, और बेटा दी कहां से जावै जो हाल मेरा है वह तुम से तो पोशीदा नहीं। फिर अब किसकी दवा करूं ?"

पर्वनलाल--"तो आप हकीम नब्बू साहब का इलाज क्यों नहीं करते ? आज उनका सानी दूसरा हकीम शहर में नहीं है। डाक्टरी भी किसी क़द्र जानते हैं। नवाब अफ़ाउद्दौला बहादुर का मुतिब किये हुये हैं" ॥

खादिमअली—"फिर बेटा उन्हीं के पास जाओ (इतना कहतेही आंसू निकल पड़े) सिवाय तुम्हारे मेरे आगे पीछे कौन है, औलाद हो तो तुम हो, दोस्त हो तो तुम हो । इस बेकसी से खुदा मौत देवै यह क़बूल है " ।

पर्वनलाल—"मुंशी जी आप ऐसा न फ़र्मायें खुदा आप का साया मेरे सर पर हमेशा कायम रक्खे, अच्छा मैं अभी जाता हूं" ॥

पर्वनलाल बएवज़ इसके कि हकीम नब्बू के यहां जांय, हारिसन मेडिकल हाल तशरीफ़ ले गये, और वहां कुंजबिहारी नामक जो उनका हममकतब था उससे मुलाक़ात की ॥

कुंजबिहारी—'कहां चले भाई पर्वन्'

पर्वनलाल—"तुम से मुलाकात भी करनी थी और एक दवा भी लेनी थी—बएक् करिश्मा दो कार" ॥

कुंजबिहारी "कौन शै लीजियेगा चलिये दूकान देखिये" ॥

पर्वनलाल—"मुझको इस वक्त अ-

लूदी बहुत है, दूकान की सैर से तो माफ़ करो दोस्त, ज़रा एक शीशी में मूसिक ऐसिड दे दो, जो दाम हो वह मैं दे दूं"॥

कुंजबिहारी-"ज़हर के देने का भाई हुक्म नहीं है जब तक किसी डाक्टर का नुस्खा न हो, क्या करोगे इसको ?"

पर्वनलाल-(ड़ोढी पर हाथ लगा कर) भाई मेरे जिस तरह बने दिलवादो मुझे अशद ज़रूरत है" ॥

कुंजबिहारी-"अच्छा चलो डेविड साहब मनेजर से मैं दिलवा दूं, वह यकीन है कि मेरे कहने से दे देंगे, आदमी बहुत नेक है"॥

पर्वनलाल और कुंजबिहारी मि: डेविड के पास गये, दोनों ने बहुत खुशामद की बहज़ार खराबी मि: डेविड ने एक शीशी में वह ऐसिड दे दिया और रजिस्टर में पर्वनलाल के नाम उसकी फरोख़ दर्ज कर ली। पर्वनलाल उसको लेकर मीर खादिमअली के मकान पर आये, वहां दो तीन आदमी बैठे हुये थे ॥

खादिमअली-"क्यों बेटा हकीम मब्बू के पास गये थे?" ॥

पर्वनलाल-"जी हां एक शीशी में कोई अंगरेजी दवा दी है, शायद अंगरेजी जुलाब है, सोते वक्त नोश कीजियेगा, मगर यह ताक़ीद करदी है कि बाद इस्तियामाल के फिर बात चीत न कीजियेगा, और फौरन् लेट रहियेगा; खुदा चाहेगा तो बहुत जल्द फ़ायदा होगा, आप ज़रा भी न घबराइये, खुदा चाहेगा तो आपको बहुत जल्द सेहत हो जावेगी। उधर तो लाला पर्वनलाल रुख़सत हुये इधर मीर खादिमअली साहब ने वह दवा बाद ग़िज़ा सब के सामने नोश फर्माई और सो रहे ॥

—***—

आठवां बाब ।

मीर खादिमअली का इन्तकाल ।

पर्वनलाल ने मुहाफिजदफ़्तरी की लालच में यह हरकत करने को तो की लेकिन तमाम शबको ख्यालात-परेशान ने उनको चैन न लेने दिया। तरह तरह के मनसूबे करते थे और ज्यों ज्यों इस मुआमले में ग़ौर करते थे उनकी परेशानी बढ़ती जाती थी। कभी वह दुआ करता था कि खुदा या उस दवा का असर न हो,

अच्छा हूं डाक्तर बाबू का इलाज भी होता है, और कौन है जिसकी दवा करूं ?" ॥

पर्वनलाल—"डाक्तर बाबू का खुदा के वास्ते भी नाम न लीजिये मेरा तो जी उनसे फीका हो गया" !

खादिमअली—" क्यों बेटा क्या हुआ ?"

पर्वनलाल—"क्या कहूं क्या हुआ। (ठंढी सांस लेकर) कल मैं अस्पताल गया था उनको तकरीर से यह मालूम होता है कि अपने फ़ीस के न पाने से आरज़े को तूल कर रहे हैं, बंगालियों से परमेश्वर साबका न डाले, ग़ज़ब बेवफ़ा होते हैं॥

खादिमअली--"हां फिर फीस तो बेशक उनको अभी अच्छी तरह से नहीं दी गई, और बेटा दी कहां से जावे जो हाल मेरा है वह तुम से तो पोशीदा नहीं। फिर अब किसकी दवा करूं ?"

पर्वनलाल--"तो आप हकीम नब्बू साहब का इलाज क्यों नहीं करते ? आज उनका सानी दूसरा हकीम शहर में नहीं है। डाक्तरी भी किसी कद्र जानते हैं। नवाब शफ़ाउद्दौला बहादुर का मुतिब किये हुये हैं" ॥

खादिमअली—"फिर बेटा उन्हीं के पास जाओ (इतना कहतेही आंसू निकल पड़े) सिवाय तुम्हारे मेरे आगे पीछे कौन है, औलाद हो तो तुम हो, दोस्त हो तो तुम हो। इस बेकसी से खुदा मौत देवे यह कबूल है"।

पर्वनलाल—"मुंशी जी आप ऐसा न फ़र्मायें खुदा आप का साया मेरे सर पर हमेशा कायम रक्खे, अच्छा मैं अभी जाता हूं" ॥

पर्वनलाल बएवज़ इसके कि हकीम नब्बू के यहां जांय, हारिसन मेडिकल हाल तशरीफ़ ले गये, और वहां कुंजबिहारी नामक जो उनका हममकतब था उससे मुलाकात की ॥

कुंजबिहारी—'कहां चले भाई पर्वन्'

पर्वनलाल—"तुम से मुलाकात भी करनी थी और एक दवा भी लेनी थी—बएक् करिश्मा दो कार" ॥

कुंजबिहारी "कौन शै लीजियेगा चलिये दूकान देखिये" ॥

पर्वनलाल—"मुझको इस वक्त ज-

लुदी बहुत है, दूकान की सैर से तो माफ़ करो दोस्त, जरा एक शीशी में मूसिक ऐसिड दे दो, जो दाम हो वह मैं दे दूं"॥

कुंजबिहारी—"जहर के देने का भाई हुक्म नहीं है जब तक किसी डाक्टर का नुसखा न हो, क्या करोगे इसको ?"

पर्वनलाल-(ठोढी पर हाथ लगा कर) भाई मेरे जिस तरह बने दिलवादो मुझे अशद ज़रूरत है" ॥

कुंजबिहारी-"अच्छा चलो डेविड साहब मनेजर से मैं दिलवा दूं, वह यकीन है कि मेरे कहने से दे देंगे, आदमी बहुत नेक हैं" ॥

पर्वनलाल और कुंजबिहारी मि: डेविड के पास गये, दोनों ने बहुत खुशामद की बहजार खराबी मि: डेविड ने एक शीशी में वह ऐसिड दे दिया और रजिस्टर में पर्वनलाल के नाम उसकी फरोख्त दर्ज कर ली। पर्वनलाल उसको लेकर मीर खादिमअली के मकान पर आये, वहां दो तीन आदमी बैठे हुये थे ॥

खादिमअली-"क्यों बेटा हकीम नब्बू के पास गये थे?" ॥

पर्वनलाल-"जी हां एक शीशी में कोई अंगरेजी दवा दी है, शायद अंगरेजी जुलाब है, सोते वक्त नोश कीजियेगा, मगर यह ताकीद करदी है कि बाद इस्तियामाल के फिर बात चीत न कीजियेगा, और फौरन् लेट रहियेगा; खुदा चाहेगा तो बहुत जल्द फ़ायदा होगा, आप ज़रा भी न घबराइये, खुदा चाहेगा तो आपको बहुत जल्द सेहत हो जावेगी। उधर तो लाला पर्वनलाल रुखसत हुये इधर मीर खादिमअली साहब ने वह दवा बाद ग़िज़ा सब के साम्हने नोश फर्माई और सो रहे ॥

—***—

आठवां बाब।

मीर खादिमअली का इन्तकाल।

पर्वनलाल ने मुहाफिजदफ़्तरी की लालच में यह हरकत करने को तो की लेकिन तमाम शबको ख्यालात-परेशान ने उनको चैन न लेने दिया। तरह तरह के मनसूबे करते थे और ज्यों ज्यों इस मुआमले में ग़ौर करते थे उनकी परेशानी बढ़ती जाती थी। कभी वह दुआ करता था कि खुदा या उस दवा का असर न हो,

काभी अपना जवाब सोचता था कि अगर राज़ ज़ाहिर हो तो क्या करना होगा। ठीक दो बजे रात को कुंजबिहारी के पास चला, दर्वाज़े तक पहुंचकर खुदा जाने क्या समझकर लौट आया। इसी उधेड़ बुन में टहल टहल कर रात काटी अल-सुबाह मोर खादिमअली के मकान पर पहुंचा यहां सब सोये पड़े थे॥

पर्वनलाल—'चन्दू! ओ चन्दू! रमजान्! ओ रमजान्! किवाड़ खोल दे'।

चन्दू—"(अपनी चारपाई पर कसमसा और करवट बदल कर) यह कौन मुण्डीकाटा सुबह सुबह पुकारता है, मियां की अभी आंख लगी है कहीं जाग न उठें॥

पर्वनलाल—'ज़रा किवाड़ खोल दो मैं हूं—पर्वनलाल"। रमजान मुलाज़िम मुहाफ़िज़दफ़्तर ने किवाड़ खोल दिया पर्वनलाल सीधे मुहाफ़िज़दफ़्तर के कमरे में गये जहां वह सोते थे, देखा कि आखें बिलकुल फिर गई हैं जिस्म सर्द हो गया था। देखतेही पर्वनलाल घबरा उठा। पहिले उसने चाहा कि उलटे पांव लौट जावे लेकिन फिर कुछ सोचकर ठहर गया और उस शीशी में जो लेबुल लगा था नोंच डाला और बाकी की दवा फेंक दी। एक दूसरी शीशी में से कोई दवा उडेल कर भर दी, बइत्मीनान तमाम उसने अपने हिसाब अपनी हिफ़ाज़त का सब इन्तज़ाम कर लिया और चुपचाप कालीन के कोने पर बैठ गया। उस की यह कुल कारवाई रमजान् ने देख ली॥

रमजान—"मुंशी जी यह क्या करते हो, उसी शीशी में की दवा तो कल मियां ने रात को खाई थी"॥

पर्वनलाल—"नहीं भाई वह दूसरी शीशी है, इस में की दवा कहां खाई"॥

रमजान्—"नहीं साहब मैंने खुदही गिलास में उडेल कर पिलाई थी"॥

पर्वनलालने झट जेबमें से २) निकाल कर रमजान को दिये और उससे वादा किया कि इसका तज़किरा दूसरे से न हो॥

रमजान अफ़ीमी आदमी, दो रुपया पाकर बेहद खुश हुआ, उसको तज़किरे से क्या मतलब था और सच तो यह था कि वह बेचारा असल भेद को समझा भी नहीं॥

थोड़ी देर के बाद चन्द लोग आये।

एक—"आज क्या है, मुंशीजी अभी बेदार नहीं हुये" ॥

पर्वनलाल—"हमेशा तो बहुत सवेरे उठते थे, आज निमाज भी क़ज़ा हो गई"।

दूसरे—"मालूम नहीं कि रात को वह दवा जो तुम लाये थे खाई या नहीं"

पर्वनलाल—"जी कहां खाई यह तो शीशी वैसीही धरी है" ॥

तीसरे—"यह क्या ख़राब आदत इन की है एक जी लगाकर अपना इलाज नहीं करते"।

पर्वनलाल—"इसी से तो जल्दी अच्छे नहीं होते"।

एक—"तो अब जगाना चाहिये, दिन बहुत चढ़ गया, मुहाफिजदफ़्र साहब! अजी मुहाफिज दफ़्र साहब! अह अब तो उठो तुम्हारी क़िस्मत से दूसरी रात आवेगी"।

दूसरे—"बड़े बेखबर सो रहे हैं, खबर भी नहीं होती"।

तीसरे—(करीब जाकर और जिस्म में हाथ लगाकर) हाय अफ़सोस!

पर्वनलाल—"क्यों खैर तो है? लिल्लह जल्द बोलिये"।

तीसरे—"खैर कहां, यह तो चल दिये"

"इतना सुनना था कि पर्वनलाल ने ज़ोर से चीख मारकर रोना शुरू किया और सब लोग अफसोस करने लगे (घर में रोने की आवाज़ पहुंची)

बीबी—(घबराकर) अरे देख तो यह कौन रोता है?

यह कह कर हज्जिन साहबा खुद दौड़ीं और जैसेही दर्वाज़े के करीब पहुंची थी कि बाहर के शोर गुलों ने उन्हें उनके बेवा होने की खबर दी, वह फौरन् ग़श खाकर जमीन पर गिर पड़ीं, औरतों और मर्दों ने वह कुहराम मचाया कि सुनने वालों का दिल हिल जाता था। थोड़ी देर में उनकी बीबी को होश आया और फिर तो इस तरह बैन करके बाआवाज़ बुलन्द रोना शुरू किया कि तोबः तोबः। खाहमखाह बाहर निकली आती थीं कि ऐ लोगो मेरे मियां को मुझे दिखला दो, है! है! आज २५ बरस का साथ छूटाजाता है। मैं अब किसकी होकर रहूंगी! मेरी कौन खबर लेगा! मुझे किसके सुपुर्द किये जाते हो! मैं तो तुमको अकेले न जाने दूंगी!" यह बैन सुनकर हर शख्स सकते की आलम में था।

थोड़ी देर में सारे शहर के लोग जमा हो गये और सब लोग इस नागहां और ग़ैरतवक़ै मौत पर तअज्जुब और अफ़सोस करते थे ॥

एक—"भई वल्लाह क्या बाख़ुदा शख़्स दुनिया से उठ गया" !

दूसरा—"और बामुरौव्वत कितने थे कि उनका सानी दूसरा नज़र नहीं आता" ।

पर्वनलाल—"भाई मुझको तो यतीम कर गये, मैं बे बाप का हो गया, है ! है ! मैं अब किसके भरोसे पर जीऊंगा" ।

तीसरा—"इसमें कुछ शक नहीं, शाबास ! शाबास ! वल्लाह । तुमने भी वह ख़िदमत की कि ख़ास बेटा भी न करता यह सब बातें तो होही रही थीं लोग आते थे और अफ़सोस करते थे मगर उन के दफ़न् करने का कुछ भी सामान न था । उनकी बेवा के पास इतना भी न था कि कफ़न् को काफ़ी होता । ग्यारह बजे तक लाश वैसीही पड़ी रही । साढ़े ग्यारह बजे, मीर क़ुदरत् हुसैन साहब तहसीलदार तशरीफ़ लाये । दो तीन दर्ज़ी व कपड़े के थान साथ लाये, बारह बजे ग़ुस्ल वग़ैरह से फ़राग़त हुये और जुमा मसजिद में निमाज़ जनाज़ह पढ़ी गई । सदहा आदमी शरीक-निमाज थे । क़रीब दो बजे ईदगाह में दफ़न् किये गये ॥

*किसी के मुंह से न निकला यह हाय दफ़न् के वक़्त । कि इनपै ख़ाक न डालो य हैं नहाये हुये' ।

मीर ख़ादिमअली की नेकियां इसकी मुहताज नहीं कि उनकी वफ़ात् के बाद ज़ाहिर की जावें मगर इस में कुछ मुबालिग़ा नहीं कि फ़ीरोज़नगर के अम्लोंमें उनकी नज़ीर शक्ल दूसरी नहीं मिल सकती थी । उनके मरने से तमाम ख़िलक़त ने अपना एक सच्चा नेकख़्वाह फ़क़ीरों ने हामीय-मददगार, पर्वनलाल ने अपना मुरब्बी वफ़ाशआर और उनकी बदक़िस्मत बेवा ने अपना शौहर आशिक़ज़ार खोया । उनकी बेवा की वाजिबुल-रहम हालत निहायत क़ाबिल-अफ़सोस थी । उनके पास दूसरे रोज़ खाने का भी सहारा न था । हैरत का मुक़ाम है कि वह शख़्स जो अस्सी रुपये माहवार का तनख़्वाहदार हो जिसकी चार पांच रुपये रोज़ की बालाई आमदनी भी हो जिसके घर में मियां बीबी के सिवाय तीसरा

कानेवाला न हो वह इस तरह मरे कि सिवाय बेसरो समानी अफलास व परेशानी के कफ़न् के लिये भी कुछ न छोड़े ? । वह औरत जिसने इतने ज़माने तक इस ऐश व अशरत् में बसर की उसके वास्ते दूसरे दिन खाने का ठिकाना न हो । अफसोस सद अफसोस !! मौलवी कुदरत हुसैन साहब तहसीलदार एक पुरानी वज़ह के शरीफ आदमी थे, उनसे गो मीर खादिमअली से कुछ ऐसा रब्त न था लेकिन इस बेसरो सामान मौत का उनको हद से ज्यादा अफसोस था और वह बेचारे इस फिक्र में थे कि कोई इन्तजाम चन्दा वग़ैरह का करके उनकी बेवा का कुछ बन्दोबस्त कर दिया जावे। पर्वनलाल से भी इस बारे में मश्वरह किया लेकिन उस नेक औरत ने इस मदद को गवारा न किया और अपनी जायदाद फरोख्त करके फीरोजनगर से चले जाने का इरादा किया। एक दिन इत्तिफाकन् तहसीलदार साहब डाक्टर स्मार्कडी से मिलने गये उनसे भी इस हादसे का जिक्र हुआ ॥

डाक्टर—"ओ ! बड़ा अफसोस है खादिमअली बड़ा नेक आदमी था, मिः पार्कर बड़ी तारीफ करता था" ॥

तहसीलदार—"हुजूर ऐसा मन्हूस पैदा नहीं हुआ और खुदावन्द ऐसी बे सरो सामान मौत हुई कि अल्लाह दुश्मन् कोभी नसीब न करे। यह जो सुनते थे कि कौड़ी कफ़न् को न छोड़ी वही हालत आखों से देखने में आई—उनकी बीबी बहुत परेशान हैं, खुदा रहम करे।"

डाक्टर—"वह बीमेवाला रुपया अभी वसूल नहीं हुआ ?"

तहसीलदार—"बीमा कैसा खुदावन्द ?"

डाक्टर—"ज़िन्दगी का बीमा, हम को खूब याद है कि खादिमअली ने हम से अपने सेहत का जांच कराया था और दस हज़ार रुपये पर बम्बई की किसी कम्पनी ने ज़िन्दगी का बीमा किया था। आप कागज़ ढूंढ़ कर देखें कम्पनी फौरन् रुपया दे देगा"।

तहसीलदार—"खुदावन्द ऐसा तो कभी सुनाई नहीं दिया"।

डाक्टर—"ओ ! आप लोग नहीं जानता, साहब लोग बराबर ज़िन्दगी का बीमा कराता है उसका बहुत फ़ायदा होता है"।

तहसीलदार—"यह तो हुजूर बहुत उम्दा बात है, मैं खुदावन्द अपनी ज़िन्दगी का चार लाख पर बीमा करूंगा हुजूर कर देवें। इस में खुदावन्द कम्पनी को क्या फायदा है? हमारे मरने से जो इस कदर रुपया देती है?"

डाकृर—"श्रो आप नहीं समझता उस का बड़ा फायदा है। बाबा तुमको माहवार देना पड़ता है पर बहुत हो जाता है और कम्पनी घाटा बहुत कम देती है"।

तहसीलदार—"फिर हुजूर हमारी भी ज़िन्दगी का बीमा करा दीजिये। मैं अभी जाकर कागज़ तलाश करूंगा, अगर यह रुपया मिलेगा, तो उनकी बेवा की पर्वरिश हो जायगी और हुजूर का नाम होगा"।

डाकृर—"श्रो! हमारा नाम किस वास्ते होगा। अच्छा रुखसत"—तहसीलदार साहब ने आकर पर्वनलाल से कुल किस्सा बयान किया और कागज़ तलाश करने की ताकीद की॥

मि: पार्कर ने खादिमअली की वफ़ात् सुनकर बहुत रंज किया और एक दिन कचहरी बन्द रहने का हुक्म दिया। यह पहिला मर्तबा है कि एक अमले के मरने पर ज़िले की कचहरी बन्द हुई है॥

फ़ीरोज़ नामी अखबार ने जो शहर का मशहूर अखबार था मीर खादिमअली की वफ़ात् पर मोर्निङ्ग कालमों में यह नोटिस शाय: की॥

"हम निहायत अफ़सोस के साथ अपने ज़िले के मशहूर नेक और फकीरमिज़ाज़ मुहाफिजदफ़र कलेक्टरी मीर खादिमअली साहब मरहूम की वफ़ात् शाया करते हैं। यह इस ज़िले में पचीस बरस कामिल मुहाफ़िजदफ़र रहे। उनकी नेकी, हर शख्स से सच्ची हमदर्दी, शीरीजबानी ऐसी न थी कि कोई शख्स इनको बरसों भुला सके। उस फकीरमिज़ाज़ शख्स ने एक कौड़ी कफन् को न छोड़ी जो कुछ कमाया या खुदा को दे दिया या खुदा के बन्दों को"—

मौलवी कुदरत हुसैन साहब तहसीलदार ने तजवीज व तकफ़ीन के मुताबिक हमदर्दी फर्मायी यह बहुत कुछ काबिल तारीफ़ है, मि: पार्कर ने भी इस तरह उस नेक मरनेवाले की मौत की कुछ कम इज्जत नहीं की—एक रोज़ कचहरी बन्द रहने का हुक्म दिया—हम मीर खादिमअली मरहूम के हक़ में दुआये—

[illegible] हैं और उनकी बेवा व [illegible] बर्बाद [illegible] को कब्र की हिदायत करते हैं। उनके मरने के बाद अब एक सवाल यह पैदा होता है कि उनका जानशीन कौन होगा। सब से ज्यादा हक़ मुहाफ़िज़दफ़्री के लिये लाला छोटनलाल साहब मुहाफ़िज़दफ़्र फ़ौजदारी का है लेकिन वह कलक्टरी के काम से वाक़िफ़ नहीं इसलिये हम अपने होनहार दोस्त मुन्शी पर्वनलाल साहब को इस उहदे की पेशगी मुबारकबादी देते हैं और हमको यकीन है कि मि: पार्कर हमारी इस उम्मेद को मायूसी से तबदील न होने देंगे"।

पांच सात रोज़ कामिल मि: पार्कर ने इन्तिज़ाम मुहाफ़िज़दफ़्री की निस्बत ग़ौर किया। सिरिश्तेदार साहब कलेक्टरी व नीज़ सरदफ़्र पर्वनलाल के तरफ़दार थे। मि: पार्कर को भी मीर खादिमअली मरहूम की वसीयत का ख्याल था इस वजह से गो औरों को बड़ी हकतलफ़ी हुई मगर लाला पर्वनलाल मुहाफ़िज़दफ़्र कलेक्टरी मुक़र्रर किये गये; दोस्तों ने मिठाई का तक़ाज़ा शुरू किया। लाला पर्वनलाल ने यह उज्र किया कि भला इस मुहाफ़िज़दफ़्री की कौन खुशी। जब मुंशीजी ही दुनिया से [illegible] नौकरी का कौन लुत्फ़। इस [illegible] से जलसे और मिठाई का नाम न लो। मुझको निहायत रंज होता है। [illegible] देखने में ऐसा वाजिब था कि कोई [illegible] फिर दो-बारा इसरार न कर सकता था॥

—***—

दसवां बाब।

मि: पार्कर की रुखसती।

हमारे दोस्त मीर दियानतहुसैन को नायब तहसीलदारी को पूरा साल भी न गुज़रा था और हमारे हबीब बाइक़बाल लाला पर्वनलाल की मुहाफ़िज़दफ़्री को सात आठ महीने भी न हुये थे कि मि: पार्कर जो उन दोनों के मुरब्बी थे, ब वजह अलालत अपनी मेमसाहबा के ज़िला छोड़ने पर मजबूर हुये और दो साल की रुख़सत की दरखास्त की। गवर्मेंट ने मंज़ूर कर ली और उनकी जगह मि: पिटर्सन ज़िला जहानाबाद से क़ायम मुक़ाम डिप्टी कमिश्नर होकर तशरीफ़ लाये॥

मि: पार्कर उस ज़िले में बहुत दिन रहे थे इस वजह से उनके जाने का एक आम अफ़सोस था। चुनांचे इसकी अञ्जुमन रफ़ाहे-आम फ़ीरोज़नगर

में उनका रुखसती जल्सा किया और उसमें ज़िले के तमाम हुक्काम, रऊसा, वकला और हर फिरके के लोग शरीक थे। मिः पार्कर के बंगले से लेकर अंजुमन् तक जा बजा मकानात पर 'खुदा हाफ़िज़' का लफ्ज़ लिखा हुआ था। आतशबाजियां इस इहतिमाम से बनवाई गई थीं कि उनमें से 'गुड बाई' के हर्फ दिखलाई देते थे। तमाम स्टेशन की यूरोपियन लेडीज़ व हुक्काम तशरीफ लाये थे। सब से पहिले राजा मुनीवरअली खां बहादुर तालुकेदार अमीरपूर ने ब जबान उर्दू यह ऐड्रेस पढ़ा जो एक पुरतकाशुफ़ किश्ती में अंग्रेजी और उर्दू में लखनऊ के मशहूर मतबे वर्मा व बिरादरान् में सुनहले व नीले हर्फों में सफ़ेद अतलस पर छपा हुआ था रखकर मिः पार्कर की खिदमत में पेश किया गया॥

"ऐड्रेस"

मिः पार्कर साहेब बहादुर—

आज हम लोग रऊसाय जिले फीरोजनगर आप से खुदा-हाफ़िज कहने को जमा हुये हैं। आप अठारह बरस के बाद हम से जुदा होते हैं और यह जुदाई ऐसी बेमौका और दफतन् है कि उसका अफ़सोस मुमकिन नहीं कि हम अलफाज़ में ज़ाहिर कर सकें इस वक्त कानून लगान का मामला पेश है, उसमें आप ऐसे तजरुबेकार की मौजूदगी रियाया और ज़िमींदार दोनों के हक़ में बहुत कुछ मुफीद होती॥

आप हमारे ज़िले में पहिले असिस्टंट कमिश्नर होकर तशरीफलाये और खुदा का शुक्र है कि अब आप डिप्टी कमिश्नर दर्जा अौवल हैं, आपके साम्हने जो लोग जवान थे बुड्ढे हो गये आपने जिनको बच्चा देखा था वे अब अच्छे खासे जवान हैं। आप हम लोगों के तमाम खानदानी रस्म से आगाह हैं। इस सबब से हमेशा हमारी रियायत आप मलहूज रखते थे। कोई शुबहा नहीं कि बुड्ढे आपको अपना दोस्त और जवान आपको अपना मुश्फ़िक नासह और लड़के आपको अपना मुहब्बती बाप समझते थे। हम किसी तरह इस वक्त उस एहसान का तज़किरा किये बग़ैर नहीं रह सकते जो आपने इस जिले के मशहूर रईस राजा लियाक़त हुसैन खां बहादुर की औलाद के साथ किया। इससे बखूबी जाहिर होता है कि आप हम लोगों के सच्चे खैरख्वाह और हमदर्द हैं। हम लोग खुश हैं कि मिः पिटर्सन सा लायक़ और नेक हाकिम हमारे जिले

में आपका जानशीन होगा। हम निहायत दिली खुशी से उनको वेलकम कहते हैं। आखिर में हम लोग फिर आपके जाने का अफसोस ज़ाहिर करते हैं और आप से रुखसत होते हैं॥

वक्तन रफ़तम्न मुबारकबाद। बसलामत रवी व बाज़ आई।

इसके जवाब में मि: पार्कर ने यों कहा—

"राजा मुनीअरअली खां बहादुर व रऊसाय व हुक्काम—

जिस दिलकश व अफ़सोस के लहजे से आपने रऊसाय फीरोजनगर की तरफ़ से मेरे रुखसती के अलफाज कहे हैं मैं उसको हमेशा याद रखूंगा। मैं बहुत खुश हूं कि आप लोग मेरे अठारह बरस कयाम के जाने पर भी मेरी जुदाई पर अफ़सोस करते हैं। मैं फीरोजनगर को कभी हिन्दोस्तान नहीं समझता था बल्कि अपना प्यारा वतन् और घर जानता था (चियर्स)। आपने अपनी तकरीर में उस वाजिबुल ताज़ीम होनहार रईसजादे का जो मेरी बाईं तरफ कुर्सी पर बैठा है कुछ जिक्र किया। मैं आपको यकीन दिलाता हूं कि वह नौजवान बहुतही लायक और काबिल इख़्तियार रईसजादा है। मैंने इसके पूरे हालात मि: पिटर्सन से और नीज़ गवर्मेण्ट से जाहिर कर दिये हैं, और आप लोग उसको बहुत जल्द एकस्ट्रा असिष्टण्ट कमिश्नर देखेंगे। मुझको यकीन है कि मेरे इस एतबार को मीर दिलावर हुसैन रायगां न करेंगे (लाउड चियर्स) जेण्टलमेन, मेम साहब की बीमारी ने मुझे इतना जल्द वतन् जाने को मजबूर किया वर्ना मेरा खुद इस साल फीरोजनगर छोड़ने का इरादा न था और खास कर ऐसे वक्त में अब कि बिल क़ानून लगान ज़ेर बहस है। मेरी राय इस मुआमले में शायद आप लोगों के किसी कद्र खिलाफ़ है और जिसका मैं इस मौके पर इज़हार जरूरी समझता हूं॥

आपको मालूम है कि रैयत जड़ है और ज़िमींदार दरख़्त। जब तक आपकी रिआया खुशहाल न होगी किसी तरह आप लोग खुशहाल नहीं हो सकते। इस मुल्क में जो सख़्तियां रिआया से की जाती हैं यह आप लोगों से किसी तरह छिपी नहीं। किसी काश्तकार को हरगिज़ यह भरोसा नहीं है कि एक साल के बाद दूसरे साल भी वह अपनी ज़मीन अपने कब्ज़े में रख सकेगा और यही सबब है कि वह तरक्की हैसियत आराजी की तरफ़

भी फ़िक्र नहीं करता और जिस तरह एक मुसाफिर सराय में आकर ठहरता है और उसके गिरने पड़ने की ज़रा भी पर्वाह नहीं करता ऐसाही वह ग़रीब काश्तकार एक साल अपनी शिकमपर्वरी के लिये खेत लेता है मगर उसके बनाने या दुरुस्त करने की कोई फ़िक्र नहीं करता॥

कौंसल में जो मसौदा पेश है उस में किसी क़दर तर्मीम की ज़रूरत है और मैं उम्मेद करता हूं कि राजा मुनौअर अली खां बहादुर अन्क़रीब कौंसिल में ऐडिशनल मेम्बर होकर जायंगे। उस वक़्त पूरी इसलाह मसौदे की हो जायगी। काश्तकार व जमींदार दोनों के मुफ़ीद-मतलब क़ानून बन जायगा ताकि आप लोग और वह लोग सब खुश व खुर्रम रहें और क़ैसर हिन्द की सलतनत रोज बरोज मज़बूत हो॥

अब मैं आप लोगों से रुखसत होता हूं और दुआ करता हूं कि खुदा करे आप लोग खुश व खुर्रम व बाइक़बाल रहें (लाउड चियर्स)॥

इसके बाद गो प्रोग्राम में तजवीज़ न थी लेकिन मीर दियानत हुसैन के क़ुदरती जोश ने मजबूर किया और उठ खड़े हुये—

मीर दियानतहुसैन--मीर मजलिस साहब! मैं कमाल अदब के साथ कुछ बोलने की इजाज़त चाहता हूं—गो वक़्त तंग है लेकिन मेरा बेइख़्यार दिल मुझे खामोश नहीं रहने देता और इसलिये मैं आपसे इजाज़त चाहता हूं (मुतवातिर चियर्स)।

राजा मुनौअरअली खां—'बड़ी मसर्रत के साथ'—

मीर दियानतहुसैन-- "राजा साहब, मि: पार्कर, लेडीज़ और जेंटलमेन!—क़ब्ल इसके कि मैं कोई तक़रीर शुरू करूं मैं इसका इज़्हार ज़रूरी समझता हूं कि मेरी तमाम ज़िन्दगी में यह पहिला मौक़ा है कि ऐसे आम मजमे में मुझे ज़बान खोलने की जुर्रत हुई है इसलिये मैं अपनी तक़रीर की कमज़ोरी की पहिलेही से मुआफ़ी मांगता हूं"।

"जेंटलमेन! मैं अपनी तरफ़ से अपने तमाम खान्दान की तरफ़ से, नहीं नहीं अपने तमाम शहर की तरफ़ से मि: पार्कर की जुदाई का अफ़सोस ज़ाहिर करता हूं। मि: पार्कर! आप रजस्ता में, गुर्बा में,

उमरा में, हरगरोह में, हरदिल अजीजही न थे बल्कि बहुत प्यार व मुहब्बत से याद किये जाते थे। अठारह बरस कयाम के बाद जो शख्स हरदिल अजीज रहे वाकई वह बहुत कुछ मुबारकबाद देने के काबिल है। आप एक लायक मुनसिफ नेकदिल व खलीक कलेक्टर थे। यही अलफाज हैं जो मैं समझता हूं कि इस मौके पर मुझे अर्ज करने लिये काफी हैं और अगर गुस्ताखी मुआफ हो तो आप के लिये सुनने को भी बहुत हैं इससे ज्यादा और कोई लुफज हो नहीं सकते जो किसी ईमान्दार शख्स के मुंह से एक अच्छे शख्स की निस्बत निकल सकें (लाउड चियर्स)॥

मि: पार्कर और नीज मेरे ज़िले के फख हैं। राजा मुनौअरअली खां बहादुर ने कुछ तज़किरा मुझ नाचीज़ का फर्माया। मेरा हाल बजिन्स एक एशियाई शायर के माकुले के माफ़िक़ है—

"जिसका चारा नहीं दुनिया में वह लाचार हूं मैं। जिसका मतलब न बर-आये वह तलबगार हूं मैं॥ जिससे सेहत को है परहेज वह बीमार हूं मैं। जिससे मायूस है रिहाई वह गिरफ़ार हूं मैं"॥

मेरी हालत मेरे मुअज्जिज़ वालिद के मरने के साथही निहायत खराब हो गई थी। मेरी यह उमङ्ग कि मैं आनर्स की डिग्री हासिल करूं, विलायत में जाकर सिविल सर्विस का इम्तिहान दूं दिलकी दिल में रह गई और मुझे लाचार नौकरी करनी पड़ी। मैंने अच्छा या बुरा, काबिल मलामत या काबिल तारीफ़, (सुनो सुनो) काबिल शर्म या काबिल फ़ख़र जिस तरह सर्कारी खिदमात अंजाम दीं उसकी दाद मि: पार्कर मैं आप से नहीं मांगता मैं खिलकृत से मांगता हूं अपने मुल्क के आदमियों से मांगता हूं और उनसे मांगता हूं जिनको मुझ से साबका पड़ा है (लाउड चियर्स) मेरे दोस्त शेख मौलाबख्श और उनके साथी बकाला गो मेरी उस बहशाना हरकत से जाहिर में नाराज़ हुये लेकिन खुदा का शुक्र है कि उनका ईमान, उनका कान्शेंस (सुनो सुनो) उनका दिल मुझसे नाराज़ नहीं है॥

(लाउड चियर्स)

मि: पार्कर आप मेरी तरफ से दिली शुकरिया कबूल फर्मावें और मैं राजा मुनौअरअली खां बहादुर के इस जुमलह को उनसे थोड़ी देर के वास्ते कर्ज लेता हूं कि "व सलामत रवी व बाज़ आई"॥

इस तक़रीर की नफ़ासत व फ़साहत और बांकपन को कुछ वेही लोग जान सकते थे जो उस जल्से में हाज़िर थे। मुख़्तसर यह है कि मि: पार्कर और तमाम हुक्काम के दिल में मीर दियानतहुसैन की वक़्त पहिले से दस हिस्सा ज़्यादा हो गई। ग्यारहवीं अप्रेल को मि: पार्कर फ़ीरोज़नगर से रवाना हुये। स्टेशन पर बड़ी धूम धाम से रस्म रुख़सत अदा की गई। मि: पार्कर ने क्यारक्टर बुक में तमाम मुलाज़िमान सरकारी की निस्बत अपना अठारह बरस का तजरबा तहरीर फ़र्माया। लाला पर्वनलाल और मीर दियानतहुसैन की निस्बत जो लिखा उसको हम हस्ब ज़ैल नक़ल करते हैं॥

'मुन्शी पर्वनलाल मेरा मातहत है— मैंने दो तीन साल कामिल तजरबा के बाद उसको मुहाफ़िज़दफ़्तर कलेक्टरी मुक़र्रर किया वह ज़हीन है मेहनती है और आला दर्जा का महासब है, मेरी राय में सिरिश्तेदारी कलेक्टरी के लिये इससे ज़्यादह कोई दूसरा शख़्स इस ज़िले में मौजूद नहीं है। मैं सिफ़ारिश करता हूं कि जगह ख़ाली होने पर मेरे क़ायम मुक़ाम इसका लिहाज़ फ़र्मावेंगे'।

मीर दियानतहुसैन की निस्बत यह लिखा।

मीर दियानतहुसैन B. A. मुसलमान रईसान फ़ीरोज़नगर के मुमताज़ ख़ान-दान का एक मेम्बर है। उसका बाप राजा सैयद लियाक़त हुसैन ख़ां मेरा बड़ा दोस्त था और गवर्मेण्ट का बड़ा ख़ैरख़्वाह था। क़र्ज़दारी के सबब उसका कुल इलाक़ा नीलाम हो गया और थोड़ा अर्सा हुआ उनने इन्तक़ाल किया। दियानत-हुसैन एक होनहार नौजवान अफ़सर है। आला दर्जे का ज़हीन् और लायक़ है। उसकी ईमान्दारी मिस्ल एक यूरोपियन अफ़सर के है और मुझको उससे पूरा एतबार है। मि: पिटर्सन उसके हालात मुझ से सुन चुके हैं, मुझे उम्मेद है कि बहुत जल्द उसको एक्स्ट्रा असिस्टण्ट कमिश्नरी दी जावेगी। मैं जब विलायत में इस हाल को सुनूंगा बहुतही ख़ुश होऊंगा"।

मि: पार्कर की जुदाई का एक आम अफ़सोस करता था, उनका इख़्लाक़, हिन्दुस्तानी रईसाय के यहां आना जाना हर शख़्स से बइन्सानियत पेश आना और हिन्दोस्तानियों की इज़्ज़तअफ़ज़ाई फ़र्माना सब को निहायत पसन्द था।

अखबार कोरोज ने जो उस शहर का एक नामी रोजाना अखबार था और जिसके एडिटर लाला कुन्दनलाल साहब बी. ए. थे मि: पार्कर के जाने पर यों लिखा।

"हमारे जाने-बूझे डिप्टी कमिश्नर अठारह बरस के बाद मेम साहबा की बीमारी की वजह से जुदा हुये। मि: पार्कर, कोई शक नहीं बहुत हरदिल अजीज थे, उनका इखलाक आम था और ज़िले की बेहतरी की तरफ वे पूरी तवज्जुह फ़र्माते थे। हिन्दू और मुसलमानों की हर तकरीब और त्योहार में वे शरीक होते थे, अगर राय किशोरीमल के दसहरे में वह शरीक हुये और उनके घर तशरीफ ले गये तो राजा मुनौअरअली खां बहादुर की मजलिस मुहर्रम और शेख रहीम बख्श साहब के मौलूद शरीफ में भी शरीक हुये। सब हिन्दुस्तानियों से वे बाइज्जत पेश आते थे, ड्राइङ्ग रूम में मुलाकात करते थे, अंगरेजी जूता पहने सब को अपने कमरे में आने देते थे, सब से हाथ मिलाते और निहायत मुहब्बत से पेश आते थे, वजह और लिबास के झगड़ों से हमेशा इलाहदा रहते थे। मि: पार्कर ने अपने अठारह बरस के कयाम में, हमको याद नहीं, कि कभी किसी को सिवाय "आपको" "तुम" कहा हो। यही बातें हैं जिनके लिये हम मि: पार्कर को याद करते हैं। रजसाय की तरफ से मि: पार्कर की रुखसती दावत अंजुमन में की गई। उसमें मि: पार्कर ने हमारे होनहार दोस्त राजा दियानतहुसैन की निस्बत जो पेशीनगोई की वह बहुत काबिल इत्मीनान है। मि: दियानतहुसैन ने जिस फसाहत व बलाग़त से अवामी तकरीर की वह इस बात को अच्छी तरह साबित करती है कि वह मि: होवर्न के शागिर्द रशीद हैं, और हमको यकीन है कि मि: होवर्न भी उसको सुनकर निहायत खुश हुये होंगे॥

हम खुश हैं कि हमारे जिले में एक लायक़ शख्स गवर्मेंट ने मि: पार्कर की जगह भेजा। हम उनको खैर मुकद्दम कहते हैं और इस मौके पर हम उन से सिर्फ इस क़दर कहना चाहते हैं कि अगर वह मि: पार्कर की तरह अपने को हरदिलअजीज बनाना चाहते हैं तो उसी तरह अपने को खलीक़ और नेक साबित करें। हम महज अवामी :अमा खर्च से खुश नहीं होते बल्कि वाकई इखलाक़ से खुश होते हैं। इससे नाज़रीन बखूबी जान

सकती है कि मि: पावर दरअसल किस इल्ल़त के मुस्तहक थे ॥

—***—

ग्यारहवां बाब।

मीर खादिमअली मरहूम की बेवा।

मौलवी क़ुदरत हुसैन साहब तहसीलदार ने बावजूदे कि लाला पर्वनलाल को बहुत कुछ ताकीद करदी थी कि मीर खादिमअली के कागज़ात में बीमे की दस्तावेज़ तलाश करें लेकिन पर्वनलाल ने इस पर कुछ तवज्जह न की और एक हफ़्ता भी मीर खादिमअली की वफ़ात् को न गुज़रा था कि उनकी बेवा से बेएतनाइयां शुरू कर दीं। वह बेचारी आदमी पर आदमी भेजती कि ज़रा पर्वनलाल को बुला लाओ लेकिन ये उधर रुख़ भी न करते। लाला पर्वनलाल ने एक मौके पर यह भी बयान किया कि मीर खादिमअली की कोई बीबी नहीं है बाज़ारी औरत की ताज़ीम कुछ हम पर फ़र्ज़ नहीं। अगर असली बीबी होती तो हम ज़रूर पर्वरिश करते मगर एक हर्जाई औरत की पर्वरिश हम से नहीं हो सकती। इस फ़िकरे को भी किसी ने मीर खादिमअली *की बेवा के कानों तक पहुंचा दिया था जिसको सुनकर वह बेचारी और भी बिलख बिलख कर रोने लगी। उधर कर्ज़ख्वाहों ने तकाज़े शुरू किये मकानवाले ने मकान से निकालने की धमकी दी बनिये ने जिंस बंद करदी मामाओं ने नौकरी छोड़ दी अलकिस्सा कोई मुसीबत ऐसी न थी जो उस बेचारी ने बर्दाश्त न की हो। जो कुछ बाहर का असबाब था वह पर्वनलाल उठा ले गये अन्दर का असबाब फरोख़्त होकर रसूम दसवां व चालीसी की तकरीबें अदा हुईं अब बेचारी के पास चन्द तांबे के बरतन और एक शाली चादर के सिवाय और कुछ न रह गया था, वह बिलकुल इस शेर के म्वाफ़िक थी कि—

"तंगदस्ती के सबब जान से बेज़ार हैं हम,
खींच दे दार पे ऐ चर्ख कि नादार हैं हम"

यह शाली चादर ख़ास कश्मीर की एक सौ पचहत्तर रुपये की ख़रीद थी, और बिलकुल नई थी। हज्जिन साहबा* ने एक रोज़ बहुतही तकलीफ़ में उस चादर के फरोख़्त का कस्द किया, लाला

*मीर खादिमअली की बेवा का आइंदे से इस किताब में हज्जिन साहबा के लफ्ज़ से तज़किरा किया जावेगा ॥

पर्वनलाल को बुलवाया; जब वह न आये तो एक सैय्यदानी को जो उसके परोस में रहा करती थीं बुला भेजा ।

हज्जिन--"कहो बहिन सैय्यदानी क्या हाल है, खुदा तुम्हें नेकी दे एक काम हमारा नहीं कर देतीं—हम बेकस और मुहताज हैं हमारा काम कर दो सवाब होगा" ॥

सैय्यदानी--बीबी तुम्हें देख देख कर जी ऐसा दुखता है कि आठ आठ आंसू रोती हूं । है ! है ! अभी चार दिन का ज़िक्र है कि मुंशीजी ज़िन्दा थे और तुम नवाबी करती थीं आज उनके मरते ही सब कार्खाना दरहम् बरहम् हो गया । वह मूंड़ीकाटा पर्वनलाल भी नहीं दिखाई देता, क्या ज़माना है ! मुंशी जी ने पाला पर्वरिश किया, बेटे से बढ़कर जाना और अब वह झूठी मूठी बात भी नहीं पूछता, आखिर कम-अस्ल है ! ना, सच है असल से खता नहीं, कमअसल से वफ़ा नहीं । मेरा बेटा जहांगीर अगर होता तो तुम्हारा सब काम कर दिया करता लेकिन वह अफ़ीमवाले साहब के यहां नौकर है और किसी काम को गाज़ीपूर गया है । अच्छा बीबी जो कुछ कहो मैं करने को सरोचश्मों से मौजूद हूं"।

हज्जिन--और काम क्या है एक यह निगोड़ी चादर है इसको कहीं से बेच लातीं तो यहां के कर्ज़ से छुट्टी मिलती, खुदा मुझे मौत नहीं देता जो इन मुसीबतों को झेलने को बैठी हूं खुद चले गये (इतना कहकर रोने लगी) और मुझे ये आफ़तें झेलने को छोड़ गये ! ॥

सैय्यदानी—ना बीबी । रोती क्यों हो, हमको देखो, मुसीबत सब पर पड़ती है । जहांगीर के अब्बा दगलावाली पलटन में कुमेदान थे, जहांगीर पेटही में था कि वे उठ गये न कोई वाली था न पुर्सा, आखिर बीस बरस गुज़रही गये न, ऐसी उसकी करीमी है कि बेरिज़क नहीं रखता—अब अल्लाह रखे जहांगीर भी नोकर चाकर है ॥

हज्जिन--(रोकर) खुदा उम्रदराज करे तुम्हारे तो एक बेटा मौजूद है मुझ नसीबोंजली के तो आगे औ पीछे कोई भी नहीं ।

क़िस्सा मुख़्तसर बी सैय्यदानी एक मैला काले रंग के चारखाने का चूड़ीदार पायजामा पहिने और मलो की चादर जिस में तीन चार पैवन्द लगे थे ओढ़े एक मैले रूमाल से चादर बांधे उसको

फरोख्त को निकलीं। रास्ते में जो मिलता "क्यों मियां कोई चादर तो न लोगे ?" यह उनका सवाल था, यह बिचारी घर घर घूमती फिरती थी और कोई देखने वाला तक पैदा न होता था। मुहल्ला हैदरगंज में मिर्ज़ा फ़तहबेग नामी एक वकील रहा करते थे, आमदनी तो उनकी कुछ भी न थी लेकिन रहते बड़े ठाट से थे। बी सैय्यदानी वह चादर वहां भी ले गईं। बहुत तूल तवील के बाद ग्यारह रुपये पर वह चादर फरोख्त हुई और दूसरे दिन अदाय क़ीमत का वादा वकील साहब ने किया, सच है "सब घटा देते हैं मुफलिस के ग़रज़ माल के दाम"। अब सुनिये बी सैय्यदानी रोज़ सुबह उठ कर जुतियां चटकाती मिर्ज़ा साहब के यहां चादर के दाम मांगने जातीं थीं और वह "आज नहीं कल आना" के सिवाय दूसरी बात नहीं करते थे। एक दिन सैय्यदानी बिगड़ बैठीं--

सैय्यदानी--"ए मियां तुम कैसे भलेमानस हो तुमको न मेरा ख्याल न उस मुसीबतज़दी का ख्याल अपने बच्चों के सदके दुशाला वापस करो या दाम दे दो, वह बेचारी बड़ी मुसीबत में गिरफ़्तार है"।

वकील--"ज़रा ज़बान सम्हालकर गुफ़्तगू कर नहीं तो झोंटा पकड़कर निकाल दूंगा ?"

सैय्यदानी--"ख़ुदा तेरे मुंह को फूंके, तू और मुझे झोंटा पकड़ने को कहे, एक तो मेरा माल का माल लिया दूसरे ख़ुदा ग़ारत करे मुझे लासखुन कहता है ?"

वकील साहब को इस पर गुस्सा आया और उन्होंने ख़ूब अच्छी तरह बी सैय्यदानी को पिटवाया। सैय्यदानी ने बड़ाही शोर व गुल मचाया और मल्का विक्टोरिया और सर्कार की दोहाई देनी शुरू की। वकील साहब घबराये कि कहीं बुड्ढी नालिश न करदे, उन्होंने दीनदयाल हेड कानिस्टेबुल को जो उनके बड़े दोस्त थे बुला भेजा। दीनदयाल फ़ौरन् चले आये वकील साहब ने कुल क़िस्सा बयान किया। दीनदयाल ने यह सलाह दी कि पहिलेही से इस पर कोई इल्ज़ाम लगा देना चाहिये जिससे यह कोई नालिश करे तो झूठी समझी जाय। थोड़ी देर में दीनदयाल की निगाह सैय्यदानी के हाथ पर पड़ी, वह एक अंगूठी पहने हुई थी फ़ौरन् उसी की चोरी का मुक़द्दमा क़ायम करके तहक़ीक़ात शुरू करदी। वकील

साहब के खिदमतगार को मुद्दई क़रार दिया व साईस और चन्द अशख़ास स-किनान मुहल्ला को गवाह कर दिया। सब लोगों के इज़हार तहरीर करना शुरू कर दिये॥

ईदू—(मुलाज़िम वकील साहब) मेरी एक चांदी की अंगूठी जो इस औरत के हाथ में है बावर्चीख़ाने से यह औरत लेकर भागी, मैंने इसको गिरफ़ार किया, मैं इसको पहिले से नहीं जानता। कोई आदी चोर मालूम होती है, अंगूठी की मालियत तख़मीनन् चार आना है॥

जुम्मन—(साईस वकील साहब) व **मदार दर्ज़ी**—हम लोगों ने अपनी आंखों से देखा कि बावर्चीख़ाने में यह बुड्ढी गई और अंगूठी चूल्हे के पास से उठाकर भागी, हम पहिचानते हैं कि यह अंगूठी जो बुड्ढी के हाथ में है मुद्दई की है। यह अंगूठी बहुत दिन से ईदू के पास थी"।

रामरतन सोनार—"यह अंगूठी जो बुड्ढी के हाथ में है मेरी बनाई हुई है ईदू ने मुझ से बनवाई थी और नग अपने पास से दिया था। क़रीब साल भर का अर्सा हुआ जब मैंने यह अंगूठी बनाई थी।

यह लीजिये आनन् फ़ानन् मुक़द्दमा तैयार हो गया, गवाह भी सिलसिलेवार दुरुस्त हो गये, और हेड कांस्टेबिल साहेब सब को थाने पर ले गये। बेचारी बुड्ढी हरचन्द चिल्लाती थी कि 'ऐ ख़ुदा के बन्दो यह क्या क़हर है मैं मुसीबत-ज़दी ख़ुदा की रांदी किस ग़ज़ब में गिरफ़ार हुई—यह अंगरेज़ीअमलदारी है या अंधेर है यह मलका विक्टोरिया का राज है या नेपाल का! यह मिर्ज़ा मुंडीकाटा मुझे फांसी देता है। ये तिलङ्गे हरा-मज़ादे मुझे बेआबरू किये डालते हैं, ऐ ख़ुदा ऐ मेरे! रब करीम! इस ख़ुदाई फौजदारी की कोई ख़बर लेने वाला नहीं है—ऐ इज़्ज़त बीबो तुम्हीं अपने लौंडों की आबरू बचाओ"। वह ग़रीब तो दुआले का क़िस्सा रोती थी और पुलिस के हज़-रात चोरी का इक़बाल तहरीर कर रहे थे। सैय्यदानी का बयान पुलिसवालों ने यों तहरीर किया कि—'मैं क़ौम की रंगरेजिन हूं शाहजहांपूर में मेरा घर है भीख मांगती इस शहर में आ निकली, आज तीसरा फ़ाक़ा है कि दाना नसीब न हुआ। जब पेट ने नहीं माना तो मैंने इदू की यह अंगूठी ज़रूर उठा ली, मुझ से क़ुसूर हुआ सर्कार मालिक हैं॥

अलक़िस्सा हस्ब ज़ाबितः चालान मुरत्तब होकर तहसीलदार साहब के इजलास में भेजी गई, और मुक़द्दमा इजलास पर पेश हुआ। जब तक सबूत के गवाह गुज़रते रहे बुड्ढी बेचारी ठंढी सांसें लेकर आसमान की तरफ़ देखती और सकते के आलम में चुप खड़ी थी। उस ग़रीब को यह नहीं मालूम कि पुलिस क्या चीज़ है और मजिस्ट्रेटी क्या शै है। यह नहीं जानती थी कि पुलिस और अदालतमें क्या फ़र्क़ है, वह सब को एकही समझती थी और इन नैरंगियों को देख देखकर शशदर थी, जब अदालत ने उसको फ़र्द जुर्म सुनाया तो उसने यह जवाब दिया कि मैंने किया तो किया और नहीं किया तो किया, बारबार क्या पूछते हो? क़ैद करना है क़ैद करदो, फांसी देना है फांसी दे दो, ख़ुदा की ख़ुदाई में यही अंधेर है तो हमको भी अब सब्र है।

तहसीलदार—"साफ़ साफ़ इक़बाल करो"।

जवाब—"इक़बाल हुज़ूर का, हमारा क्या इक़बाल है"।

तहसीलदार—"अरे तू बड़ी हरामज़ादी मालूम होती है जवाब साफ़ नहीं देती"।

बुड्ढी—"ख़ुदा तुझे ग़ारत करे, कम्बख़्त तेरे मुंह में कीड़े पड़ें मुझ सैय्यदानी को गाली देता है। मुझको और तू हरामज़ादी कहे"।

बस लीजिये तहसीलदार साहब भी बिगड़ गये और उसी ग़ुस्से में पूरी एक महीने क़ैद की सज़ा ठोंक दी। बेचारी सैय्यदानी खिंचती खिंचती कांष्टेबों के ग़ोल में जेलखाने भेजी गई"।

यहां बी हज्जन बार बार कहती थीं कि आज सुबह की गई हुई अभी सैय्यदानी नहीं लौटी। बिचारी वह इन्तज़ार में थी कि रुपये आवें तो कुछ काम चले, मकानवाले को कुछ ढाढ़स हो; यह नहीं जानती थी कि आजकल अदबार उन पर सवार था जो कोई उनके पास होकर निकलता वह भी मुसीबत में फंस जाता। बिचारी सैय्यदानी नाकर्दः गुनाह जेलखाने सिधारी और दुशाला बे कौड़ी पैसे के वकील साहेब को पच गया"।

हज्जन साहिबा की मुसीबत और पर्वनलाल की बेएतनाइयां अब जवाबद

ख़ास व आम हो चली—बिचारी हज्जन सख़ मुसीबत में गिरफ़ार थीं, मकान वाले ने ग़ज़ब में जान कर रक्खी थी, और गो कहने की बात नहीं लेकिन एक मुन्सिफ़ के लिये हकगोई भी ज़रूर है इस वास्ते तज़किरा किया जाता है कि बिचारी फ़ाक़े पर फ़ाक़ा करती थी। एक दिन मुन्शी क़ुदरतहुसैन साहब तहसीलदार के दिल में समाई कि हज्जिन साहबा के पास चलकर ताजियत करें, चुनांचे वह तशरीफ़ लाये और दरवाज़ पर से चपरासी ने आवाज़ दी कि तहसीलदार साहब आये हैं। हज्जन बीबी किवाड़ के पास आकर खड़ी हुई और पर्दे की आड़ से यों गुफ़्गू की—

हज्जिन "तहसीलदार साहब आपने बड़ा सवाब कमाया जो मुझ मुसीबतज़दी की हालपुर्सी की, मैं जिस आफ़त में हूं खुदा दुश्मन को भी ये दिन न दिखाये, जिस दिन से वह मर गये हैं अधमरी हो रही हूं न कुछ जायदाद है कि बेंच बेंच खाऊं न कोई वाली वारिस है कि मुझ ग़रीब की ख़बर ले। एक शाल चादर थी वह सैय्यदानी बीबी बेचने को ले गईं आज आठवां दिन है कि वह भी ग़ायब हैं, न रुपया मिला न चादर लौटी, मैं ग़रीब पर्दे की बैठनेवाली कहां जाऊं क्योंकर ढूंढूं, मुई हराम मौत न होती तो कुछ खाकर सो रहती—

तहसीलदार—"हज्जन साहिबा आप कुछ ग़म व तरद्दुद न फ़र्माइये, तरद्दुद व ग़म हमेशा नहीं रहता सब दिन कट जाते हैं। मैं उस सैय्यदानी की तलाश करूंगा, आज कई रोज़ हुए कि एक सैय्यदानी शाहजहांपूर की रहनेवाली एक अंगूठी की चोरी में क़ैद हो गई कहीं वही तो नहीं तुम्हारा दुशाला ले गई"।

हज्जिन—"वह तो यहीं की रहने वाली है पड़ोस में घर है आज आठ रोज से दिखलाई नहीं देती"।

तहसीलदार—"मैं एक ख़ास काम के लिये आज हाज़िर हुआ हूं, आपके यहां जितने कागज़ात हों वह आप मुझ को दिखला दीजिये—डाक्टर साहब कहते थे कि मुहाफ़िज़दफ़्तर साहब ने अपनी ज़िन्दगी का बीमा कर दिया था। अगर यह सच है तो एक रक़म माकूल मिल जावेगी जो आपकी बसर औक़ात को बहुत काफ़ी होगी"।

हज्जन साहिबा कोठरी में गईं और कागज़ात का बस्ता वहां से उठा लाईं

और पर्दे की आड़ से बाहर दे दिया तहसीलदार साहब ने जो उसको खोला तो उन में एक मुट्ठा कोते में बन्धा हुआ निकला, जिस पर ख़ास मुज़ाफ़िज़दफ़र साहब के हाथ की लिखी हुई यह कैदक लगी हुई थी "काग़ज़ात बीमा ज़िन्दगी" तहसीलदार साहब ने जो देखा तो उस में एक दस्तावेज़ बख़त अंगरेजी नक़ली जिसकी रू से गवर्नमेण्ट सेक्यूरीटी लाइफ़ इंश्यूरेंस कम्पनी बंबई ने दस हजार रुपया पर मीर ख़ादिमअली की जिन्दगी का बीमा किया था। । मीर ख़ादिमअली गो कि पुराने ख़्यालात के आदमी थे लेकिन यह फ़ेल उनसे बहुत अक़ल का हुआ था कि जिसकी बहुत कुछ तारीफ़ करना चाहिये। वह ख़ान्दान जिसकी नश्वोनुमा सिर्फ़ सर्कारी मुलाज़मत पर है जिसकी अमीरी का दारो मदार सिर्फ़ सरकारी नौकरी पर है उनके लिये वाक़ई यह निहायत ज़रूरी काम है कि वह अपने पसमांदगान के वास्ते कोई असाग्र छोड़ें। अंगरेजी नौकरी में यह तो होता नहीं कि बाप के बाद बेटा भी वही वहदा पावे, पेश्मादगान की कुछ पर्वरिश की जाय, इस वास्ते बीमा ज़िन्दगी से ज्यादः कोई अम्र सहलुल्वसूल नहीं है। अंगरेजों में तो इस दर्जा रवाज बीमे ज़िन्दगी का है कि हजारों कम्पनियां बहुतही कामयाबी से चल रही हैं। बख़िलाफ़ उसके हमारे हिन्दुस्तानी भाई इससे अच्छी तरह वाक़िफ़ भी नहीं और पुराने फैशन् के हज़रात में मीर ख़ादिमअली पहिले साहब मुझको मिले हैं जिनको अपने पसमांदगान का इतना ख़्याल था और ऐसी आक़बतअंदेशी को काम में लाये थे, सच है—

"मर्दे आख़िरबीं मुबारक बन्द: एस्त,,

तहसीलदार साहब ने जैसेही दस्तावेज़ बीमा देखी फ़र्तमसर्रत से उछल पड़े और इस फ़िक्र में हुये कि यह रक़म किसी तरह हज़म करना चाहिये थोड़ी देर सोचते रहे इतने में एक जोड़ जेहन् में आ गया और फ़ौरन् हुज्जन साहिबा से यह गुफ़्तगू की—

तहसीलदार—"जनाब हुज्जन साहिबा, मीर ख़ादिमअली मरहूम और मुझसे जो मरासिम थे वह मुहताज बयान नहीं, गो ज़ाहिर में मैं उन मरहूम की ख़िदमत में बहुत हाज़िरबाश न था लेकिन कोई राज़ उनका मुझ से छिपा

न था। एक मुलाज़िमत में मेरा उनका साथ रहा, अफ़सोस (यह कहकर रोने लगी) आख़िर वक्त में मीर खादिमअली मरहूम जल्दी कर गये, हाय इस मज़मून को उस्ताद क्या कह गया है कि—

"हज़रत का रफ़ीक़ेज़ूद मीरीं में था
बाज़ूय क़वीय दस्तगीरी में था
है राह अदम् की दूर और आप अ़ईफ़
मुझको न लिया असाय पीरी में था।

हज्जिन—"तहसीलदार साहब, मुसीबत के ज़माने में कोई किसी का नहीं होता, जब से वह मर गये हैं मैंने तरह तरह की मुसीबतें झेलीं, मुये क़र्ज़ख़्वाह अपनी तरफ़ तैयार हैं; मकानवाला अलग निकाले देता है—पर्वनलाल बात तक नहीं सुनते, और जो जो बातें कहते हैं वह उस पर तुर्रा अल्लाह मुझे मौत नहीं देता मेरी सलतनत् लुट गई। इस बुरी घड़ी में आप मेरी बात पूछने आये खुदा आपको इसका अजूर दे, मैं बेवा लावारिस हूं, रोटियों की मुहताज हो रही हूं एक चादर थी वह मुई सैय्यदानी के नेक लगी"।

तहसीलदार—"तो मेरी अब यह ख़्वाहिश है कि आप ग़रीबख़ाने पर तशरीफ़ ले चलें और वहीं क़याम करमावें, घर भर आपकी ख़िदमत करेगा और आपके तशरीफ़ रखने से घर में बरकत होगी; उधर मैं बीमे की पैरवी करूंगा"।

हज्जिन—"बहुत बेहतर—कल आप सवारी भेज दीजियेगा, मैं वहीं चलकर रहूंगी मुझे क्या उज़्र है"।

क्या अब इसके बयान करने की ज़रूरत है कि हज्जन साहिबा दूसरे दिन से तहसीलदार साहब के घर में रहने लगी और उस दस हज़ार रुपये को तहसीलदार साहब वसूल करने की फ़िक्र में हुये और ख़त किताबत शुरू की?॥

—***—

बारहवां बाब।

गरीब सैय्यदानी जेलख़ाने में।

बेचारी मुसीबत की मारी नाकर्दःगुनाह सैय्यदानी खिंचती खिंचाती जेल भेजी गई। रास्ते भर रोती चिल्लाती जाती थी, अपने दुखड़े को इस पुर्दर्द और बाअसर लहजे में बयान करती जाती थी कि सुननेवालों का दिल हिला जाता था। उसका बार बार आसमान की तरफ़ देखना और सिर पीट पीटकर बैन करना वाक़ई बहुतही दर्दनाक था।

साढ़े पांच बजे जेल में पहुंचकर जनानी वार्ड में भेजी गई। जेल की मुसीबतें देखतेही उसके रोंगटे खड़े हो गये। दारोग़ा, नायब, बर्कन्दाज़, दफ़ेदार जो था फ़रऊन बेसामान—अगर क़ैदी का कोई वाली वारिस हो, कुछ खिदमत करे रुपया पैसा दे तो किसी क़दर आराम मिल सकता था वर न वह जेल दोज़ख से बदर्जहा बदतर था। भला बी सैय्यदानी के पास क्या था जो कोई उनसे पाता, हां जो कुछ थी वह तरारदार ज़बान थी जो कैंची से ज़्यादा तेज़ चलती थी, और बात बात पर गालियां देती थी। जिस वक़्त से कि पुलिस की हिरासत में एहतियातन् ग़रीब सैय्यदानी ली गई उस वक़्त से और शाम तक और दूसरे सुबह तक दाना पानी बिलकुल हराम था। हर चन्द रात को सिपाही, बरक़न्दाज़ दारोग़ा सब के सब सैय्यदानी को समझाते थे लेकिन एक नहीं हज़ार नहीं सिवाय रोने के एक मिनिट उसको चैन न था। आंसू का एक तूफ़ान था कि जारी था वह बार बार सब से पूछती थी कि—"ऐ ख़ुदा के बन्दो! इतना मुझे बतलाओ कि मैंने कौन सी तक़सीर (तक़सीर) की जिसके बदले मुझ नसीबोंजली को जेलखाना हुआ, और दुआंका बेचा दाम न पाये, जूतियां खाईं दम तक भी न मारा, उसका यह इनाम!, ए मेरे रब्ब करीम! तेरे बड़े २ हाथ हैं। क्या तेरे घर में यही अंधेर है ए मेरे मौला! तेरी लाठी में आवाज़ नहीं"।

पहिले दारोग़ा साहब चुप चाप सुनते गयेजब नौ बजे रात तक बुढ़ी चुप न हुई तो मार मार कर ख़ामोश कराने की सलाह क़रार पाई। फिर हज़रत, अल्ला दे और बन्द: ले, इस बेरहमी से बुढ़ी को मारा कि तोबा! तोबा!!

बुढ़ी बिचारी चिल्लातीथी, सिर पीटती थी हज़ारों वास्ते दिलाती थी लेकिन कौन सुनता था। इस हद्द को मारा कि वह बेचारी गिर गई और तमाम जेल के क़ैदी सैय्यदानी के रोने को देख देखकर दांतों से उङ्गली काटते थे। ख़ुदा ख़ुदा करके रात कटी, चलते वक़्त दारोग़ा साहब फ़रमा गये कि 'अच्छा ख़ैर आज तो हम जाते हैं अगर कल तूने अच्छी तरह खाना न खाया तो तेरे चूतड़ खुलवा कर बेत से पीटवाऊंगा तेरी भी तिरियाहट निकल जावेगी'।

उसका जवाब बुढ़ी ने यह दिया कि ख़ुदा तुझे नापैद करे! मूये क़साई तू

मुझे आजही मारडाल, मूये इस ज़िन्दगी से तो मौत बेहतर है, ऐसेही नदीदों ने इमाम हुसैन को कत्ल किया होगा।

दूसरे दिन सवेरे तड़के दारोगा साहब सब से पहिले बुड्ढी की खबर लेने गये तो देखा कि वह गरीब बेहिस्स हरकत पड़ी है, जाबजा अब की मार पीट से नीले साट जिस्म पर पड़े हुये हैं और उसकी हालत एक बीमार की सी हो रही है।

दारोगा—देखा सच है कि मार का आदमी बात से नहीं मानता, रात समझाया किये कि बड़ी बी मान जाओ, मत रोओ, जैसा किया वैसा पाया, अब रोना काहे का, न माना न माना, जब अच्छी तरह मरम्मत रात को कर दी गई अब चुपचाप हैं'।

रावी—'जी बजा है यह सबब चुप रहने का नहीं है बल्कि—"मुसीबत हद से सब गुज़री तो ज़ाहिर हो नहीं सकती। बहुत ग़म में बहुत कम आंख से आंसू निकलते हैं"।

इतने में एक गाड़ी खड़खड़ाई और सब लोग अपनी २ जगह दुरुस्त हो गये, मालूम हुआ कि डाक्टर साहब तशरीफ़ लाये हैं, इतनी बात सुनकर बुड्ढी का शोर व ग़ोग़ फिर बुलन्द हुआ और अपने नालहाय पुरअसर से तमाम जेल सर पर उठाना शुरू कर दिया। डाक्टर साहब बहुतही नेकसिफ़त शख्स थे। ज़रा भी फर्याद किसी की बग़ैर उनके कामिल तवज्जह के न रहती थी, फ़ौरन् बुड्ढी के नाले असर कर गये पूछा कि 'यह कौन रोता है?'।

दारोगा—"हुज़ूर एक सिड़िन औरत है उसको तहसीलदार साहब ने क़ैद करके भेज दिया है जिस वक्त से आई है हम सब की आफियत तंग है"।

डाक्टर—"मजनू है तो ऐसा आदमी कौन इख़ियार से तहसीलदार साहब ने क़ैद कर दिया?"

दारोगा—"हुज़ूर, मजनू नहीं है, बनी हुई है हजारों गालियां देती है, "दीवाना ब कार ख़ेश हुशियार"॥

डाक्टर साहब फ़ौरन् सैय्यदानी के पास गये और उससे यों पूछने लगे—

डाक्टर—"बेल बुड्ढी औरत! तुम काहे को इतना रोती है?".

सैय्यदानी—'साहब मैं अपने नसी-

यों को रोती हूं और क्या कहूं, मेरे मालिक दगले वाली पलटन में कुमेदान थे, ग़ाज़ीउद्दीन हैदर के वक्त में चार चार घोड़े सवारी में थे, उनके मरने के बाद भी आज तक इज़्ज़त आबरू से गुज़री। चाहे चर्खा काता पिसौनी कुटौनी की, मुद्दा किसी की शर्मिन्दा नहीं हुई। अब जब कब्र में पैर लटकाये हैं मूये दुशाले की बदौलत यह गत भी देखी! न मैं खादिमअली की बीबी के कहने में आती न ये दिन देखने नसीब होते—(यह कह कर फिर रोने लगी)।

डाक्टर—"कौन खादिमअली? मुहाफिज़दफ़्र जो मर गया"।

सैय्यदानी—"हां साहब, वही क्या इस शहर में दो तीन खादिमअली थे? वही एकला दम था सो जाता रहा, उन की बीबी टके टके को मोहताज हैं, तीन तीन फ़ाक़े होते हैं, मुझे आज कई दिन हुये एक दुशाला दिया कि बेच लाओ मूये करजदारों से छुट्टी मिले। मैं क्या जानती थी यह किस्मत में लिखा है। हैदरगंज वाले मिरजा वही मूड़ीकाटे फतहबेग के घर ग्यारह रुपये पर चादर बेची, दाम मांगने गई तो एक कौड़ी हराम के बराबर, उसने मार गाली गुफ़ा दिया, और तहसीलदार से कह सुन कैद अलग करा दिया। मेरा पहाड़ ऐसा बेटा मौजूद है उस तक को ख़बर नहीं कि मैं कहां हूं, मेरी बहू बिलख बिलख कर रोती होगी कि अम्मा कहां मर रही। बिचारी खादिमअली की बीबी अपनी तरफ़ मेरा रास्ता देखती होगी। मूये तिलङ्गे जेलखाने में ले आये यहां सब ने मिलकर मुझे रात जूतों लात मुक्के से बेखता बेगुनाह मारा, ऐसा ऐसा मारा कि अधमूई करके छोड़ दिया खुदा जाने इन निगोड़ों का मैंने क्या बिगाड़ा था। ऐ मियां! ऐसा अंधेर तो खुदा की खुदाई में कहीं न होगा, सब कहते थे कि मल्का टूरिया का राज है—शेर बकरी एक घाट पानी पीते हैं हमको तो इस राज ने निहाल कर दिया खुदा इस राज को ग़ारत करे"।

डाक्टर साहब ने जो यह किस्सा सुना तो उनके बदन में सन्नाटा पड़ गया। सैय्यदानी को समझाया, तस्कीन दी, और फौरन् टमटम पर सवार हुये और सीधे मजिस्ट्रेट की कोठी पर पहुंचे॥

साहब मजिस्ट्रेट—"गुड मारनिङ्ग म्यालेडी! (हाथ मिलाकर) हाउ डू यू डू।

डाकुर—"गुड मार्निङ्ग—मैं एक अजीब किस्सा तुमको सुनाने आया हूं मेरे साथ चले चलो, वहां एक ऐसा अफसोसनाक तमाशा है कि शायद तुम भी सुनना और देखना बरदाश्त न कर सको"

मजिस्ट्रेट—"ओ–खैर तो है ?"

डाकुर—"हां खैर तो है मगर ऐसा जुल्म हुआ है कि शायद ब्रिटिश गवर्मेण्ट में उसकी मिसाल मुश्किल से मिल सके—आपके तहसीलदार ने एक औरत को बिलकुल बेगुनाह कैद कर दिया है और मेरे जेलर ने उसको बहुत बेरहमी से मारा है उसके तमाम जिस्म पर निशानात मौजूद हैं"।

साहब मजिस्ट्रेट फौरन् डाकर साहब के हमराह जेल में आये और वहां बहुत ही मुफ़स्सिल तौर से सैय्यदानी से कुल किस्सा सुना और उसी वक्त मिस्टर हावर्ड सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलीस को जिनका बंगला जेल के क़रीब था बुला भेजा और उनसे भी कुल हाल बयान किया।

सु० पुलिस—"क़ुदरतहुसैन तहसीलदार बड़ा बेईमान आदमी है हमको खूब मालूम है कि वह दो दो आना रिश्वत लेता है"।

डाकुर—"मगर यह देखना है कि वह वकील का किस्सा कहां तक सच है और तुम्हारी पुलीस ने कैसे इसका चालान किया ?"

सुप०—"और कोतवाली में एक दीनदयाल हेडकांष्टेबिल है, वह बड़ा पाजी है हमेशा झूठे मुकद्दमे बनाया करता है अजब नहीं कि उसी का यह मुकद्दमा भी बनाया हो"॥

साहब मजि०—"तो आप इसी वक्त जाइये और वकील की तलाशी कीजिये और मैं भी जाकर मिसल निकलवाता हूं और सैय्यदानी इस वक्त ज़मानत पर छोड़ दी जावे। मगर ज़ामिन कौन होगा ?"

डाकुर—"मैं इस मज़लूम औरत की ज़मानत करूंगा चाहे किसी तायदाद की हो और मैं अभी अपने जेलर को भी मुअत्तिल करूंगा"—

मजि०—"बेशक मेरी राय में उस पर मुकद्दमा क़ायम किया जावे"।

अलगर्ज़ साहब मजिस्टेट ने फौरन् सैय्यदानी को ज़मानत पर रिहाई दी और उसी वक्त जेल से खैरानी अपील लेकर मिसल तलबकरने का हुक्म दिया—सैयदानी को टमटम पर बिठला कर अपनी कोठी पर

लाये और उससे कुल हालात पूछना शुरू किया। उधर डाक्टर साहब ने जेलर बरकन्दाज और जिस जिस को सैयदानी ने बतलाया था और तमाम क़ैदियों ने गवाही दी मुश्तमिल करके साहब इन्स्पेक्टर जेनरल के पास रिपोर्ट भेजी और साहब सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलीस बग़रज़ तलाशी मिर्ज़ा फ़तहबेग रवाना हुये॥

—***—

तेरहवां बाब।

मिः पिटर्सन।

मिः पार्कर के बाद ज़िला फ़िरोजनगर वाकई मिः पिटर्सनही जैसे तेजमिज़ाज हाकिम का मोहताज था। मिः पिटर्सन एक नये फ़ैशन के सिविलियन कम उम्र क़ीलियाकत और साहब इख़लाक आदमी थे, लिट्रेचर में आनर्ज की डिग्री हासिल की थी, बैरिष्टर थे, अर्बी फ़ार्सी के ज़बांदानी के इम्तिहान देकर इनाम हासिल कर चुके थे, हिन्दोस्तानियों से बहुतही दोस्ताना तौर से मिलते थे और चूंकि किसी ज़माने में अलीगढ़ रह आये थे लिहाज़ा उन्हीं फ़ैशन् के मुसलमानों की बहुतही कद्र करते थे और उनसे निहायतही हमदर्दी करते थे। मिः पिटर्सन खुद ऐसे लायक थे कि वह काम में किसी पर भरोसा न रखते थे और सिरिश्तेदार की तो उनके वक्त में ज़रा भी न चलती थी। मिः पिटर्सन एक आलीख़ान्दन आदमी थे। सर जार्ज पिटर्सन अण्डर सेक्रेटरी पार्लीमेण्ट के हकीकी छोटे भाई थे और बिलतबह आली ख़ान्दान आदमियों से उनको निहायत उल्फ़त रहती थी। अब सुनिये कि मिः पार्कर के जातेही ज़िले का रंग बदला हर शख़्स इसके फ़िक्र में हुआ कि रसाई हाकिमे ज़िला हासिल करना चाहिये, हनोज वह अच्छी तरह चार्ज से भी फ़ारिग न हुये थे कि चपरासी ने इत्तिला दी कि हुज़ूर डिप्टी ब्रजलाल, डिप्टी शौकतहुसैन और तहसीलदार और मुंशी पवनलाल मुहाफ़िज़दफ़्तर सलाम को आये हैं।

साहब—"अच्छा ब्रजलाल को सलाम दो"।

क़ब्ल इसके कि हर दो साहबान मिः पिटर्सन से मिलें थोड़े हालात इन हज़रात के भी नाज़रीन को बतलाना ज़रूर है।

मुंशी ब्रजलाल साहब क़ौम के दूसर, आली दर्जे के ग़ैरमुहतात और निहायत

ही बेमाइह आदमी थे। ग़दर में कुछ खैरख़्वाही की थी उसके एवज़ में डिप्टी कलेक्टर हो गये थे। तास्सुफ़ मज़हबी हद से ज़्यादा बढ़ा हुआ था निहायतही बुरी तरह मुसलमानों से पेश आते थे और हमेशा अपने हमक़ौम हिन्दुओं के मददगार रहते थे; लाला पर्वनलाल के बड़े पुश्तपनाह थे और उनके लिये इधर उधर कोशिश भी किया करते थे। डिप्टी शौकतहुसैन व मुंशी ब्रजलाल से आपस में सफ़ाई दिली न थी क्योंकि दोनों साहब अपनी अपनी रसाई के ख़्वाहां थे और एक दूसरे को देख न सकता था। ब्रजलाल वजह और लिबास में बहुतही ज़िल्लत से रहते थे एक निहायत पुराना चोग़ा शाली ख़ुदा जाने किस वक़्त का उनके पास था और वकील मुंशी सफ़दर हुसैन ख़ां बहादुर ऐयाम ग़दर से आज तक बराबर उनके बदन पर रहा, सिर्फ़ फ़र्क़ यह था कि चंद अदद 'बुक्केजात' अब उसमें ज़्यादा हो गये थे।

मुंशी शौकतहुसैन आगरे के रहनेवाले क़ौम सैय्यद और शीय मज़हब के थे, पुरानी किताह के मुसलमान थे। मज़हबी तास्सुबात उनके मिज़ाज में भी बहुत थे और सैयद अहमद ख़ां बहादुर को भी निहायत बुरा जानते थे और उनके जल्से में सिवाय सैय्यद साहब की बुराई के दूसरा तज़किरा बहुत कम रहता था, उनके मकानपर शाम से सब अमले और मुख़्तार जमा होते थे और हर वक़्त इसी क़िस्म के मुहमिल तज़किरात हुआ करते थे। डिप्टी साहब को अपनी शान और रसाई दिखलाने का बहुत शौक़ था और हमेशा हुक्काम की इनायतों का तज़किरा बहुत किया करते थे। शौकतहुसैन रहते ज़रा अच्छी तरह से थे, मकान ज़रा एशियाई तकल्लुफ़ात से आरास्ता रहता था और नाच मुजरा भी अक्सर हुआ करता था। आम राय मुंशी शौकतहुसैन की निस्बत फ़ीरोज़नगर के मुसलमान-सोसाइटी में यह थी कि डिप्टी साहब एक गुले गुलज़ार आदमी हैं" ॥

चपरासी—"डिप्टी ब्रजलाल साहब, चलिये साहब ने सलाम दिया है"।

डिप्टी साहब फ़ौरन् उठे और चोग़ा सम्हालते और पगड़ी दुरुस्त करते हुये चपरासी के पीछे हुये, इधर डिप्टी शौकतहुसैन ने साहब के सर्दार को बुलाया और यों बातें करने लगे।

डिप्टी सा०—"कहो भाई सर्दार अच्छे तो हो?"

सर्दार--"सलाम हुजूर, आपके इक-बाल से"।

डिप्टी सा०--"साहब का मिजाज कैसा है तुम वाकिफ होगे"।

सर्दार--मिजाज तो अच्छा है, आप लोगों को बहुत खातिर करता है, जरा घूस लेने पर नाराज होता है, और बहुत ठीक है।

पर्वनलाल--"और अमलों से किस तरह पेश आते हैं?"

सर्दार--"मुंशी लोगों को मारता बहुत है लेकिन किसी को बरखास नहीं करता"।

उधर डिप्टी ब्रजलाल साहब ने कमरे के पास पहुंचतेही बहुत दूर जूता उतारा और दूरही से झुक झुक कर फर्शी सलाम करना शुरू किये। साहब किसी कद्र उठे और हाथ मिलाया और अपने करीब की कुर्सी पर बैठने की इजाजत दी और पूछा "वेल मुंशी साहब आपका मिजाज अच्छा है?"

डि० सा०--"हुजूर के इकबाल से, हुजूर की तशरीफआवरी से तावेदार को बड़ी खुशी हुई। इस ज़िले का हुजूर रंगही अलग था अब हुजूर तशरीफ लाये हैं सब दुरुस्त हो जायगा"--

साहब--"वेल हां हम समझता है कि जरा यहां लोग बेखौफ बहुत था, मि: पार्कर नेक आदमी था, हम सब दुरुस्त कर देगा"।

डिप्टी सा०--"मगर हुजूर पर्वनलाल बहुत माकूल आदमी हैं, हुजूर उससे बेहतर दूसरा अच्छा जिले में नहीं है"।

साहब--"ओ यस, पर्वनलाल मुहाफिजदफ़र, हम से साहब उसका हाल बोल गया है हम उसको सिरिश्तेदार बनाया चाहता है अब कोई मौका होगा"।

डिप्टी सा०--"हुजूर की बड़ी खाविन्दी होगी"।

अब साहब बहादुर चुप हैं कि कोई और बात चीत आपस के दोस्ताना वर्ताव की हो लेकिन डिप्टी साहब हाथ जोड़े बैठे हैं। दस मिनट बाद साहब ने यों रुखसत किया कि अच्छा डिप्टी साहब, हम आपकी मुलाकात से बहुत खुश हुआ और फिर उम्मेद है कि आप से जल्दी जल्दी मुलाकात हो"।

साहबने चपरासी को आवाज़ दी और डिप्टी शौकतहुसैन को बुलाया- यह भी उसी तरह बहुतही अदब से गये और जूता उतार कर बअदब सलाम किया॥

साहब ने हाथ मिलाया और मिजाज़ पूछकर यों हमकलाम हुये॥

साहब-"वेल डिप्टी साहब! आपका वतन किस ज़िले में है?"।

डिप्टी सा०--"खुदावन्द न्यामत तरक्कीख्वाह का ग़रीबखाना ज़िला आगरे में है हुज़ूर ने सुना होगा मौलवी महम्मद अकरम खां बहादुर जो ग्वालियर में वज़ीर आज़म हैं और गवर्मेण्ट इङ्गलिशिया ने उनको सिपरे सलतनत् का खिताब अता फर्माया है वह कमतरीन के हक़ीक़ी साले के साले के मामूज़ाद भाई के फूफा है"।

साहब--(हंसकर) डिप्टी साहब इस रिश्ते को फेर फर्माइये हम अभी नहीं समझा।

डिप्टी सा०—"हुज़ूरआली, मौलवी अकरम खां बहादुर गुलाम के हक़ीक़ी साले के साले के मामूज़ाद भाई के फूफा हैं"।

साहब--'वो बहुत क़रीब का रिश्ता है"।

डिप्टी सा०--"हां हुज़ूर बहुतही क़रीब के रिश्तेदार हैं"।

साहब--'वेल आपके ज़िले का क्या हाल है?'।

डिप्टी सा०--"हुज़ूर के अकबाल से सब लोग खुश व खुर्रम हैं, अठारह बरस बाद मि: पार्कर साहब बहादुर तशरीफ़ ले गये, खुदा करे अब हुज़ूर भी इसी तरह तशरीफ़ रक्खें"।

साहब—"ओ नहीं हम इतना रोज नहीं रहेगा, हम छ महीना बाद गवर्मेन्ट का सेक्रटरी होकर चला जायगा"।

डिप्टी सा०--"फिर हुज़ूर की जगह कौन होगा?"

साहब—"हम जानता है शायद मि: हारिसन् जो इस वक्त सितमगरपूर में सिटी मजिस्ट्रेट है वह आवेगा, वह बड़ा तेज़ आदमी है, साहब मुन्सफ़ बहुत है, लेकिन ज़रा जल्दबाज़ है—अच्छा डिप्टी साहब हम आज काम में है हम आप से फिर मिलेंगा—कोई है?"

चपरासी--"हाज़िर खुदावन्द"।

साहब—"अच्छा तहसीलदार और मुहाफ़िजदफ़्तर दोनों को एक साथ भेज दो"। दोनों साहब तशरीफ़ ले गये॥

साहब बहादुर ने बहखुलाक तमाम साहब सलामत करके और कसरत काम का उज्र करके एक मिनट भर बिठलाकर दोनों को रुखसत कर दिया—

अब सब साहब बाहर निकल कर लगे लाफजनियां करने—

डिप्टी बृजलाल--"साहब बहुत नेक आदमी हैं और बड़ी खाविन्दी से पेश आये और कोई राज़ ऐसा न था जो मुझ से छिपा रक्खा हो॥

डिप्टी शौकतहुसैन--"जी हां मुझ से भी कुल हाल अपना बयान किया यहां तक (आहिस्ते से) कह दिया जो जनाब दूसरा अङ्गरेज़ कभी न कहता।

तहसीलदार—"और साहब मामला फहम आदमी मालूम होते हैं, लायक़ भी होंगे"।

पर्वनलाल--"मगर जनाब इस सर्दार ने तो बुरी सुनाई हम लोगों के हक़ में तो ग़ज़बही हो गया"।

डिप्टी बृजलाल--"अजी उस बदमाश को क्या मालूम"।

इतने में सर्दार खानसामा साईस सब के सब आन मौजूद हुये अर्दली के चपरासी भी पहुंचे।

सर्दार—"फिर हुजूर हमको क्या हुक्म होता है?"

सब के सब--"भई मकान पर आते जाना अब यहां थोड़ी मौजूद है"॥

खान्सामा—"अजी फिर ऐसी हम को ग़रज़ भी नहीं है कि डेढ़ कोस दौड़े जांय सौ दफ़े चाहे दीजिये नहीं, अपना रास्ता नापिये"।

तहसीलदार--"अजी जमादार साहब, खफ़ा क्यों होते हो क्या हम लोग तुम से बाहर हैं"।

चपरासी—"आप लोग नादानी किया, हमारी बात दूसरी थी जब जी चाहता देते, घर का मामला था, लेकिन यह लोग अभी नये आये हैं साहब भी नये हैं इनको नाखुश न करना चाहिये, और (डिप्टी साहब के कान में मुंह लगाकर) शहामत खां जमादार का बड़ा इख़्तियार है स्याह सुफ़ेद के मालिक हैं"।

तहसीलदार—(आहिस्ते से) भई अब यहां तो रुपया भी नहीं है।

डिप्टी साहब—अच्छा खानसामा जी, आप अपना आदमी हमारे साथ कर दीजिये हम पहुँचकर अभी आप का रुक़ा वहां से भेज देंगे, हम लोगों पर इनायत कीजिये और बहुत गर्म न हूजिये" ॥

इस गुस्ताखाना तकरीर को अपने कमरे से मि. डिलन साहब असिष्टण्ट, कमिश्नर ने जो उसकोठी में रहते थे और एकताज़ा वारिद व नौजवान सिविलियन थे और मि. पिटर्सन के बड़े दोस्त थे अपने कान से और उनको इस क़द्र गुस्सा आया कि उन्हों ने बेताम्मुल निकलकर दो दो तीन तीन चाबुक खानसामा और बेयरा के लगाये और हज़ारों गालियां दीं और इस क़दर गुस्सा किया कि सब थर्रा उठे। मि. पिटर्सन ने भी गुल सुना और वह भी अपने कमरे से दौड़े देखा कि यहां यह तमाशा हो रहा है ॥

पिटर्सन—'यह क्या यह क्या डिलन?'

डिलन—"कुछ नहीं पिटर्सन, मैंने अपने कान से सुना कि तुम्हारे निज के नौकर और अर्दली के चपरासी इन हिन्दुस्तानी शरीफ़ों से तुम्हारी मुलाकात का टिकट वसूल करते थे, वे फ़रीब तक करते थे, खुशामद करते थे कि आज हमारे पास नहीं है और ये हरामज़ादे टर्राते थे।

पिटर्सन—"मैं तहेदिल से तुम्हारा शुकरगुज़ार हुआ कि तुमने आज बहुत बरसों की ख्यालकी हुई बात को मुझ पर ज़ाहिर किया, मैं नहीं समझता कि ये हिन्दोस्तानी किस क़दर बेवकूफ़ हैं। मुन्दर्जागज़ट अफ़सरान् जिनकी मौकूफ़ी का इख़्तियार मुझको भी नहीं है मेरे नौकरों से किस वास्ते डरते हैं?—ये हरामज़ादे क्या कर सकते हैं, अच्छा मैं अभी इसका इन्तिज़ाम करता हूं" ॥

डिप्टी शौकतहुसैन—"हुज़ूर आली हमलोग अपनी आबरू को डरते हैं आप की मुलाकात बग़ैर वसातत इन अर्दलियों के तो मुम्किन नहीं—फिर हमलोग इनकी खिदमतगारी न करें तो क्योंकर आपकी मुलाकात नसीब हो"

मि: पिटर्सन—"वेल डिप्टी साहब आप इतना बड़ा अफ़सर होकर ऐसी बात कहते तो बड़े शर्म की बात है, किस वास्ते आप छपा हुआ कार्ड नहीं रखते, जैसही आप लोग आइये फौरन्

हमारे चपरासी को दीजिये कि हमारे पास पहुंचाये, अगर हमको मिलना होगा हम बुलवायेगा, और अगर कोई चपरासी आपका कार्ड हम तक पहुंचाने में देर करे आप हम से कचहरी में खबर करिये हम उसी वक्त उसका बन्दोबस्त करेंगे"।

मि: पिटर्सन ने उसी वक्त अपने तमाम मुलाज़िमान निज को जो उस वक्त मौजूद पाये गये बर्खास्त किया और चपरासी को भी बर्खास्त कर दिया और अपने मकान के दर्वाज़े पर और तमाम कचहरियों के दर्वाज़े पर यह इश्तिहार लगा दिया कि कोई शख्स चपरासियों को या हमारे मुलाज़िमान खानगी को इनाम न दे वर्ना हम निहायत नाराज़ होंगे और अयानत दफ़ा १६१ ताज़िरात हिन्द का मुक़द्दमा क़ायम किया जावेगा। मि: पिटर्सन की इस हरकत ने उनकी बड़ी इज़्ज़त की और उनका पूरा रोब क़ायम कर दिया और हर शख्स अपने अपने मुक़ाम पर लर्ज़ गया और उस ज़िले में चपरासियों की लूटमार से चन्दा पनाह हो गई॥

—***—

चौदहवां बाब ।

सैय्यद दियानतहुसैन नायब तहसीलदार।

मीर दियानतहुसैन नायब तहसीलदार होकर हिसामपूर तशरीफ़ ले गये। हिसामपूर एक छोटासा कसबा दर्याय कालपी पर वाक़ा है। वहां लाला चिरौंजीलाल साहब तहसीलदार अजब शख्स थे—परले सिरे के गैरमुहतात, खायन, चोट्टे बेईमान व क़ाबूपरस्त थे, नायब तहसीलदार की इज़्ज़त उनकी निगाह में एक मोहर्रिर से कम और अपनी इज़्ज़त वह कलेक्टर से ज़्यादा समझते थे। शाह महमूदहुसैन एक बुड्ढे मसकीं आदमी थे और गैर मुहतात भी थे इस वजह से वह तमाम सख्तियां लाला चिरौंजीलाल की बर्दाश्त करते और अपने पेन्शन के दिन काटते थे। भला दियानत हुसैन से कब निभ सकती थी। मीर दियानतहुसैन कोई मुफ़सीद या गैर मतोअ आदमी न थे लेकिन अपनी ज़ाती इज़्ज़त वह गँवाना नहीं चाहते थे और हमेशा एक शरीफ़ाना बर्ताव के मुतवक्क़ह रहते थे। दियानतहुसैन ने तहसील में पहुंचतेही मेज़ कुर्सी पर कचहरी शुरू की और ऐसा सलामतरवी का तरीक़ा इख्तियार किया जो हर तरह उनकी

तहज़ीब और लियाक़त के म्वाफ़िक था। बड़े सुबह आबकारी आकर शराब निकलवाना, दस ग्यारह बजे तक वहां रहना, बारह बजे से शाम तक कचहरी में सरमग़ज़न् करना, तमाम तामीलात का काम अपने सर ले लिया, कुल रिपोर्टें अपने हाथ से लिखते, दाखिल खारिज़ के मुक़द्दमात में तमाम इज़हारात खुद लिखते, वसूल मालगुज़ारी खासकर अपने हाथ में करली। तमाम दस्तकात अपनी खास निगरानी में ज़ारी कराते, खज़ाने का काम भी खुद ले लिया ग़रज़ बजुज़ फ़ैसला मुक़द्दमात फ़ौजदारी व कलेक्टरी सब काम दियानतहुसैन खुद करते। वासिलबाक़ीनवीस, स्याहानवीस, मुहर्रिर दाखिलखारिज, मुहर्रिर आबकारी रजिष्ट्रार कानूनगो सब के रकूम में उनकी ज़ात से खलल पड़ी, और वह सब की नज़रों में खटकने लगे। उनकी दियानत का शुहरा ऐसा बुलन्द हुआ कि तमाम ज़िमींदार व अहलेग़र्ज़ जिसको जो काम होता सीधा दियानतहुसैन से कहता और यह फ़ौरन् कागज़ मँगवाकर उसकी तकमील कर देते। वह बिचारे जो चार चार रोज़ अमलों के चक्कर में पड़े रहते और उनके पञ्जये ग़ज़ब में गिरफ़्तार रहते भेंट न देने के जुर्म में गालियां खाते वे खुशी खुशी आते और अपना काम करा कर चले जाते थे॥

लाला चिरौंजीलाल को मैंअद दियानतहुसैन से गो ऐसा आराम मिला कि शायद उनको तमाम उम्र किसी नायब तहसीलदार से न मिला होगा लेकिन इस पर भी वह मैंअद दियानतहुसैन से रज़ामन्द न थे और यही चाहते थे कि किसी तरह ये इस तहसील से तबदील हो जांय। लेकिन वह क्या कर सकते थे, मि: पार्कर दियानतहुसैन को अपनी औलाद से कम नहीं समझते थे और मि: पिटर्सन जब से आये गो उन से कोई तखसीस न थी लेकिन वह भी दियानतहुसैन की बहुत इज़्ज़त करते थे और निहायत आला दर्जे की राय उनकी निस्बत रखते थे। तहसील के तमाम अमले तहसीलदार साहब के यहां जाकर दियानतहुसैन का गिला किया करते थे, कभी कुछ कहते कभी कुछ फ़साद लगाते थे। तहसीलदार साहब व दियानतहुसैन की रंजिश रोज़ बरोज़ बढ़ती गई, इतने में मि: पिटर्सन एक रोज़ सुबह को डांक खोलते हैं तो हस्ब ज़ैल एक अर्ज़ी निकली –

ग़रीबपर्वर सलामत—

हुजूर का इन्साफ़ अर्वउलअमल में शेर बकरी एक घाट पानी पीते हैं, पार्कर साहब के वक्त में जो अंधेर थे वह सब जाते रहे लेकिन चिरौंजीलाल तहसीलदार अब तक अपनी हर्कात से बाज़ नहीं आता, दो दो आना रिश्वत लेता है और तमाम सड़क और पुल का रुपया खा गया सर्कार तहक़ीक़ात करके तहसीलदार की सज़ा करे'।

अर्ज़ी बन्दे खुदा

यह अर्ज़ी बैरङ्ग लिफ़ाफ़े में साहब डिप्टी कमिश्नर बहादुर के नाम गई और साहब ममदूह ने उस पर यह हुक्म लिखकर तहसीलदार साहब के पास भिजवा दिया।

हुक्म

यह पहिली अर्ज़ी हमारे मुलाहज़े में आई हम तहसीलदार को दो मौका और देते हैं अगर दो मर्तबः और उनकी शिकायत हमारे कान तक पहुंचेगी तो हम ज़रूर तहसीलदार के निस्बत हुक्म मुनासिब देंगे यह अर्ज़ी बजिन्स पास तहसीलदार के भेज दी जाय"।

"इस अर्ज़ी के पातेही लाला चिरौंजीलाल के मकान पर एक कौंसिल जमा हुई और उसकी फ़िक्र पैदा हुई कि आख़िर यह किसकी भेजी है। किस इत्तफ़ाक़ यह ते पाया कि मीर दियानतहुसैन ने यह अर्ज़ी भेजी और इस बात पर तहसीलदार साहब को इस दर्जा इत्मिनान हुआ कि वह अपने जामे में न रहे और उन्होंने उसी वक्त जो कुछ उनके जी में आया उनके पीछे आम तौर पर भला बुरा दियानतहुसैन की निस्बत कहा—

अमलों ने यह भी सलाह दी कि बंदे खुदा की अर्ज़ियों का इन्सदाद ज़रूरी अम्र है और इसके लिये इससे बेहतर कोई तदबीर नहीं कि चंद अर्ज़ियां ऐसेही मज़मून की रवाना की जांय कि सरीह लग्व व झूठी हों कि जिनको पाकर हुक्काम कुल अर्जियां एकही तरह की समझ जांयगे और फिर बंदेखुदा पर एतबार न होगा। दूसरे दिन सुबह को मि: पिटर्सन की डाक में यह गुमनाम अर्ज़ी निकली।

हुजूरवाला—

दियानतहुसैन तमाम तहसील लूट रहा है,दो दो पैसे फी चालान आबकारी से वसूल करता है और सुबह से शाम तक मैख्वारी और भंगनोशी में बसर करता है, उसका बाप बाग़ी सरकार था सरकार ख़बर ले।

'अर्ज़ी जिमींदारान् तहसील हिसामपुर'

मि: पिटर्सन ने उस अर्ज़ी को भी अंग्रेज़ी लिफ़ाफ़े में करके और दियानत हुसैन के पास वास्ते मुलाहज़े के भेज दिया।

दूसरे दिन दो बजे की डाक में उनको एक और अर्ज़ी मिली जिसका मज़मून यह है—

हुज़ूरआली—

मि: डिलन असिष्टण्ट कमिश्नर और रानी जैपाल कुंअर रानी चान्दापुर से आशनाई हो गई, लाखों रुपये रानीसाहबा से डिलन साहब वसूल कर रहे हैं और रियासत तबाह हुई जाती है। राजा हरपाल सिंह नाबालिग़ को मिन् जानिब डिलन साहब अनक़रीब ज़हर दिया जायगा और बाद उसके डिलन् साहब नौकरी छोड़कर चन्दापूर का राज करेंगे हुज़ूर इसका इन्सदाद करें—

"अर्ज़ी रऊसाय ज़िला फीरोज़ानगर"

तीसरे दिन कमिश्नरी से मि: पिटर्सन को यह अर्ज़ी मिली जो कमिश्नर साहब के पास उनकी शिकायत में गई थी।

"खुदावन्द नेअमत्"

मि: पिटर्सन जब से इस ज़िले में आये हैं अजब अंधेर मचा रक्खा है। अब्दुलवहाब जमादार की मार्फ़त अहले से रिश्वत लेते हैं और कुल हुक्काम से तनख़्वाहें मुक़र्रर करा ली हैं और तमाम ज़िला तबाह हो रहा है। अगर पिटर्सन साहब इस ज़िले से तबदील न किये जायगे तो अन्दर साल के हुज़ूर उनको ज़िन्दह न पायेंगे। अगर इसपर तवज्जह न हुई तो हम इस मामले की इत्तला लाट साहब को भी करेंगे।

अर्ज़ी फ़िदवी सैय्यद दियानतहुसैन नायब तहसीलदार हिसामपूर।

इन अर्ज़ियों के पाने के बाद और ख़ास कर अपनी तारीफ़ देखकर मि: पिटर्सन को बहुतही गुस्सा आया और सब अर्जीयां चाक कर डालीं और बन्देखुदा की अर्ज़ियों का क़तई एतबार उनके दिलसे जाता रहा और उस रोज़ से उन्हों ने अहद कर लिया और फिर कोई गुम नाम अर्ज़ी उन्होंने न पढ़ी और हमेशा चाककर डालते थे।

इसमे शक नहीं की यार लोग अपने जोड़ मे कामयाब हुये और बन्देखुदाओं का ज़ोर खुदा खुदा करके टूट तो गया लेकिन ग़रीब दियानतहुसैन उस अर्ज़ी को पाकर बहुतही परेशान हुये और उनसे कुछ बन न पड़ी सिवाय इसके कि

थे और फ़ीरोज़नगर आये और साहब डिप्टी कमीश्नर बहादुर से मुलाकात की। साहब बहुतही इखलाक से मिले, बरामदे तक लेने आये, हाथ मिलाया। ड्राइङ्ग रूम में ले गये और वहां बड़ी देरतक दोस्ताना बातें करते रहे—

साहब—"वेल दियानतहुसैन! इस ज़िले के लोग बहुत शरीर मालूम होते हैं, हज़ारों झूठी अर्ज़ियां आता है"।

दियानतहुसैन—"हां एक मेरी निस्बत भी आई थी जिसको आपने मिहर्बानी से मेरे पास भेज दिया था और शायद आप समझ सकते हैं कि वह मेरे किसी दुश्मन् का फेल था"।

साहब—"ओ बेशक हमको ज़रा ख्याल नहीं, एक हमारे ऊपर भी गुज़रा और एक डिलन साहबपर—डिलन साहब और रानी चन्दापूर से आश्नाई लिखा था—हम जहां तक जानता है डिलन् साहब कभी रानी साहबा के घर तक भी नहीं गया"।

दियानतहुसैन—"इसका सबब मेरे ज़ेहन में यह आता है कि पहिले दो एक अर्ज़ियां आपके पास असल हालात की गुज़रीं और आपने शायद उन पर तवज्जह भी की, लिहाज़ा आपके दिल से बन्दे खुदा की अर्ज़ियों का एतबार उठाने के लिये यह फ़िक़रेबाज़ी की गई, कि इस क़िस्म की बेहूदा अर्ज़ियां आपकी ख़िदमत में रवाना की गईं मगर जो कुछ हो मेरी राय में बन्दे खुदा की अर्ज़ियों पर तवज्जह करना एक फ़ज़ूल बात है; यह एक ऐसी आसान बात है कि जिसके करने में लोगों को ज़रा भी पसोपेश नहीं होता—मि: पार्कर कभी ऐसी अर्ज़ियों पर तवज्जह नहीं करते थे।

साहब—"ओ! यस! आप बहुत सच कहता है हम पहिले से जान गया था कि यह अमला लोगों की हरमज़दगी है—हम अब बन्देखुदा की अर्ज़ी पर कुछ तवज्जह नहीं करेगा। दियानतहुसैन! हम तुमको बहुत जल्द तहसीलदार देखेगा—चिरोंजीलाल को अब पेन्शन लेना चाहिये, वह बहुत बुड्ढा है"।

दियानतहुसैन ने बहुत शुक्रिया अदा किया और रुखसत हुये।

—***—

पन्द्रहवां बाब।

मिर्ज़ा फ़तहबेग की तलाशी।

मि: हावर्ड फ़ौरन् जेल से अपने बँगले

पर आये और दो तीन कांस्टेबु और एक इंस्पेक्टर ध्यानसिंह को लैन से लेकर रवाना मज़कूर हुये। फौरन् हैदरगंज में पहुंचकर मिर्ज़ा फ़तहबेग साहब वकील का घर घेर लिया और मौलवी क़ुतुबुद्दीन हुसैन और लाला गंगानरायन दो मुअज़्ज़ीन बाशिन्दगान महल्ला को बुलवाकर मिर्ज़ा साहब के मकान की तलाशी ली — कपड़ों की सन्दूक में वह चादर काश्मिरी बरामद हुई। मि: हावर्ड उसको देखतेही मारे खुशी के फूल गये और मिर्ज़ा साहब के आये हवास गायब हुये कि ऐ खुदा यह क्या बला नाज़िल हुई — मिर्ज़ा साहब ने आहिस्ता आहिस्ता अपने ऊपर आयत अलकरसी दम् करना शुरू किया —

साहब सुप०—"वेल वकीलसाहब! आप यह दुशाला कहां पाया?"

वकील—"हुज़ूर किसी मुवक्किल ने शुकराने में दिया था, मगर मुझे नाम याद नहीं"।

सुपरिटेण्डेण्ट—"मिर्ज़ा! तुम झूठ मत बोलो, हमको पूरा किस्सा मालूम हो चुका है, और तुम्हारे वास्ते बहुत खराबी का दिन आनेवाला है"।

मिर्ज़ा साहब—"हुज़ूर मालिक हैं और मैं अदना गुलाम — मैं कानून से वाकिफ़ होकर कोई फेल खिलाफ़-कानून नहीं कर सकता?"

सुपरिटेण्डेण्ट—"चुप रहो तुम ऐसा बेईमानी किया, कि कोई बदमाश भी नहीं करता — अच्छा तुम यह बोलो कि सैय्यदानी को क्योंकर क़ैद कराया"।

मिर्ज़ा साहब मारे खौफ़ के थर थर कांपने लगे और बोले खुदावन्द नेयमत, वह चोर उचक्की और बदमाश थी उसने मेरे नौकर की अंगूठी चुराली। मैंने पुलिस में इत्तला की, जमादार दीनदयाल साहब ने तहक़ीक़ात की, हस्ब ज़ाब्ता चालान हुई, तहसीलदार साहब के इजलास से वह सज़ायाब हुई?"।

सुपरि०—"दिनदयाल ने चालान किया, अच्छा अब हम आपको और उस को दोनों को चालान करेगा।

मि: हावर्ड ने उसी वक्त दुशाला अपने पास रख लिया और वकील साहब को मय ईटू व गवाहान ईटू व दीनदयाल हेड कांस्टेबु को थाने से बुलवाकर कोठी पर ले गये और वहां साहब डिप्टी कमि-

(अ)र बहादुर और डाक्टर को बुलवाया और कारवाई शुरू हुई। मिर्ज़ा फ़तहबेग बकील का सब से पहिले इज़हार हुआ। वह सब मामान देखकर कुछ ऐसे भिटपिटाये कि उन्होंने कुल किस्सा साफ़ साफ़ बयान कर दिया—सैय्यदानी का दुशाला बेचना, उसका तकाज़ा करना, मिर्ज़ा साहब का बुरा मानना, दीनदयाल का इतफ़ाक़िया आना, चोरी का मुकद्दमा क़ायम करना, तहसीलदार साहब का बुढ़ी को क़ैद करना कुल हाल सिलसिलेवार बयान कर दिया। जब वकील साहब अपना बयान खतम कर चुके तो दीनदयाल को भी गुस्सा आया और उसने भी कुल हाल बयान किया और कहा कि हम अकेले इस मुकद्दमे के बनानेमें शरीक नहीं थे बल्कि हमारे दारोग़ा और मिर्ज़ा साहब असल बानी मबानी थे। सुनार को खास मिर्ज़ा साहब ने बुलाया तब आया, जिसने अँगूठी की शिनाख्त की और तमाम गवाह मिर्ज़ा साहब ने खुद बुलाये। इसके बाद मीर खादिमअली की बेवा तलब की गई उनका इज़हार हुआ उन्होंने डोली में बैठकर अपना इज़हार लिखाया और वह चादर शिनाख्त की और सैय्यदानी की सफ़ाई बयान की, कुल वाक़यात बयान करने पर सैय्यदानी की तसदीक हुई। तहसीलदार साहब का भी इज़हार लिया गया, उन्होंने अपना लाइल्मी बयान की, चूंकि उस दिन साढ़े आठ बजे रात तक इस मुकद्दमे की कारवाई होती रही और अभी बहुत से इज़हारात बाक़ी रह गये थे, लिहाज़ा मुकद्दमा दूसरे दिन के वास्ते मुलतवी होकर ग्यारह बजे से फिर पेश हुआ कि मि: डिलन और डाक्टर साहब भी आ गये॥

साहब डिप्टी कमिश्नर—"गुड मॉर्निङ्ग।

डिलन—"मेरे आनेसे तुम्हारा कोई हर्ज तो न होगा"।

साहब—ओ! बिलकुल नहीं आज बदमाशों का मुकद्दमा मेरे साम्हने पेश है इस गरीब बुढ़ी औरत पर ऐसा ज़ुल्म हुआ कि जिस्को ख्यालकरने से रोंगटे खड़े होते हैं। मिर्ज़ा ने शरारतन् इस्तगासा किया पुलिस ने बेईमानी से चालान किया, बेईमान तहसीलदार ने बेइन्साफी से सज़ा दी। जेलवालों ने हरमज़दगी से उस पर ज़ुल्म किया—डाक्टर साहब ने मिहर्बानी से मुझको इत्तला दी और

मि: हार्वर्ड ने बड़ी लियाकत से कुल मुकद्दमे को फ़ैसला कर दिया और कुल सबूत बहम पहुंचा दिया ।

डिलन—"मैं बहुत दिनों से कुदरत हुसेन को बेइन्साफ़ जानता था । मैंने सारंस में एक रास्ता चलनेवाले को मारा था और उलटी नालिश उस ज़मींदार पर करदी थी । तहसीलदार ने बिलकुल मेरी खुशामद से गो कुछ भी सबूत न था एक हफ़्ता कैद कर दिया था ।

मि: हार्वर्ड—डाक्टर साहब, तुम्हारे वास्ते बड़ी नेकनामी इस मामले में बढ़ी है और बेशक तुमने बहुत अच्छा काम किया" –

डिलन—इस बुढ़िया का पहिले क्या बयान हुआ था ?"

साहब डि० क०—मुंशी ! बुढ़िया का बयान पढ़ो जो तहसीलदार के सामने हुआ, और बुढ़ी तुम सुनती जाओ ।

मुंशी जी ने पहिले पुलिस के सामने का बयान यों पढ़कर सुनाया – मैं कौम की रंगरेजिन हूं और शाहजहांपूर में मेरा घर है" ।

बुढ़ी—"तेरे मुंह में ख़ाक ! ख़ुदा तुझे ग़ारत करे ! मैं रंगरेजीन हूं कि सैयदानी ! मेरा पुख़्ता मकान मीरांसराय में खड़ा है, मेरी नार यहीं गड़ी है—लड़कपन से इतनी उम्र इसी शहर में हुई है, मुझे शाहजहांपूर को क्या जानूं" ।

अंगरेज़ लोग सब कहकहा मारकर हंस पड़े और साहब डिप्टी कमिश्नर ने मुंशी से कहा अच्छा पढ़ो—

मुंशीजी—"मैं भीख मांगते २ इस शहर में आ निकली आज तीसरा फ़ाक़ा है कि दाना नसीब न हुआ" ।

बुढ़ी—ऐ ! खुदा तुझे ग़ारत करे ! मेरे दुश्मन भीख मांगें, मेरे सुइर्ई भीख मांगें तुझे पहिनने को कपड़ा औ मरने पर कफ़न नसीब न हो ! मेरा पहाड़ सा बेटा मौजूद मैं काहे को भीख मांगूं –

बुढ़िया के इस तकरीर का अंगरेजों के दिल पर पूरा असर हुआ और उसी वक़्त सब हुक्काम मैं फ़रीकैन-मुकद्दमा शहर तशरीफ़ लेगये और वहां जाकर देखा तो वाक़ई एक पुराना गिरा पड़ा पुख़्ता मकान सैयदानी का मौजूद था और उसकी बहू घर में थी और अड़ोस पड़ोस के आदमीयों ने सैयदानी की इज्ज़तदारी

और मैकबलगी बयान की। साहब मजिस्ट्रेट को इस तहक़ीक़ात मौक़े के बाद बहुतही गुस्सा आया और इस हद का रंज हुआ कि जिसका अन्दाज़ा सुनने से नहीं हो सकता। बाद तहक़ीक़ात मौक़ा के मुक़द्दमा दूसरे दिन के लिये मुलतवी हुआ और मुहर्रिर जुडिशियल तहसील दूसरे दिन तलब किया गया और सैय्यदानी को अपने घर जाने की इजाज़त दी गयी॥

उधर तो यह मुक़द्दमा बर्पा था और इधर तमाम शहर में एक हंगामा मचा हुआ था। घर घर इसी मुक़द्दमे का तज़किरा, जहां जाइये यही रोना। तमाम लोग अपने २ मकानात पर ख़ौफ़ज़दा थे और बेचारे तहसीलदार के घर में तो तीन दिन से चूल्हा भी न जला था। मसजिदों में दुआख़ानियां होती थीं, दीनदयाल के यहां छ सात पण्डित पूजा करते थे और हुक्काम की नाराज़गी इस हद को बढ़ी हुई थी कि कोई वकील भी मारे ख़ौफ़ के पास खड़ा न होता था। बेचारे तहसीलदार हर शख़्स की ख़ुशामद करते थे, सैय्यदानी के राज़ी करने की तदबीरें की गईं मगर वह अपनी मोती सी आबरू जाने पर हज़ारहां बेशक़ीमत मोतियों की भी परवाह न करती थी। बेचारे क़ुदरतहुसैन इन्क़िलाब ज़माने में ऐसे परेशान व हैरान हुये कि—

दुश्मन तो दुश्मन दोस्तों ने भी मिलना छोड़ दिया कोई हमदर्द न था। हर शख़्स हँसने को आंधी; अलबत्ता जो कुछ वज़ादारी की वह शिरिश्तेदार साहब कलेक्टरी यानी मीर महम्मद हसन साहब जौनपुरी ने, लेकिन वज़ादारी भी ख़ाली अज़ इल्लत न थी। एक हज़ार रुपया नक़द शिरिश्तेदार साहब ने ठहराया था कि अगर पूरे तौर पर सफ़ाई हो जावे तो यह रकम दी जाये, लेकिन अफ़सोस शिरिश्तेदार साहब का कुछ भी बस नहीं चलता था और मामले की सूरत ऐसी पेचीदा हो गई थी कि सुलझना दुश्वार था—"मरज़ बढ़ता गया ज्यों ज्यों दवा की"—

एक दिन बेचारे तहसीलदार साहब डिप्टी शौकत हुसैन साहब के घर गये इस उम्मेद से कि डिप्टी साहब से मशवरह लें और उनकी मदद चाहें, चुनांचे यह गुफ़्तगू हुई—

डिप्टी साहब—"जनाब तहसीलदार

साहब अफ़सोस है कि आपका मामला बहुत पेचीदा हो गया, आपने पहिले इसका ज़िक्र मुझ से नहीं किया वर्ना इसकी नौबत न आती कल करीब दो घंटे तक आपके मामले में कोलूह वाले साहब से मुझ से तज़किरा रहा—वह भी बहुत अफ़सोस फ़र्माते थे और मैंने भी जो जो ज़बान ने यारी दी जी खोलकर आपका ज़िक्र किया। मगर तहसीलदार साहब इस में भी शक नहीं कि आपने नादानी बहुत की, सैय्यदानी एक मशहूर आदमी थी आपने उसको पहिचाना तक नहीं?"—

महम्मदबक्स नाजिर मुंसफी—"हुज़ूर गज़ब नादानी हुई ये बेचारे तहसीलदार सीधे आदमी, इनको पुलिस वालों ने मिलकर तबाह किया"—

शेखफितरतहुसैन—"अब ये वे हुज़ूर के सम्हाले सम्हल नहीं सकते—हुज़ूर इनकी दस्तगीरी करें और इस वक़्त जो नाम हुज़ूर का इस ज़िले में है दूसरे का नहीं—एक डिप्टी ब्रजलाल साहब भी तो हैं कोई पूछता भी नहीं कि किस खेत की मूली है"—

डिप्टी साहब—"(मुसकुरा कर) मुझको कुछ उज्र नहीं मैं तो हमेशा अहबाब का खैरख़्वाह रहता हूं और कोलूहु वाले साहब से पूरा तज़किरा हो गया, आप इतमीनान् फर्माइये तहसीलदार साहब आप ज़रा भी न घबराइये। हाकिम की ग़लती किससे नहीं होती बड़े साहब के फ़ैसले कमिश्नरी में मन्सूख होते हैं, कमिश्नरी के फ़ैसले जुडिशली में मन्सूख होते हैं, फ़ैसले का मंसूख होना कोई जुर्म नहीं हो सकता, अगर मौका हो तो आप (आहिस्ते से) पादरी साहब के यहां भी हो आइये, वह बड़े नेक आदमी हैं उनका कहना (और भी आहिस्ते से) सब हुक्काम मानते हैं"—

हमारे मुसीबत के मारे मियां कुद्रत हुसैन जो और फ़िक्र करनेवाले थे कोलूहवाले साहब के भरोसे पर उससे भी ग़ाफ़िल हुये और सुबह तड़के हसब सलाह डिप्टी साहब के पादरी साहब की सलाम को तशरीफ़ लेगये। इत्तला हुई पादरीसाहब ने फर्माया कि हम साढ़े ग्यारह बजे मिलेंगे उस वक़्त तक बाहर बैठें; और इधर मुकद्दमा दस बजे पेश होनेको था अब ये बेचारे अजब अशोपंज में पड़े—उधर इत्तला करा चुके, बेमुलाकात किये जा नहीं सकते और इधर

साहब डिप्टी कमिश्नर बहादुर की नाखुशी का खटका । इस उधेड़बुन से बेचारे दरख़्के नीचे टहलने लगे, जो निकलता "भाई साहब ज़रा इधर आना साहब इस वक़्त क्या कर रहे हैं" । वह जवाब देता कि 'गुसलखाने में हैं'। दूसरा निकलता, "जनाब जमादार साहब हमारी मुश्किल आसान कीजिये वल्लाह दस बजे कचहरी जाना है आबरू पर बनी हुई है ! "वह जवाब देता अजी तो आपके वास्ते साहब अपना काम छोड़ देंगे मेम साहब बैठी हुई हैं हम कैसे इत्तला कर सकते हैं ।

इतने में साइस निकला 'अजी गिरास कट साहब ! मेम साहब कबतक अपने कमरे में जांयगी" जवाब मिला—"हम गिरासकट नहीं हैं साइस हैं ज़रा जबान सम्हाल के बोला कीजिये" ।

तहसीलदार साहब—" भाई कसूर हुआ, हमको मालूम न था मेम साहब कब तक जांयगी" !

साईस—आया से पूछिये, हम क्या जानें" !

अलगरज साढ़े दस बज गये और डिप्टी कमिश्नर साहब के इजलास में तहसीलदार साहब की पुकार शुरू हुई और तहसीलदार साहब ग़ायब ! चपरासी पर चपरासी दौड़ा जाता है न तहसीलदार कचहरी में मिलते हैं न मकान पर हैं, कहीं पता नहीं—साहब मारे गुस्से के मेज़ पीट रहे हैं और बार बार चिल्लाते हैं और यहां तहसीलदार साहब पादरी साहब की मुलाकात की फ़िक्र में है, दरख़्तों के नीचे ठंढी हवा खा रहे हैं। जब ग्यारह बजे भी तहसीलदार साहब न मिले, साहब कलेक्टर ने, इसब ज़ैल रूबकार लिखवाया—

रूबकार

हमने बहुत साफ़ अलफाज़ में कुद्रत हुसैन तहसीलदार हुज़ूर तहसील को फहमाइश करदी थी कि आजकी तारीख इस रोज ठीक दसबजे कचहरी में हाजिर होना ताकि उसके रूबरू मोहर्रिर जूडिशियल का इज़हार तहरीर कियाजावे लेकिन वह अब तक हाज़िर नहीं हुआ और उसने सरीह हमारी अदूल हुक्मी की लिहाज़ा हुक्म हुआ कि—कुद्रतहुसैन आज की तारीख से मुअत्तल समझा जावे और सैय्यद दियानतहुसैन नायब तह-सिलदार हिसामपूर कायम मुकाम तहसिलदार हुजूर तहसील मुकर्रर

लिये जावें और बज़रिये सवार अह-काम जारी हों"।

इस हुक्म के होतेही तमाम कचहरी में एक ज़लज़ला मच गया और हर शख़्स को एक सकता सा होगया। इत्तफ़ाक़ से सैयद दियानतहुसैन उस दिन फीरोजनगरही में आये हुये थे लिहाज़ा सवार के जाने की नौबत भी नहीं पहुंची और उसी दिन चार्ज हो गया –

अब सुनिये, उधर ख़ुदा २ करके साढ़े ग्यारह बजे पादरी साहब से मुलाक़ात हुई –

पादरी सा०–"वैल तहसीलदार क्या हाल है आप कभी इंजील मुक़द्दस भी पढ़ता है?"

तहसीलदार–"हां हुज़ूर पढ़ता क्यों नहीं हूं यह भी तो किताब आसमानी है"

पादरी–"हम अपनी मेम साहब को आप के घर भेजा करेगा कि वह आप की बेगम साहबा को नेक राह बतलावेगी और यह मसीह के गीत की किताब हम आपको देता है इसको आप ज़रूर पढ़ियेगा, बहुत अच्छा चीज़ है"।

तहसीलदार–"(हाथ जोड़कर) ख़ुदावन्द मैं नाकर्दह गुनाह एक मुसीबत में गिरफ़्तार हूं, एक चोर को मैंने सज़ा दी अब उसके कहने पर बड़े साहब मुझ से बरहम हैं अगर हुज़ूर मुझको इस बला से नजात दिलावें तो जो हुज़ूर हुक्म दें बजालाऊं, हुज़ूर बड़े साहब से मेरी सिफारिश करदें तो ज़रूर मेरी मुश्किल आसान होगी। हुज़ूर मालिक व मुरब्बी हैं सिवा हुज़ूर के कहां जाऊं।

पादरी–यह क्या आप गुस्ताख़ी का बात बोलता है, अब आप मुक़द्दमा में है तो किसवास्ते हमसे मुलाक़ात किया हम ऐसे आदमी से नहीं मिलता है, मसीही मज़हब उसके वास्ते है जो ख़ुशी से ईमान लावें मसीही मज़हब के लालच से किसी की सिफारिश नहीं कर सकते, अच्छा अब आप रुख़सत हों।

यह कहकर वह अपने दूसरे कमरे में चले गये और तहसीलदार साहब मसीही गीत की किताब बग़ल में दाबे और लाहौल पढ़ते निकले। घड़ी जो देखते हैं तो बारह बजने में दस मिनिट बाक़ी हैं; होश उड़ गये, बेतहाश घोड़ा दौड़ाकर कचहरी आये जैसेही

घोड़े पर से उतरे कि एक चपरासी ने बढ़कर खबर दी कि हुजूर कहां थे सब ढूढ़ मारा कहीं आप न मिले, साहब ने मुअत्तल कर दिया"।

तहसीलदार--"ऐं मुअत्तल कर दिया। अफ़सोस मैं पादरी साहब के यहां सुबह से मौजूद था, डिप्टी साहब ने कहकर मुझे खराब किया, हाय! मैंतो कहीं का न रहा। अब तमाम कचहरी के लोग, वकील मुख़्तार ज़िमीदार असामी अमला सब तहसीलदार के गिर्द हैं और सब लानत मलामत करते हैं कि आप कहां चले गये थे। यह बिचारे बत्तीस दांतों में ज़बान हो रहे थे सबकी बातें सुनते थे। ठीक एक बजे साहब ने फिर तलब फ़र्माया।

साहब--"तहसीलदार तुम कहां था और किसवास्ते हाजीर नहीं हुआ"?

तहसीलदार--हुजूर मैं पादरी साहब के यहां गया था, वहीं देर होगई"।

साहब--"वेल चाहे आप पादरी साहब के पास जाये चाहे मौलवी साहब के पास जाये यह उज्र नहीं सुना जा सकता, हमने आपको मुअत्तिल किया।

तहसीलदार--"हुजूर मुझको डिप्टी साहब ने खराब किया इतनी उम्र हुई मैं तो कभी पादरी साहब के यहां नहीं गया था आज काहे को जाता। डिप्टी साहब ने भेजा कि हुजूर से उनसे रब्त है उनके ज़रिये से मैं खता मुआफ़ कराऊं"।

साहब--"अब मुकद्दमा पेश हो, मोहर्रिर जुडिशियल का इज़हार शुरू हुआ--

'महम्मदकरीम वल्द अबदुलरहीम कौम शेख साकिन जहानाबाद उम्र तख़मीनन् ४० बरस बहलफ़--

"मैं इस ज़िले में ग्यारह बरस से आया हूं, पहिले तहसीलदार कुदरतहुसैन साहब का खानगी मोहर्रिर था यह मेरे चाचाज़ाद बहनोई होते हैं--उन्ही की सिफ़ारिश से मैं जुडिशियल मोहर्रिर मुकर्रर हुआ तीन बरस से इस तहसील में हूं--इस सैय्यदानी का मुकद्दमा जब पेश हुआ मैं मौजूद था, मेरे रूबरू उसका बयान तहरीर हुआ था--उसने जुर्म से इकबाल नहीं किया था लेकिन सज़ा दर असल तहक़ीर-अदालत में हुई थी दुशालेवाला किस्सा मुझको पहिले नहीं

मालूम हुआ था मगर जब मीर खादिम अली की बीबी को तहसीलदार अपने घर बुला लाये तब कुल हालात मालूम हुये थे, और तहसीलदार साहब ने भी सुना था—मिर्ज़ा फ़तहबेग के बुलवाने का इरादा भी था· मगर मुकद्दमा उठ खड़ा हुआ।

सवाल अदालत—"इज्जिन किस तरह से तहसीलदार साहब के घर में हैं?"

जवाब—"इज्जिन बुड्ढी आदमी हैं हुज़ूर बदगुमान न हों और जनाब हमशीरा साहबा खुद तहसीलदार की निगरानी रखती हैं"।

साहब—"क्यों बकते हो, सवाल का जवाब दो"।

जवाब—"हुज़ूर दस हज़ार का बीमा है, रुपया अभी वसूल नहीं हुआ, कारखाई बहुत हो रही है,कम्पनी को लिखा गया है"।

साहब—"कैसा रुपया?"

जवाब—"खुदावन्द वही खादिमअली के ज़िन्दगी के बीमे का इज्जिन साहबा ने तहसीलदार को बख्श दिया"।

बुढी सैय्यदानी—"हुज़ूर यह झूठा झूठा है, उस बेचारी बेवा को कानोंकान खबर नहीं। भले आदमी के ज़िन्दगी का कहीं बीमा होता है?"

साहब—"सैय्यदानी तुम चुप रहो हम सब पूछ लेगा"। अलकिस्सा कुल हालात मोहर्रिर जुडिशियल ने साहब से मुफ़स्सल बयान किये और साहब ने इज्जिन की तलबी का फिर हुक्म दिया"

—***—

सत्तरहवां बाब।

फ़ीरोजनगर में हैजा।

इधर तो नये हाकिम की तेज़मिजाज़ी की आफ़त कुछ वबा से कम न थी उधर दर असल फ़ीरोजनगर में वबा की बीमारी फैली। हर रोज़ सदहा मौतें होने लगीं, बाज़ घर के घर साफ़ हो गये। खान्दान के खान्दान बेचिराग़ हो गये। मीर महम्मदहुसैन साहब जौनपुरी सिरिश्तेदार कलेक्टरी एक शक्की आदमी थे इसकिस्म की बीमारियों से बहुत डरते थे हर दर्वाज़े पर सिरके की झाड़ियां लटकाई गईं, लीखमस्तन् की चौकियां मकानों में चस्पां थीं कहीं काफ़ूर रखा

था कहीं क़ारोड़ाइन की शीशियां जमा थीं तमाम मकान इस से मुअत्तर किया था और पूरा पूरा मीरसाहब ने वही सामान किया था जो मौलाना मज़ीर अहमद साहब बहादुर ने नसूह के हालत में तौबतुल्नसूह में तहरीर फर्माया है।

मीर महम्मदहुसैन एक नौकरीपेशा आदमी थे घर में कोई ज़िमींदारी वग़ैरह न थी, सिर्फ़ नौकरीही पर दारोमदार था. अधेड़ उम्र के आदमी थे और बहुत ही साफ़ सुथरे तौर से रहते थे, आमदनी से ख़र्च ज्यादा था गो ग़ैर मुहतात थे लेकिन उनकी मुसाफ़िरनवाज़ी औ बिरादर पर्वरी का शुहरा था। हर रोज़ दस पांच मेहमान उनके घर आते और उन्हीं के यहां क़याम फर्माते थे, रोटी देने में मीर महम्मद हुसैन का ख़ास नाम था। बेचारे के पास कुछ बचत न होती थी। 'चार जो पाये आठ उड़ाये ख़ाली हाथों घर को आये' की मसल पूरे तौर से उन पर सादिक़ थी। एक बेटा अठारह उन्नीस बरस की उम्र का अरबी पढ़ता था, फ़ार्सी की तकमील हो चुकी थी फ़िक़ा और मन्तिक़ पढ़ता था। एक बेटी पन्द्रह बरस की क़ारी थी बहुतही क़ाबिल फ़ार्सी और अरबीकी तालीम उस लड़की को हुई थी। जैसा कि हम पहले बतला चुके हैं उसकी लियाक़त और तमिज़दारी और शीज़हुसन को उस शहर में शुहरत थी बल्कि यह भी सुना गया था कि जब शाहज़ादा साहब फ़ीरोजनगर तशरीफ़ ले गये तो जनाब शहज़ादी साहबा ने बराह मराहम ख़ुसरुआना उस लड़की की लियाक़त सुनकर उसकी मुलाक़ात का शौक़ ज़ाहिर फर्माया था और बहमराही मि: पार्कर व मिस कालन जो जनाना मिशन की सुपरिण्टेण्डेण्ट थीं ख़ुद तशरीफ़ लेजाकर मीर महम्मदहुसैन के ग़रीबख़ाने को इज्जत बख़्शी थी, और जो दस्ताने ख़ास अपने हाथ के बनाये हुये मीर महम्मद हुसैन की साहबज़ादी ने पेश किये थे वह हुज़ूर शाहज़ादी साहबा ने बहुत पसन्द करके क़बूल फ़र्माये थे। जब फ़ीरोजनगर में वबा की कसरत हुई और तावड़तोड़ ख़बरें आने लगीं तो मीर महम्मद हुसैन ने शहर छोड़ देने का इरादा किया और साहब डिप्टी कमिश्नर से दो महीने की रुख़सत की दर्ख़ास्त की मगर चन्द वजूह से उन की रुख़सत नामंजूर हुई। उस रोज़ से

वह अपने मरने की बाबत पेशगोइयां किया करते थे और सब लोग कहते थे कि मुंशीजी आपको तो वहम हो गया है, ग़िज़ा भी कम खाने लगे तमाम घर में चावल पकने की मुमानियत कर दी अरहर की दाल कोई ख़ाब में भी देखने न पाता था सिर्फ़ लौकी की तरकारी और खमीरी रोटी घरभर की ग़िज़ा थी। एक रोज़ डिप्टी शौकतहुसैन साहब के यहां दावत हुई और मीर महम्मद हुसैन साहब को भी नवेद आया था। मुंशी कुदरतहुसैन साहब तहसीलदार मुअत्तलशुदा, सैय्यद दियानतहुसैन क़ायम मुक़ाम तहसीलदार, मीर महम्मदहुसैन साहब, व नाज़िर महम्मद बख़्श साहब और मियां फ़ितरतहुसैन शरीक़ दावत थे - दावत का सबब कुछ साफ़ नहीं मालूम हुआ लेकिन सुना गया कि शायद डिप्टी साहब के बेटे की सालगिरह थी। नाच व गाने का भी जलसा था, शहर की सब रंडियां बुलाई गई थीं। साढे सात बजे सब लोग जमा हुये और बातें शुरू हुई। मियां कुदरत हुसैन अभी तक नहीं आये थे॥

डिप्टीसाहब—"ज़रा कुदरतहुसैन की हिमाकत को आपने मुलाहज़ा फ़र्माया, मुक़द्दमा पेश और आप पादड़ी साहब की मुलाक़ात को गये और उसपर तुर्रा यह कि साहब से मेरा नाम लिया।

महम्मद बख़्स—"अजी हुज़ूर जब आदमी पर शामत सवार होती है तो ऐसेही हरकात ज़ुहूर में आते हैं"।

मीर महम्मदहुसैन-"जनाब मेरे होश उड़ गये थे, ऐसे आदमी को सलाह बताना भी ग़ज़ब है (डिप्टी साहब के कानसे मुंह मिलाकर) मगर खुदाने बड़ा फ़ज़्ल किया कि उस पागल ने किसी का नाम नहीं लिया, खाली डिप्टी साहब कहा और मैंने बादको साहब से कहदिया कि डिप्टी ब्रजलाल ने उनको भेजा था"।

डिप्टी साहब—(बहुत ज़ोर से कहकहा लगा कर और हाथ मिलाकर) वल्लाह! भई खूबही मौके की हुई, खुदाने बड़ा फ़ज़्ल किया आपसे तो मुझको यही उम्मेद थी और मैंने भी तो आपके बारे में साहब इञ्जीनियर से वह वह तज़किरे किये हैं कि इनशाअल्ला बहुत जल्द नतीजा तक ज़ुहूर में आयेगा।

मीर महम्मदहुसैन—(डिप्टी साहब के कान में) यह लौंडा तो खूबही तहसीलदारी पा गया - मेरी बड़ी हक़तलफ़ी हुई।

डिप्टी साहब—(बहुत आहिस्तेसे) रह नहीं सकते, जगह मुस्तकिल तौर पर ख़ाली होने दीजिये साहब से लड़ कर आप को कराऊंगा। बाद इसके (दियानत हुसैन की तरफ़ मुख़ातिब होकर और शिरिस्तेदार साहब की रान में चुटकी लेकर) वल्लाह ! आपकी तकर्रुरी से जो ख़ुशी हुई है दिलही जानता है ख़ुदा तुम्हें उस जगह पर मुस्तकिल करदे कि हम इन आंखों से तुम्हारी तरक्की देखें ”।

मीर महम्मद हुसैन—“ है है जबमैं आपको देखताहूं राजा साहब मरहूम याद आ जाते हैं, वल्लाह क्या नेक शख़्स था माशा अल्ला यह भी नेक है मगर मिज़ाज में ज़रा नेचरियत है सो वह वक्त की तासीर है, मैंने जनाब डिप्टीसाहब बड़े मार्के से आपको मुकर्रर कराया है। साहब बहादुर सितमगरपूर से कोई अपना आबुर्दा बुलवाया चाहते थे। जब मैंने अर्ज़ किया कि ज़िला के लोगों का हक़ है, तब मिर्ज़ा रज़ाअली साहब नायब तहसीलदार हज़रतपूर को तजवीज़ किया। मैंने फिर अर्ज़ किया कि मि: पार्कर साहब बहादुर मीर दियानतहुसैन साहब को करना चाहते थे तब बदुख़्वारी तमाम मुकर्रर फ़र्माया। ख़ुदा का शुक्र है कि इन हाथों से नायब वासिल नवीसी से लेकर तहसीलदारी तक के पर्वाने लिखे गये अब ख़ुदा चाहेगा तो तुम्हारी मुस्तकली और डिप्टी कलेक्टरी की रूबकार भी लिखूंगा उसरोज़ मैं अपने हाथों को ख़ुद मुबारकबाद दूंगा ”।

सबलोग—इसमें क्या शक है आपकी ज़ात से यही उम्मेद थी और वल्लाह आप अपने साहबज़ादे से कम- इनको नहीं समझते।

डिप्टी साहब—मुझसे भी बहुत तज़किरा रहा और मुझको जबही यक़ीन था। अलहम्दुलिल्लाह! —इतने में कुदरतहुसैन साहब तशरीफ़ लाये, उनकी सूरत परेशान थी, कपड़े मैले और कई रोज़ से जो ख़िज़ाब नहीं किया था तो तमाम जड़ें दाढ़ी की खुल गई थीं।

मामूली साहब सलामत के बाद बेचारे एक किनारे बैठ गये, सबने मिल कर उनको बनाना शुरू किया और यह बेचारे परेशान व हैरान थे कि किस ग़ज़ब में मेरी जान फँसी।

महम्मद बख़्श—क्यों जनाब!यह पेशी के रोज़ आपको पादरी साहब के यहां जाने की क्या सूझी थी ”?।

तहसीलदार साहब—"जनाब वाला। मैं तो पागल होरहाहूं मेरे किसी फ़ेल पर हंसना अबस है, अब आप लोग दुआ फरमाइये कि खुदा मेरे हाले ज़ार पर रहम करे और यों तो जनाब आकबत कोई किसी की बखशवाता नहीं—"गर न जीते जी मेरे काम आयेगी। क्या यह दुनिया आकबत बखशायेगी।

डिप्टी सा०—"नहीं जनाब हसने का कौन मौक़ा है, खुदा सब पर फ़ज़्ल करेगा आप परेशान न हों"।

इतने में खाना आया और सबने सेर हो कर तनावल फर्माया, मीठे चावल भी थे संगीन पुलाव भी था, और बहुत से पुरतकल्लुफ खाने थे। शिरिस्तेदार साहब पहिले तो खाना खा गये अब पानी आया लगे बरफ़ तलाश करने, बरफ मौजूद न था, अब उनको खफ़कान ने घेरा कि चांवल हज़म क्योंकर होंगे, फिर आप जानिये वहम अपना असर दिखाता है, दो मिंट बाद दस्त और के शुरू हो गये, तमाम लोग दौड़ने धूपने लगे। शिकञ्जबी और गुलाब दिया गया और तरह तरह की दवाइयां एक के बाद दूसरी दी जाती थीं ज़रा भी आराम न होता था कि शिरिस्तेदार साहब डिप्टी साहब के घर से अपने मकान जाते। फ़ौरन् डाक्टर मेक्लेडी के बुलवाने को आदमी भेजा गया। मीर महम्मदहसन को फ़ौरन् अपने जीनेसे मायूसी हो गई थी और उन्होंने बचश्म पुर आब डिप्टीसाहब व मौजूदीन मौक़ेसे यह आखिरी गुफ़्तगू की "भाइयो, अब मैं न बचूंगा, मैं कोई जायदाद नहीं छोड़ता, मेरी बेटी हनोज़ क्वारी और बेटा बेकार है मेरे लड़के बाले जोरू बच्चे सब आपके सुपुर्द हैं मेरी यह आर्ज़ू है कि मेरी बेटी की शादी सैय्यद दियानत हुसैन"—बस इस कदर कहा था कि ज़बान बन्द होगई—उस वक्त तमाम जल्सा दरहम बरहम होगया, रण्डियां अपने २ घर चली गईं। तमाम शहर में इस बे वक्त मौत पर हलचल मच गई। हाय! हाय! क्या सामान था क्या होगया! कहां नाचकी तैय्यारियां थी या अब कफ़न् सीने को दर्जी की तलाश होने लगी सच है—

बयक् सायत बयक् लहज़ा बयक् दम—
दिगर गूंमींशवद् अवाले आलम जिस वक्त उनके खिदमतगार ने जाकर घर में खबर दी उनकी बीबी और बेटी की हालत काबिल बयान नहीं। वह बैन करके चूड़ियां बढ़ाना, ज़ेवर उतार उतार कर फेंकना,

सर पीटना चिल्लाना कयामत ढाता था उनकी बेटी का "हे! हे! मेरे अब्बा, अब मैं तुम्हें कहां पाऊं। यह अलफ़ाज़ कहकर रोना सुननेवालों के कलेजे शक करता था। उनकी बीबी का यह बैन कि "इस बेटी को अब कौन ब्याहेगा, हाय तुम तो चले गये आमिना को किस के सुपुर्द किया, हे हे बड़ा लाने के भी अर्मान पूरे न हुये"। ये अलफ़ाज़ थे कि दोस्त तो दोस्त दुश्मन को भी खून के आंसू रुलाते थे। अलकिस्सा उसी वक्त तजहीज़ व तकफ़ीन होकर साढ़े चार बजे शब को मुल्ला जुहर के बाग़ में दफ़न् किये गये और तमाम रिश्तेदारों व दोस्तों को बे सरो सामान छोड़ गये॥

मि: पिटर्सन को भी इस हादिसे का निहायत सदमा हुआ और उन्होंने भी बकमाल शरीफ़पर्वरी सैय्यद दियानत हुसैन क़ायममुक़ाम तहसीलदार को बुलाकर उनके तमाम इन्तिज़ाम खाना-दारी का हुक्म दिया और फ़िहरिस्त कर्ज़ा वगैरह मुरत्तब करने की हिदायत की—हिसाब के बाद सत्तरह सौ रुपया उनके ज़िम्मा बाज़ार का कर्ज़ निकला, लेकिन करीब २ इसी क़दर जायदाद भी थी। मि: पिटर्सन ने निहायत मेहरबानी से उनके पसमान्दगान को तस्कीन दी और उनके बेटे को नौकरी देने का वादा फ़र्माया। मीर मुहम्मदहुसैन की वफ़ात के दो तीन दिन बाद मि: पिटर्सन ने हस्ब तजवीज़ मि: पार्कर के लाला पर्वन लाल को सिरिश्तेदार कलेक्टरी मुकर्रर फर्माया और लाला खुशवक्त लाल वासिल-बाकीनवीस को मुहाफ़िज़दफ़्तर कलेक्टरी किया और सैय्यद ज़ाकिरहुसैन वल्द सैय्यद मुहम्मदहुसैन मरहूम को वासिल-बाकीनवीस सदर बमुशाहिरा तीस रुपया मुकर्रर फ़र्माया। अब मीर मुहम्मदहुसैन का खान्दान बहुतही उसरत के साथ सिर्फ़ तीस रुपये में बसर औक़ात करने लगा और मि: पिटर्सन की इस रहमदिली का हर छोटा बड़ा शुक्रगुज़ार हुआ। चूंकि मीर दियानतहुसैन साहब हसबुल हुकुम साहब कलेक्टर मीर मुहम्मदहुसैन साहब के कर्ज़ा वगैरह के इन्तिज़ाम में बहुत आये गये इसलिये मीर मुहम्मदहुसैन की बेवा और उनकी बेटी और मीर ज़ाकिरहुसैन सब उनके शुक्रगुज़ार थे और मीर दियानतहुसैन पूरी तवज्जह उनके माम-लात में करने लगे और दिन भर में एक दो मर्तबः वहां जाना इख़्तियार किया॥

—***—

सतरहवां बाब।

फ़ीरोजनगर का तख़्ता उलट गया।

तारीख मुऐयना पर दस बजे ठीक साहब डिप्टी कमिश्नर बहादुर तशरीफ़ लाये। मौलवी कुदरतहुसैन आठही बजे से कचहरी में मौजूद थे। कचहरी में वह हजूम था कि तोबाही भली। इजलास का कमरा और दोनों तरफ़ के बरामदे आदमियों से पुर थे। दीनदयाल हेडकांष्टेबू और तहसीलदार मुअत्तलशुदह बुलाये गये और हज्जिन का दुबारा इज़्हार शुरू हुआ। हज्जिन ने बीमे ज़िन्दगी के वाकियात से अपनी लाइल्मी बयान की लेकिन तहसीलदार साहब का आना और काग़ज़ात का मँगवाना और फिर अपने मकान पर ले जाना तस्दीक किया; और साहब बहादुर से यह भी ख़ाहिश की कि अब मैं तहसीलदार के मकान पर रहना नहीं चाहती। मेरा रुपया अगर कुछ मिलनेवाला हो मुझ को दिलवा दिया जाय। चुनांचे साहब बहादुर ने कम्पनी से इस बारे में खत किताबत करने का वादा फ़र्माया और बाद तहकीकात कामिल हस्ब ज़ैल हुक्म दिया॥

अपील सैय्यदानी मंजूर फ़ैसला अदालत मातहत मंसूख — सैय्यदानी जुर्म से बरी हो, हेड कांष्टेबू पर झूठा मुकद्दमा बनाने का मुकद्दमा कायम किया जावे और आज की तारीख से बर्खास्त समझा जावे, सबइंस्पेक्टर की निस्बत रिपोर्ट तबादला ज़िला गैर भेजी जाये, तहसीलदार बदस्तूर मुअत्तल रहें और रिपोर्ट बर्खास्तगी बहुजूर साहब कमिश्नर बहादुर की जाये और तहसीलदार ने जो दग़ाबाज़ी हज्जिन से बीमा के मामले में की उसका भी तज़्किरा किया जाये और मिर्ज़ा फ़तहबेग वकील आज की तारीख से वकालत से बर्खास्त किया गया और रिपोर्ट हाईकोर्ट में मुरसल् हो" —

बख़याल तवालत् हम पूरी कार्रवाई जो उन लोगों के खिलाफ़ हुई नहीं लिखना चाहते, सिर्फ़ मुख़्तसरन् नाज़रीन को इतना बतलाये देते हैं कि दिनदयाल हेड कांष्टेबू व सबूत जुर्म दो बरस की कैद हुआ और सबइंस्पेक्टर की तब्दीली ज़िला होशंगाबाद को हो गई, जेलर और बरकन्दाज़ जो बहुका डाक्टर साहब मुअत्तल हो गये थे वे लोग भी बर्खास्त हो गये॥

तहसीलदार साहब की निस्बत जो रिपोर्ट मि: पिटर्सन ने लिखी थी वह हम नाज़रीन को दिखलाना चाहते हैं—

"मिस्टर जानिब साहब डिप्टी कमिश्नर ज़िला फ़ीरोजनगर, बखिदमत साहब कमिश्नर बहादुर किस्मत मुजफ़रनगर—

साहबमन् मैं बतमल्लुक़ रिपोर्ट साबिक़ मुवर्ख: फ़लां अब मुफ़स्सल हाल क़ुदरतहुसैन तहसीलदार का अर्ज़ करना चाहता हूं—

२—मीर खादिमअली इस ज़िले में एक मुहाफ़िजदफ़्तर था जो मि: पार्कर के वक्त में मर गया उसकी बेवा जो हज्जिन के लकब से मशहूर है अब तक फ़ीरोजनगर में है पिछले दिनों उसने अपना एक दुशाला फ़रोख़ करना चाहा और मुसम्मात सैय्यदानी को जो एक बहुत मुअज्ज़िज़ लेकिन निहायत गरीब बुड्ढी औरत है दिया, उसने बज़ाहिरा धोखा खाकर सिर्फ़ ११) रुपये पर फ़तहबेग वकील के हाथ फ़रोख़ किया—फ़तहबेग ने एक कौड़ी भी उसकी क़ीमत अदा नहीं की।

३—मुसम्मात सैय्यदानी कई मर्तब: उस दुशाले की क़ीमत मांगने गई लेकिन फ़तहबेग ने कभी नहीं दिया, एक रोज़ फ़तहबेग से उसने सख़्त तक़ाजा किया यह बात फ़तहबेग को नागवार हुई और उसी बात पर फ़तहबेग ने उसे बेरहमी से मारा और हेड कांस्टेबल दीनदयाल की सलाह से जो इस ज़िले में एक मशहूर बदचलन पुलिस अफ़सर है अंगूठी के चोरी का झूठा मुक़द्दमा सैय्यदानी पर क़ायम किया और तहसीलदार क़ुदरतहुसैन के इजलास में चालान किया॥

४—मुझको पूरे तौर पर यक़ीन है कि हेड कांस्टेबल से लेकर तहसीलदार तक सब इस साज़िश से वाकिफ़ थे और सब ने वकील की खातिर से उस ग़रीब सैय्यदानी को तहसीलदार के हाथ से एक महीना क़ैद की सज़ा दिलाई। जिस बेरहमी से जेल में सैय्यदानी के साथ बर्ताव किया गया उसका हाल मिस्ल के मुलाहज़े से आपको मालूम होगा॥

५—डाक्टर मैकरेडी सिविलसर्जन ने अपनी लियाक़त और बेदारमग़ज़ी से सैय्यदानी की पूरी फर्याद मुझ तक पहुंचाई और मैंने बहुतही कामिल तहक़ीक़ात कर के सैय्यदानी को जुर्म से बरी किया और दुशाला हज्जिन को वापस दिला दिया। सैय्यदानी को मैंने अपने पास से पचास रुपये उस तकलीफ़ के मुआवज़े में दिया जो उसने ब्रिटिश गवर्मेन्ट में सर्कारी मुलाज़मान के हाथ से अंधाधुंध की बदौलत बर्दाश्त की॥

६—मेरी राय में सबसे ज्यादा क-

खुद इस मुकद्दमे में दीनदयाल हेड कांष्टेबल, फतहबेग वकील और तहसीलदार का है, मैंने फतह बेग का डिप्लोमा ले लिया और दीनदयाल को बर्खास्त करके फौजदारी सुपुर्द किया, जेलके लोग भी गालिबन्‌ बर्खास्त हो जांयगे। सबइंस्पेक्टर की चालचलन काबिल तहकीकात पाई गई, चुनांचे साहब सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिस ने उसके बारे में इलाहिदा रिपोर्ट की है। मैं खासकर यह रिपोर्ट तहसीलदार कुदरतहुसैन की बाबत भेजता हूं। यह शक्स निहायत बदचलन और गैरमातबर है मेरी राय में हर्गिज़ इस काबिल नहीं कि इतने बड़े वहदे पर रह सके इसलिये मैं सिफारिश करता हूं कि मुलाज़मत्‌ गवर्मेण्ट से वर्खास्त कर दिया जावे।

७—अगर यह सिफारिश मंज़ूर हो तो उसकी जगह सैय्यद दियानतहुसैन बी० ए० जो एक आली दर्जे का तालीमयाफ्ता आलीखानदान और नौजवान शक्स है और बिलफैल कायममुकाम तहसीलदार है मुस्तकिल किया जावे, उसके हालात से साहब कमिश्नर बहादुर खुद बखूबी आगाह हैं इस वास्ते मैं मुकर्रर अर्ज करना गैरज़रूरी समझता हूं—दियानतहुसैन गो इम्तिहान में कामयाब नहीं है लेकिन्‌ आइन्दा इम्तिहान में शरीक होने के वास्ते बखूबी तयार है मुझको उम्मेद है कि उसकी तकर्रुरी से गवर्मेण्ट और मुल्क दोनों को फायदा पहुँचेगा।

आपका ताबेदार
जी० पिटर्सन।

साहब कमिश्नर बहादुर ने साहब ज़िला से पूरा इत्तिफाक किया और रिपोर्ट गवर्मेण्ट में भेज दी और आखिरकार कुदरतहुसैन मुलाजिमत्‌ गवर्मेण्ट से इलाहिदा कर दिये गये और सैय्यद दियानतहुसैन मुस्तकिल तहसीलदार हुजूर तहसील मुकर्रर किये गये।

मुखलिफ़ अखबारों में इस तग़य्युर का तज़किरा शाया हुआ लेकिन आम राय इस मुआमले में साहब डिप्टीकमिश्नर बहादुर की तरफ़ थी और इस बेदारमग़ज़ी और रियायापर्वरी का एक शुहरा हो गया।

अखबार फीरोज़ ने जो एडिटोरियल नोट शाया किया यह काबिल मुलाहिजा नाज़रीन है, उसने लिखा कि "मि: पिटर्सन ने जिस बेदारमगज़ी और लियाकत से सैय्यदानी के मुआमले

को उठाया यह बहुत कुछ काबिल तारीफ़ है। गो हमारे कौम के एक जो इज्जत तहसीलदार और एक मुअज्जिज वकील व नीज़ दीगर अशखास को नुकसान पहुंचा लेकिन हमको उसकी कुछ परवाह नहीं। मजिस्ट्रेटी एक बहुत ज़िम्मेदारी का काम है, बहुत मतानत हिल्म बेतअस्सुबी और इनसाफ़ की उसमे ज़रूरत है, जो लोग अपने अख्तियारात को ऐसे बेहूदा तौर पर रायगाँ करें जैसा कि मौलवी कुदरत हुसैन ने सैय्यदानी के मामले में किया था बिलाशुबहा वे हर एक मलामत के मुस्तहक हैं। हम मि: पिटर्सन के अज़हद शुक्रगुज़ार हैं कि उन्होंने इस ज़िले में हुटिश इनसाफ़ की आबरू रख ली और बेशक मजिस्ट्रेट ज़िला को ऐसाही करना चाहिये ताकि गरीब और बेकस लोग भी अपने को कैसरेहिन्द की रियाया समझें और दिल से उसके खैरख्वाह रहें। हम किसी तरह इस मौके पर अपने नौजवान दोस्त सैयद दियानतहुसैन को मुबारकबाद दिये बगैर नहीं रह सकते, वह हरतरह से इस इनायत के मुस्तहक थे जो उनके साथ की गई और हमको कामिल यकीन है कि वह अपनी मशहूर दियानत दारी का अभी बहुत ज्यादा समरा पायेंगे। हम मि: पिटर्सन की इस कद्रदानी का भी शुक्रिया अदा करते हैं।

—***—

अठारहवां बाब।

मि: पिटर्सन् की तब्दीली।

थोड़े अर्से के बाद बहुत से हुक्काम ने दफ़तन् फर्लौं लेनी चाही, उसमें मि: यङ्ग जुडिशियल सेक्रटरी गवर्मेंण्ट ने उनको सेक्रटरीयट में बुलाना तजवीज़ किया और अचानचक उनकी तबदीली का हुक्म बज़रिये तार भेजा, बजाये उनके मि: ह्यारिसन् असिष्टण्ट कमिश्नर सितमगरपूर कायममुकाम डिप्टी कमिश्नर फीरोजनगर हुये।

यह तार मि: पिटर्सन को ऐसा दफ़तन् मिला कि गालिबन् उन्हें खुद भी अचम्भा हो गया। गवर्मेंण्ट ने यह भी हुक्म दिया था कि मि: पिटर्सन फ़ौरन् रवाना हों इसलिये वह बेचारे अपने असबाब तक का भी इन्तज़ाम न कर सके और फ़ौरन् तामीले हुक्म की वजह से सदहा रुपये का असबाब बहुतही सस्ता नीलाम कर डाला।

मि: पिटर्सन के जाने का आम तौर

पर सिवाय चन्द अमलों के सबको अफ़सोस था; आम लोग दिलसे उनकी इज़्ज़त करते थे और दिलोजान से उनके ख़ैरतलब थे। गो उनका कयाम फ़ीरोज़-नगर में सिर्फ़ चार पांच महीने रहा लेकिन उनके ग़ैर मअमूली और खुलकी अख़लाक़ ने सब को बन्दे बेदिर्म बना रक्खा था। उन्होंने शहर में बहुत तरक्कियां की थीं; सदहा पुल और नहरें बनवाना तजवीज़ किया, बहुत सी नई नई सड़कें निकालने का बन्दोबस्त किया, एक मोहताजख़ाना चन्दे से कायम किया, शुर्फ़ा और गुर्बा का यहां तक लिहाज़ किया कि शायद फ़ीरोज़-नगर के ज़िले में किसी हाकिम ने कभी नहीं किया था।

उनके जाने की ख़बर जिस जिसने जहां जहां सुनी भक्ते में हो गया जहां चार आदमी होते यही तज़किरा होता।

एक—बड़ेसाहब की तब्दीली हो गई।

दूसरा—भई ऐसा हाकिम तो अब इस ज़िले में न आवेगा।

तीसरा—अजी इस ज़िले की किस्मत ही ऐसी है।

चौथा—यहां लायक आदमी रहने नहीं पाते।

एक—मगर किसीकद्र बद ज़रूर थे।

दूसरा—उन गरीब ने बदी कौन की?

तीसरा—बदी क्यों नहीं की? देखो तहसीलदार साहब को बर्ख़ास्त कर दिया, पुलिस में तहलका डाल दिया फ़तहबेग ग़रीब को तबाह कर डाला और मियां सच तो यह है कि जो सामने आया वह बचही कौन गया?

दूसरा—भई खुदा के लिये ईमान हाथ से न दो, सैय्यदानी पर ज़ुल्म नहीं हुआ था? एक ग़रीब के लिये इस कद्र पैरवी करना कितनी तारीफ़ की बात है।

चौथा—और एहसानात भी मि: पिटर्सन ने ऐसे किये हैं कि कभी फ़रामोश नहीं होंगे। राजा दियानतहुसैन खां को एक दम से तहसीलदार कर दिया, बिचारे मीर महम्मदहुसैन साहब के बेटे की पर्वरिश फ़र्माई। राजा साहब मअरूज़नगर को ढाई लाख रुपया सरकार से दिला कर उनका तमाम कर्ज़ा अदा करा दिया और राज कोरट करा दिया। मियां सच तो यह है कि पिटर्सन साहब की ज़ात से किसी को कुछ नुक़्सान नहीं हुआ।

दूसरा—और मुन्सिफ़मिज़ाज बड़े थे, अमीर गरीब सब को एक आंख से देखते थे, भई यह सब बातें तो हैं जो एक अच्छे कलेक्टर मे होनी चाहिये, खुदा उनको खुश रक्खे और फिर हमारे ज़िले मे वापस लावै।

अल्‌गर्ज़ तमाम ज़िले को मिः पिटर्सन के जाने का अफ़सोस था और खासकर सैयद दियानतहुसैनखाँ को। यह गरीब तो बिलकुल बेबाल व पर हो गये। मीर दियानतहुसैनखां ने यह चाहा था कि एक रुखसती जल्सा मिः पिटर्सन् का किया जावे लेकिन उन्होंने खुद उसको मंज़ूर न किया और जवाब मे रऊसाय ज़िला का शुक्रिया अदा करके यह तहरीर किया कि मुझ को अभी सिर्फ़ चन्द रोज़ा तौर पर जाने का हुक्म हुआ है और उम्मेद है कि बाद वापसी मिः यङ्ग, मैं फिर इस ज़िले में आऊंगा लिहाज़ा इस मर्तबः मै आम रुखसती से माफ़ किया जाऊं।

तार आनेके दूसरे तीसरे रोज़ मिः पिटर्सन ११ बजे शब की रेल में मुस्कीन नगर रवाना हुये, बावजूदः कि एक आम रुखसती से उन्होंने इन्कार किया था लेकिन तब भी रिआया ने यह न माना और अपना दिली अफ़सोस ज़ाहिर करने को बहुत सा रुपया चन्दा जमा किया। मिः पिटर्सन् की कोठी से रेलवे ष्टेशन तक दोतर्फ़ा रोशनी की गई थी और जाबजा सुनहरे हर्फ़ों में ये तख़्तियां लगाई गई थीं "शरीफ़ दोस्त की जुदाई शाक् है"। "ऐसा लायक कभी नहीं आया था" "चपरासी खानसामा को कुछ अख़्तियार नहीं"। "सैयदानी की खूब फर्याद सुनी"। "पिटर्सन साहब पर खुदा की मेहर्बानी रहै"। "राजा दियानतहुसैन की तकर्रुरी"। "अहर की दुरुस्ती" "जेलवाले वाकई हैरान करते थे"। "मीर मुहम्मदहुसैन की बेवा दुआयें देती है" "खुदा पिटर्सन को लाठ करे"। "पिटर्सन् का खानदान खुश व खुर्रम रहै" "खुदा पिटर्सन को फेर लाये" "हमको और कोई नहीं चाहिये"। इस तरह से हज़ारों फ़िकरे जाबजा लगाये गये जो रोशनी में निहायतही भले मालूम देते थे। यह सब इन्तिज़ाम सिर्फ़ दो रोज़ मे हुआ और वाकई जिस खुशी के साथ खुद रिआया ने बिला सर्कारी दबाव के किया वह बहुत कुछ काबिल तारीफ़ था और इस में ज़रा शक नहीं साबित करता था कि हिन्दोस्तानी

रिआया से अगर उम्मदा बर्ताव किया जावे तो वह अपने हाकिमों की पूरी कद्र करने को आमादा है।

मि: पिटर्सन जब ष्टेशन जाने लगे तो सड़कों पर रोशनी देखकर मुतअज्जिब हुए कि यह क्या सामान है। जब थोड़ी दूर चल कर उनको सबसे पहिले एक महाजन के मकान पर यह दिखलाई दिया कि "गुड बाइ मि: पिटर्सन" उसवक्त समझे कि यह उन्हीं की रुखसत में सब इन्तिज़ाम किया गया है।

जब वह ष्टेशन पर पहुंचे तो हज़ारों आदमी मौजूद थे अमीर ग़रीब औरतें बच्चे सभी उनको रुखसत करने आये थे और बुड्ढी मैयदानी भी आई थी। हर शख्स चुपचाप खड़ा था और ऐसे मुन्सिफमिजाज़ हाकिमे-ज़िले की जुदाई पर गमगीन था। लेकिन मैयदानी चुपचाप न थी वह बैन कर कर के रोती थी और बार बार यही कहती कि "साहब तुम्हारे जातेही भूये अहले मुझे पीस डालेंगे"। मि: पिटर्सन गो बहुत जल्दी में थे लेकिन सबकी तरफ़ मुखातिब हुए और यों तक़रीर की —

"मैं अपने गिर्द इतने रजसाय उमरा महाजन हुक्काम अफसरान् और अम्माल को देखकर इस कद्र कभी खुश न होता जितना अपने गिर्द गरीब, मोहताज मासूम और आम रिआया को देखकर खुश हुआ। मुझको कभी यह तवक्कह न थी कि आम खिलकत मुझे ऐसा पसंद करेगी। लेकिन आज मैंने अपने तमाम खिदमात का इनाम पा लिया"—

"जेण्टिलमेन! यकीन कीजिये कि मैं इससे ज्यादा और कोई इज्जत अपनी कभी नहीं चाहता, मैं गवर्मेण्ट का नौकर जरूर हूं लेकिन आप लोगों की खिदमत को, जब आप सब लोग मेरी खिदमत से रज़ामन्द रहें तो बेशक मैंने अपना फ़र्ज़ अदा किया। मैं एक मर्तबः और आप लोगों से सच्ची मुहब्बत का शुक्रिया अदा करता हूं और रुखसत होता हूं।"

सब से हाथ मिलाया और रेल पर सवार हुये। रेल के रवाना होतेही एक मर्तबा बड़े ज़ोर से सब ने मिलकर यह कहा कि—"खुदा पिटर्सन को फ़ेर लाये"। जब रेल दूर निकल गई उस वक्त एक सख्त उदासी छाई हुई थी। कोई ऐसा न था जिसके आंखों में आंसू न हो। मैयदानी का रोना तो दिल हिलाये देता था उस वक्त का समाँ भी यादगार था बकौल शख्से कि—

"अभी गुल हँस रहे थे और गुंचे मुस्कराते थे। यकायक छा गई कैसी उदासी इस गुलिस्तां पर।

—***—

उनीस्सवां बाब

मीर दियानतहुसैन की तहसीलदारी।

मिर दियानतहुसैन के तहसीलदार होतेही तमाम अमलों में एक हलचल मच गई और हर शख़्स अपनी २ जगह खायफ़ था कि देखिये क्या बला नाज़िल होती है, दियानतहुसैन ने जिस दिन चार्ज लिया उसी रोज़ तहसील का बाबा आदमही निराला पाया। हर अमला बजाय खुद फ़रऊन बेसामान था कोई अहलकार खुद काम करना चाहताही न था। खुद गोया जमादार थे और दो चार मोहरिरान खानगी बैठे काम करते थे। तहसील में लूट मार की वह कसरत थी कि बिचारे ज़िमीदार उनसे डरते थे। कोई दर्खास्त तहसीलदार के साम्हने गुज़रना मुम्किन न थी जब तक एक रुपया भेंट मुहरिर जुडिशियल और आठ आना इनाम चपरासी और आठ आना हक मोहरिरान् खानगी मुहरिर जुडिशियल अदा न किया जावे। दो रुपया मालगुज़ारी भी तहसील में दाखिल होना दुश्वार था जब तक दो रुपया भेंट वासिलबाकीनवीस, एक रुपया भेंट स्याहानवीस, एक रुपया भेंट तहसीलदार और चार आना तहरीर मोहरिर स्याहानवीस और चार आना तहरीर मोहरिर खज़ानची और आठ आना तहरिर मुहर्रिरान् वासिलबाकी नवीस वह बिचारा न दाखिल करे। ज़िमीदार रुपया दाखिल करने तहसील में क्या आया कि गोया उस पर टिड्डियां टूट पड़ीं। दफ़्री अपनी तरफ़ खींचता है कि मैंने दाखिले पर मोहर कर दी है अभी हमारा हक नहीं मिला दूसरा अपनी तरफ़ पकड़े लिये जाता है कि "अजी हमसे अर्ज़ इर्साल लिया हमको कीमत नहीं दी" मज़कूरी जुदा नोचते हैं कि "अजी हम चार रोज दस्तक रहे हमारा तलबाना दे दो तब दूसरा काम करो"। मुहर्रिर मुत्तफर्कात जुदा मुह फुलाये हैं कि "हमारा हक नहीं दिया देखो इस बदमाश पर दोहरी दस्तक कर दूंगा" मोहरिर जुडिशियल आप जानिये तहसीलदार के रिश्तेदार भी थे, इनका पैर ज़मीन पर नहीं ठहरता था, घड़े

लिखे तो वह जैसे थे वह ज़ाहिर है मगर ज़बानी जमाखर्च बहुत था, अपना हक़ तो लेते ही थे उस्पर तुर्रा यह था कि जिस अमले की मद् का मिल सकता फ़ौरन् ऐंठ लेते थे। तहसीलदार कुदरत हुसैन उन्हीं की मार्फ़त रिश्वत भी लेते थे इसी वजह से और भी तमाम तह-सील के ज़िमीदार इस्से वाकिफ़ थे और जो मज़ा मोहर्रिर जुडिशियल को इस तहसील मे था शायद और तहसील में पेशकार को भी न होगा। टमटम सवारी मे था दो दो खिदमतगार हमराह आते थे, पानों की डिब्बियां हर वक्त जेब मे रहती थी कचहरी क्या आये हैं गोया सैर करने आये हैं—स्याहानवीस लाला प्रभूदयाल थे यह अजीब ज़ात-शरीफ़ थे। इनका काटा लहर नहीं लेता था। चाहे और किसी को तहसील में कुछ न मिले लेकिन यह जिस्तरह मु-म्किन होता बगैर जेब खनखनाये घर नहीं आते थे उनसे और लाला पर्व-नलाल से दोस्ती भी थी और जब से लाला पर्वनलाल शिरिस्तेदार हुये थे तबसे उनको ज़ोम भी बहुत हो गया था। नायब तहसीलदार पंडित काशी-नाथ थे ये, पुरानी किता के कश्मीरी पंडित थे, ज़्यादा शर फ़साद उनकी मिज़ाज में न था लेकिन बेवक़ूफ़ आली दर्जे के थे और लालची भी बहुत थे, तमाम अमले उनको बनाये हुये थे और जो जिस्के जी में आता था करता था इन्हें कुछ भी ख़बर न होती थी; मोहर्रिर जुडिशियल से उनसे बहुत दोस्ती थी। यह सबको यकीन था कि अबकी जो तहसीलदारी खाली होगी तो वह पण्डित जी को मिलैगी और इसमे भी शक नहीं कि दियानतहुसैन की तहसीलदारी इ-नको नागवार भी बहुत हुई थी।

वासिलबाकीनवीस शेख इकरामहुसैन अवध के रहनेवाले थे। वह भी बारह ब-रस से इस तहसील में थे और अच्छी त-रह हावी थे। वह भी नायबतहसीलदारी के उम्मेदवार थे और अपने को मोअज्ज़िज़ जानते थे, बन्दोबस्त मे सदर मुन्सरिम तक रह चुके थे और अपने सब साथियों को मुअज्ज़िज़ ओहदों पर देख कर हमेशा ख़ार खाया करते थे। मीर दियानतहुसैन का तकर्रुर, चपरासी से लेकर नायब तह-सीलदार तक सबको नागवार हुआ, इसके दो तीन सबब थे। अव्वल तो यह कि कुदरतहुसैन बहुत दिनों तक

उस तहसील में रहे थे और छोटे से लेकर बड़े तक सब आपस में शीर व शक्कर थे, इसलिये उनकी जुदाई दफ़तन् क्योंकर गवारा हो सकती थी। दूसरे मीर दियानतहुसैन की दियानत आम तौर पर मशहूर थी और इस तहसील में जो हुल्लड़ और अंधाधुंध था यह भी सब जानते थे, पस यह पहिले ही सबको यकीन था कि दियानतहुसैन का आना खाली अज़-फ़साद न होगा; तीसरे दियानतहुसैन उस तहसील के ज़िमीदार थे और तमाम हालात से कामिल वाकफ़ीयत रखते थे और मसल मशहूर है कि घर के भेदी थे। न उनको किसी से पूछने जाना था न दर्याफ़ की ज़रूरत थी लिहाज़ा ऐसे हाकिम को अमले क्योंकर पसंद कर सकते हैं? । दियानतहुसैन ने जैसेही चारज लिया तहसील में खड़मण्डल मच गया और हर शख्स अपनी अपनी आबरू और नौकरी से मायूस हो गया, दो तीन दिन मीर दियानतहुसैन बिल्कुल चुपचाप रहे सब रंगढंग देखा किये, उनका यह पूरा क़स्द था कि अगर अमले सीधे सीधे अपना काम किये जावें तो पिछली हालत पर कुछ तवज्जह न की जावे और इसमें ज़रा शक नहीं कि मीर दियानतहुसैन बवजह अपनी नेकी व शराफ़त के किसी के बदख्वाह न थे मगर उसके साथही यह भी था कि जान बूझकर अपनी तहसील को लुटवाना नहीं चाहते थे और न कोई तकसीर देखकर माफ़ करना चाहते थे। पांच छः रोज़ तक मीर दियानतहुसैन अमलों के रंगढंग बखूबी देखा किये। गो सब लोग उनसे खायफ़ थे लेकिन "खूये बद दर तबीयते कि नशस्त, न रवद् जुज़ बवक़्ते मर्ग अज़ दस्त" का मज़मून था, कोई अपने हथखण्डों से बाज़ न आये। हर अमले के पास घोड़े और पालकी सवारी में, तनख्वाह १५) लेकिन शान व शौकत में किसी तरह तहसीलदार से ये लोग खुद को कम न समझते थे।

उनके पहुंचतेही मुसलमान अमलों ने दावत के पैग़ामात दिये मगर उन्होंने कतई इनकार किया और किसी अमले की दावत क़ुबूल न की। हर रोज़ सुबह तमाम अम्माल ने उनके मकान पर आमदरफ़ का ढचर बांधा। उन्होंने साफ़ मुमानियत करदी कि बग़ैर ज़रूरत और बग़ैर तलबी हमारे घर कोई अमला न आये।

बाज़ अमलों ने तोहफ़े भी भेजे मसलन् किसी ने बैसवें का तम्बाकू किसी ने मछलीशहर के पेड़े भेजे मगर यहां फ़ौरन् वापस। अल्गर्ज़, हर तौर पर सब अमलों को इससे इतमीनान् हो होगया कि दियानतहुसैन इस किस्म के आदमी नहीं कि जुल में आ जांय। मीर दियानतहुसैन अब इस फ़िक्र में हुये कि किसी तरह अमलों की रिश्वत बन्द कर दें। गो यह एक ख़याल ख़ाम था, रिश्वत का बिलकुल बन्द हो जाना एक गैरमुम्किन् अम्र है और इस सबबसे हमारी राय में उनकी कोशिश भी फ़जूल थी लेकिन मीर दियानतहुसैन चूंकि पल्ले सिरे के मुत्तदैयन् थे और मि: बेल्ज़ईष्ट साहब बहादुर के ख्यालात उन्होंने कहीं सुन पाये थे उनको यह धुन बँधी कि अगर पूरी कोशिस की जाय तो ज़रूर रिश्वत बन्द हो सकती है और इसका इम्तिहान उन्होंने अपनी तहसीलही से शुरू किया।

रजिष्ट्रार कानूनगो और उनकी आमदनी का इन्सदाद।

नाज़रीन् को जानना चाहिये कि रजिष्ट्रार कानूनगो की, तहसील में आमदनी के सिर्फ मस्दूद ज़रिये हैं। अौव्वल तकसीम तनख़्वाह पटवारियान में रजिष्ट्रार लोग अपना हक पाते हैं—दियानतहुसैन ने बमंज़ूरी हाकिमे-ज़िला पटवारियों की तनख़्वाह बज़रिये मनीआर्डर भेजने का इन्तिज़ाम किया और जो मजबूरी पटवारियों को थी वह जाती रही। दूसरी रकम उनके मुकद्दमात् दाखिल ख़ारिज में तहरीर कैफ़ीयत-हकीयत थी। अब तक उस तहसील में दस्तूर था कि जबतक सायल आकर भेंट न दे जाये उस वक्त तक मुकद्दमात दाखिलख़ारिज सिरिश्ते रजिष्ट्रार कानूनगो में पड़े रहते थे। मीर दियानतहुसैन ने यह हुक्म दिया कि तारीख़ हुक्म से तीसरे दिन रजिष्ट्रार कैफ़ीयत लिखकर मोहरिर जुडिशियल को दे दिया करे, कोई ज़रूरत इन्तज़ार हाज़िरी ज़िमीदारान् की नहीं है, इससे बिला दिक्कत यह रकम बन्द होगई। तीसरी रकम तसदीक जमानतनामों की थी, इसमें भी असालतन् हाज़िरी ज़िमीदारान् बिलकुल मस्दूद कर दी गई और बतलब कैफ़ियत जो ज़मानतनामे या अहकाम आते वह फ़ौरन् चपरासी के हाथ दफ़्र रजिष्ट्रार कानूनगो में मीर दियानतहुसैन भेज देते और उसी रोज़